शुरुआती

घर की सजावट और इंटीरियर डिजाइन की किताब

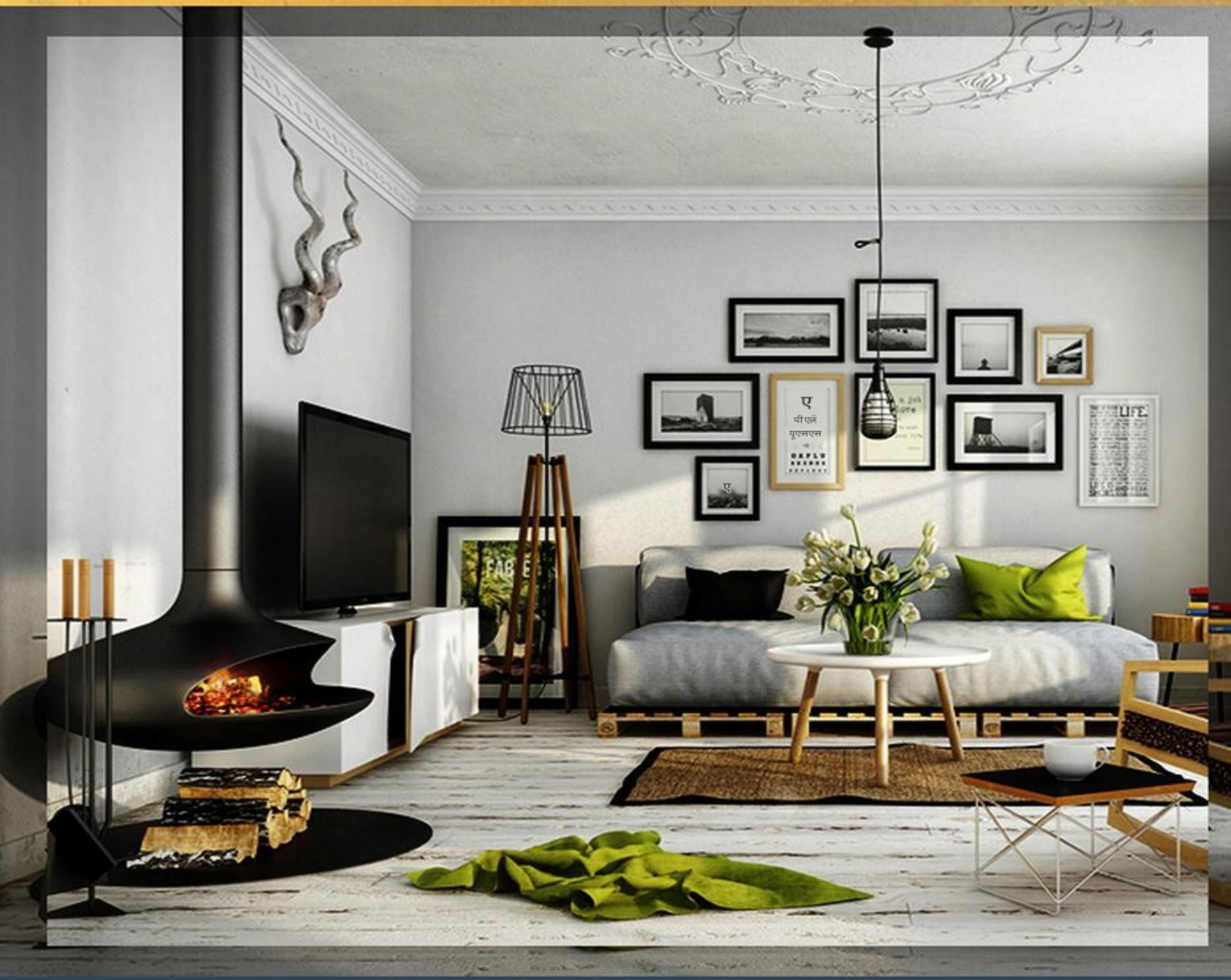

अपने घर को साफ और

व्यवस्थित करने की कला सीखें

Table of Contents

शीर्षक पेज

कॉपीराइट पृष्ठ

भाग ---- पहला

आंतरिक सज्जा की शब्दावली

इंटीरियर डिजाइन पेशे का परिचय

इंटीरियर डिजाइन पेशे का इतिहास

इंटीरियर डिजाइन शिक्षा तैयारी योजना

इंटीरियर डिजाइन प्रैक्टिस की स्थापना

व्यापार योजना

व्यापार योजना के लिए अनुसंधान

व्यवसाय योजना को लिखित रूप में तैयार करना

भाग 02

डिजाइन अवधारणाएं और नियम

शुरुआत कैसे करें

सजावट की कला अब हुई आसान

सजावट योजनाओं की उपयोगिता

कमरे की सजावट योजना की बुनियादी जाँच सूची

नमूना लेकर देखना

फर्नीचर की व्यवस्था कैसे करें
किसी विषय के आधार पर अपनी योजना बनाना
फ्लोर प्लान बनाना
संतुलन का आधुनिक तरीके से उपयोग करना
लाइन का उपयोग कैसे करें
रेखाओं के प्रकार
फर्नीचर समूह की व्यवस्था और स्थान निर्धारण
कमरे के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ना
दीवारों को कैसे सजाएं
कठिन दीवारों और खिड़कियों के समाधान
खिड़की के पर्दे के प्रकार
रंगों का प्रभावी उपयोग
रंगों के प्रकार
कमरों को उनका उपयोग करने वाले लोगों से जोड़ना
रंग योजना के लिए प्रेरणा कैसे प्राप्त करें
अपने इंटीरियर को अंतिम रूप देना
भाग 03
उपयोगी सुझाव
आंतरिक सज्जा की योजना बनाने के लिए सुझाव
फर्नीचर संबंधी सुझाव
अपनी आंतरिक शैली को खोजना और अपनी अभिव्यक्ति को परिभाषित करना

कमरे का उद्देश्य

स्थानिक जागरूकता

आकृतियों का उपयोग

साज-सज्जा और कपड़ा

सारांश

गृह सज्जा और आंतरिक सज्जा के लिए शुरुआती लोगों की पुस्तक

आदिल मसूद काज़ी

आदिल मसूद काजी द्वारा प्रकाशित, 2018।

इस पुस्तक को तैयार करने में हर संभव सावधानी बरती गई है, फिर भी प्रकाशक इसमें निहित त्रुटियों या कमियों, या इसमें दी गई जानकारी के उपयोग से होने वाली किसी भी क्षति के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है।

गृह सज्जा और आंतरिक सज्जा के लिए शुरुआती लोगों की किताब

पहला संस्करण। 7 जून, 2018।

कॉपीराइट © 2018 आदिल मसूद काज़ी।

आदिल मसूद काज़ी द्वारा लिखित।

गृह सज्जा और आंतरिक सज्जा के लिए शुरुआती लोगों की किताब

आदिल मसूद काज़ी

कॉफी कप रीडिंग

Copyright © 2016 Adil Masood Qazi (Author)

All rights reserved

प्रस्तावना

इस पुस्तक को तीन भागों में विभाजित किया गया है ताकि आप इसका अधिकतम लाभ उठा सकें; पहला भाग है "इंटीरियर डिज़ाइन को जानना", जिसमें इंटीरियर डिज़ाइनरों द्वारा उपयोग की जाने वाली बुनियादी शब्दावली, इंटीरियर डिज़ाइन पेशे का परिचय, इंटीरियर डिज़ाइन पेशे का इतिहास और अंत में इंटीरियर डिज़ाइन के लिए शिक्षा योजना शामिल है। दूसरा भाग है "इंटीरियर डिज़ाइन सीखना", जिसमें इंटीरियर डिज़ाइन की अवधारणा बनाने से लेकर योजना तैयार करने और संपूर्ण परियोजना को पूरा करने तक के सभी चरण शामिल हैं। अंत में, तीसरा भाग है "उपयोगी सुझाव", जिसमें इंटीरियर डिज़ाइनरों के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण सुझावों पर विचार करने में आपकी सहायता करने वाले उपयोगी सुझाव दिए गए हैं।

प्रागैतिहासिक काल से ही आरामदायक आश्रय और वातावरण की खोज ने मनुष्यों को रचनात्मक रूप से स्मार्ट और टिकाऊ तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

ऐतिहासिक कालखंड में, जीवित रहने की आवश्यकता ने मानव मन को चुनौती दी, जिसके परिणामस्वरूप अनेक पेशे उभरे। अन्य पेशों की तरह ही, आश्रय सजावट की कला और विज्ञान भी एक लोकप्रिय पेशा बन गया और अकादमिक विषयों में रुचि का विषय बन गया।

इंटीरियर डिज़ाइनर रहने के वातावरण को सौंदर्यपूर्ण और कार्यात्मक रूप से व्यावहारिक बनाने के कौशल और तकनीक सीखते हैं। वे रंग और डिज़ाइन के सभी सहायक तत्वों के उपयोग से माहौल बनाना सीखते हैं।

इंटीरियर डिजाइन की शुरुआती जानकारी देने वाली यह पुस्तक इंटीरियर डिजाइन की शब्दावली से लेकर डिजाइन के तत्वों और सिद्धांतों की समझ तक, सभी बुनियादी बातों को शामिल करती है। यह पुस्तक एक मार्गदर्शक के रूप में काम करती है, जो इंटीरियर डिजाइनरों को अपने पेशेवर करियर की शुरुआत करने या घर की सजावट से संबंधित DIY प्रोजेक्ट्स को पूरा करने के लिए बुनियादी बातें सीखने में मदद करेगी।

विषयसूची

भाग ---- पहला

आंतरिक सज्जा की शब्दावली

इंटीरियर डिजाइन पेशे का परिचय

इंटीरियर डिजाइन पेशे का इतिहास

इंटीरियर डिजाइन शिक्षा तैयारी योजना

इंटीरियर डिजाइन प्रैक्टिस की स्थापना

व्यापार योजना

व्यापार योजना के लिए अनुसंधान

व्यवसाय योजना को लिखित रूप में तैयार करना

भाग 02

डिजाइन अवधारणाएं और नियम

शुरुआत कैसे करें

सजावट की कला अब हुई आसान

सजावट योजनाओं की उपयोगिता

कमरे की सजावट योजना की बुनियादी जाँच सूची

नमूना लेकर देखना

फर्नीचर की व्यवस्था कैसे करें

किसी विषय के आधार पर अपनी योजना बनाना

फ्लोर प्लान बनाना

संतुलन का आधुनिक तरीके से उपयोग करना

लाइन का उपयोग कैसे करें

रेखाओं के प्रकार

फर्नीचर समूह की व्यवस्था और स्थान निर्धारण

कमरे के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ना

दीवारों को कैसे सजाएं

कठिन दीवारों और खिड़कियों के समाधान

खिड़की के पर्दे के प्रकार

रंगों का प्रभावी उपयोग

रंगों के प्रकार

कमरों को उनका उपयोग करने वाले लोगों से जोड़ना

रंग योजना के लिए प्रेरणा कैसे प्राप्त करें

अपने इंटीरियर को अंतिम रूप देना

भाग 03

उपयोगी सुझाव

आंतरिक सज्जा की योजना बनाने के लिए सुझाव

फर्नीचर संबंधी सुझाव

अपनी आंतरिक शैली को खोजना और अपनी अभिव्यक्ति को परिभाषित करना

कमरे का उद्देश्य

स्थानिक जागरूकता

आकृतियों का उपयोग

साज-सज्जा और कपड़ा

सारांश

भाग ---- पहला

आंतरिक सज्जा की शब्दावली

शब्दकोश किसी विशेष ज्ञान और समझ के क्षेत्र से संबंधित शब्दों या पदों की वर्णानुक्रमिक सूची है, जिसमें उन शब्दों की परिभाषाएँ भी शामिल होती हैं।

आंतरिक सज्जा: यह किसी कमरे या इमारत की आंतरिक सजावट को डिजाइन करने की प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य उसकी सुंदरता को बढ़ाना या उसे लोगों के लिए आकर्षक बनाना है।

ए

एबेकस: स्तंभ के शीर्ष का एक सपाट भाग, यह आर्किट्रेव को सहारा देता है।

आर्किट्रेव: स्तंभों के शीर्षों पर टिकी हुई चौखट या बीम। यह शास्त्रीय वास्तुकला का एक तत्व है।

सारांश: डिजाइन की वह शैली जो विस्तृत यथार्थवादी प्रस्तुतियों के विपरीत सामान्य रूपों का उपयोग करती है।

एकैंथस पत्ती: एक प्रकार की पत्तीनुमा सजावट जिसका उपयोग मुख्य रूप से फर्नीचर पर, विशेष रूप से ब्रैकेट और पैरों पर किया जाता है।

एक्सेंट रंग: कमरे की रंग योजनाओं को निखारने के लिए उपयोग किए जाने वाले विपरीत रंग। इंटीरियर डिजाइन में एक्सेंट शब्द का प्रयोग आमतौर पर मुख्य थीम के सहायक या गौण रंगों के लिए किया जाता है।

एक्सेंट लाइटिंग: किसी स्थान के आंतरिक सजावट तत्वों या वास्तुशिल्पीय विवरणों को उजागर करने के लिए नियंत्रित और केंद्रित प्रकाश व्यवस्था।

सहायक सामग्रियां: किताबें, पौधे, फूलदान, लैंप और सजावटी सामान जैसी वस्तुएं जो आंतरिक स्थान को सजाती हैं, उन्हें सहायक सामग्रियां माना जाता है।

एसीटेट: सेल्यूलोज से बना एक कृत्रिम फाइबर, इसे आमतौर पर अन्य फाइबर के साथ मिलाकर एक शानदार एहसास और दिखावट प्रदान की जाती है। एसीटेट का उपयोग

कई ऐसे कपड़ों में किया जाता है जिनका उपयोग आंतरिक सज्जा के लिए किया जाता है।

एक्रोटीरियम: मूल रूप से यह ग्रीक मंदिरों की छतों के कोनों पर लगा एक आभूषण था।

एडम शैली: ब्रिटिश नवशास्त्रीय शैली जो 1700 के दशक के उत्तरार्ध में प्रचलित थी। इसकी विशेषता पतली, सुंदर रेखाएं, परिष्कृत आकार और संयमित अलंकरण हैं।

एजिंग: लकड़ी, पेंट, प्लास्टिक या अन्य सतहों पर घिसावट और टूट-फूट का प्रभाव पैदा करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक सजावटी तकनीक। इसका उपयोग फर्नीचर और लकड़ी पर किया जाता है ताकि आंतरिक वातावरण को बेहतर बनाने वाले प्रभाव उत्पन्न किए जा सकें।

एम्ब्री: मध्ययुगीन गिरजाघरों में सामान रखने के लिए एक कक्ष। दरवाजे लगाने से इसे अलमारी का रूप मिल गया।

एम्बुलेंटेस: एक छोटी पोर्टेबल टेबल जिसका उपयोग सजावटी फर्नीचर के रूप में किया जाता है।

अमेरिकी औपनिवेशिक: यह शब्द अमेरिकी क्रांति से पहले उपनिवेशों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सभी अमेरिकी फर्नीचर पर लागू होता है। इस शैली में प्रारंभिक अमेरिकी सीमांत के खुरदुरे हस्तनिर्मित टुकड़े भी शामिल हैं।

अमेरिकन ओरिएंटल: एक मशीन से निर्मित स्थानीय कालीन जिसमें ओरिएंटल डिजाइन या पैटर्न होते हैं, और रंगों का उपयोग हाथ से बुने हुए ओरिएंटल कालीन के समान किया जाता है।

अमोरिनी: इतालवी पुनर्जागरण काल के फर्नीचर पर पाए जाने वाले कामदेव के आभूषण (सजावटी तत्व)।

एंजल बेड: एक ऐसा बिस्तर जिसमें चंदवा होता है और हेडबोर्ड जैसा कोई सामने का सहारा नहीं होता।

पुरातन: फर्नीचर से लेकर कलाकृति तक कुछ भी। आमतौर पर 100 साल पुरानी वस्तुओं को पुरातन माना जाता है।

एंटीक फिनिश (या एंटीकिंग): एक प्रकार का पेंट या फिनिश जो किसी वस्तु (मुख्यतः फर्नीचर) पर लगाया जाता है ताकि उसे किसी विशेष आंतरिक परिवेश के अनुरूप पुराना या प्राचीन रूप दिया जा सके।

एंटीक सैटिन: एक प्रकार का ड्रेपरी (मुख्यतः पर्दे) कपड़ा जिसमें चमकदार प्रभाव होता है, जो आमतौर पर रेयॉन/एसीटेट के मिश्रण से बना होता है।

औषधालय संदूक: एक नीचा संदूक जिसमें छोटे दराज होते हैं, जिसका मूल रूप से उपयोग खाना पकाने के लिए जड़ी-बूटियों को रखने के लिए किया जाता था, अब कई इंटीरियर डिजाइनर इसे आंतरिक स्थानों में सजावटी मेज के रूप में उपयोग करते हैं।

अरेबेस्क: सजावटी स्क्रॉल वर्क और अन्य जटिल अलंकरण जिसमें पत्ते, फूलदान, पत्तियां और फल, या काल्पनिक मानव और पशु आकृतियाँ शामिल होती हैं।

आर्केड: स्तंभों या खंभों के सहारे बनी मेहराबों (गोल और नुकीली) की एक श्रृंखला।

एरिया रग: एक छोटा गलीचा या कालीन जो फर्श के केवल एक हिस्से को ढकता है। इंटीरियर डिजाइनर कई जगहों पर एरिया रग का उपयोग करते हैं ताकि गर्माहट और भव्यता का एहसास दिलाया जा सके।

आर्म चेयर: बैठने की ऐसी कुर्सी जिसमें सहारा देने के लिए बैकरेस्ट और आर्मरिस्ट दोनों होते हैं।

अलमारी: दरवाजों और अलमारियों वाली एक अलमारी, जिसमें सामान रखने की जगह होती है, साथ ही यह घर के अंदरूनी हिस्से में सजावट का काम भी करती है।

आर्ट डेको: 1920 और 1930 के दशक में लोकप्रिय घरेलू साज-सज्जा और वास्तुकला की एक सजावटी ज्यामितीय शैली। इसकी प्रमुख विशेषताओं में गोल अग्रभाग, क्रोम हार्डवेयर और/या कांच के शीर्ष वाले लकड़ी के फर्नीचर शामिल हैं।

कलात्मक कांच: इसमें रंगीन, बेवेल्ड, फ्यूज्ड, ब्लोन, एचड, लेडेड और कट स्टाइल के सजावटी कांच शामिल हैं। इसे बाहरी खिड़कियों में सजावटी तत्व के रूप में लगाया जाता है।

आर्ट नोव्यू: यह एक सजावटी शैली है जो 1890 और 1910 के बीच फ्रांस में विकसित हुई। टिफ़नी लैंप इस शैली का एक अच्छा उदाहरण हैं; इसमें अलंकृत और प्रवाहमय रेखाएं हैं।

आर्ट प्रिंट: किसी मूल कलाकृति (आमतौर पर पेंटिंग) की प्रतिकृति।

आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स: इसे आमतौर पर मिशन शैली के नाम से जाना जाता है। आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स शैली 1800 के दशक के उत्तरार्ध से लेकर 1920 के दशक तक लोकप्रिय रही। आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स उस समय के व्यापक रूप से उत्पादित और अलंकृत विक्टोरियन फर्नीचर के विरुद्ध शुरू किया गया एक प्रतिक्रियावादी आंदोलन था।

एशियाई शैली: यह शब्द सुदूर पूर्व की शैलियों को संदर्भित करता है। जैसे कि चीनी, जापानी या कोरियाई डिज़ाइन।

ऑबुसन: एक टेपेस्ट्री जिसमें दृश्यों को दर्शाया गया है और जिसका उपयोग दीवार पर टांगने और असबाब (फर्नीचर को ढकने वाले कपड़े) के लिए किया जाता है।

ऑस्ट्रियन ब्लाइंड: एक सजावटी खिड़की का पर्दा जिसकी निचली किनारी लहरदार होती है। ब्लाइंड को ऊपर खींचने पर भी लहरदार किनारी बनी रहती है।

परिवेश: किसी स्थान का वातावरण और विशेषता।

सौंदर्यशास्त्र: कला में सौंदर्य की प्रकृति और उसकी सराहना से संबंधित सिद्धांतों का समूह।

सहायक साज-सामान: आंतरिक सज्जा के लिए सजावटी कला वस्तुएं

एप्लिक वर्क: सजावटी कपड़ों को एक साथ सिलकर एक ही कपड़ा बनाना जिसका उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाता है।

मानवमिति: मानव माप का अध्ययन, जो मानव शरीर के आकार के अनुसार फर्नीचर और स्थान को समायोजित करने में मदद करता है।

चिपकने वाला पदार्थ: दो सामग्रियों को आपस में जोड़ने वाला एक चिपचिपा पदार्थ

एशलर: दीवार में इस्तेमाल होने वाले पत्थरों की एक आयताकार संरचना।

बी

बैफल: प्रकाश फिटिंग में लगाया जाने वाला एक उपकरण जो आंखों में सीधे पड़ने वाले प्रकाश की तीव्रता को रोकता है या कम करता है।

बैक स्प्लैट: कुर्सी की पीठ के बीच में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी की पट्टी।

बैचलर चेस्ट: 1700 के दशक में उत्पन्न होने वाली एक छोटी, कम ऊंचाई वाली चेस्ट। इंटीरियर डिजाइनरों द्वारा इसे सजावटी टेबल के रूप में उपयोग किया जाता है।

बैकिंग: कपड़ों के पीछे लगाई जाने वाली एक महीन परत जो सिलाई को खिसकने से रोकती है और अत्यधिक टूट-फूट को कम करती है।

बैगिंग: एक पेंटिंग तकनीक जिसमें एक कुचले हुए बैग (या अन्य सामग्री) को पेंट में डुबोकर चमकदार या इमल्शन वाली दीवार पर थपथपाया जाता है ताकि आंतरिक वातावरण को बढ़ाने के लिए बनावट वाले पैटर्न बनाए जा सकें।

बैज़: ऊनी कपड़ा जो फेल्ट जैसा दिखता है (आमतौर पर हरा) जिसका उपयोग गेमिंग टेबल पर किया जाता है।

संतुलन: किसी स्थान में वस्तुओं की ऐसी व्यवस्था जिससे वे देखने में समरूप प्रतीत हों।

बैलून शेड: इकट्ठा किए गए कपड़ों और मुलायम, लहराते हुए सिलवटों से बना खिड़की का पर्दा।

बलस्टर: एक छोटा, ज्यादातर सजावटी, तराशा हुआ, वर्गाकार या सपाट स्तंभ जो रेलिंग को सहारा देता है।

बैंक्वेट: एक लंबी गद्देदार सीट, जो आमतौर पर अंतर्निर्मित होती है।

बार: काउंटर जैसा एक फर्नीचर का टुकड़ा जिसका उपयोग आमतौर पर पेय पदार्थों को मिलाने और परोसने के लिए किया जाता है।

बैरोक: एक सजावटी और अलंकृत शैली जिसकी उत्पत्ति 1600 के दशक में इटली में हुई थी। इस शैली की विशेषता अनियमित वक्र रेखाएं, मुड़े हुए स्तंभ, जटिल नक्काशी और विशाल आकार की मोल्डिंग हैं।

बैरल बैक: एक कुर्सी या सोफा जिसकी भुजाएँ और पीठ एक निरंतर वक्र शैली बनाती हैं।

बाटिक: हाथ से छपा हुआ कपड़ा जिसकी उत्पत्ति इंडोनेशिया में हुई; इस तकनीक में मोम का उपयोग करके पैटर्न में एक नकारात्मक छवि बनाई जाती है।

बैटन: लकड़ी की एक पट्टी जिसे दीवार पर लगाया जाता है ताकि कपड़े या पैनलिंग को लगाने के लिए सहारा मिल सके।

बैटिंग: कुशन, तकिए और रजाई के अंदरूनी हिस्से में इस्तेमाल होने वाली प्राकृतिक या सिंथेटिक कपड़े की पतली परतें, जो मुख्य कपड़े को अतिरिक्त मजबूती प्रदान करती हैं।

बॉहॉस: 1900 के दशक के आरंभिक वर्षों की एक शैली, जिसका नाम जर्मन वास्तुकला स्कूल से लिया गया है। इस न्यूनतम शैली का समकालीन वास्तुकला और फर्नीचर डिजाइन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

बेड फ्रेम: यह एक प्रकार का प्लेटफॉर्म होता है जिस पर बिस्तर टिका होता है। आमतौर पर यह धातु या लकड़ी का फ्रेम होता है जिसमें पैरों का इस्तेमाल बिस्तर को फर्श से ऊपर उठाने के लिए किया जाता है। हेडबोर्ड को अधिकांश बेड फ्रेम से जोड़ा जा सकता है।

बेड रेल: धातु या लकड़ी के फ्रेम जो हेडबोर्ड और फुटबोर्ड को आपस में जोड़ते हैं।

बेड स्कर्ट: गद्दे के नीचे से फर्श तक लटकने वाला प्लीटेड कपड़े का टुकड़ा।

बेडस्प्रेड: बिस्तर को ढकने वाला एक सजावटी कपड़ा जो दोनों तरफ फर्श तक पहुंच सकता है और आमतौर पर इतना बड़ा होता है कि तकियों को भी ढक सके।

बेंच: लकड़ी या किसी अन्य सामग्री से बनी एक लंबी सीट जिस पर कम से कम दो लोग बैठ सकें।

बायस: कपड़े के पैटर्न के अनुसार कपड़े को तिरछे या 45 डिग्री के कोण पर काटना और सिलना।

तिरछा किनारा: लकड़ी या किसी अन्य सामग्री का तिरछा पॉलिश किया हुआ किनारा।

बर्ड्स-आई: शुगर मेपल के पेड़ों की लकड़ी में अक्सर पाए जाने वाले छोटे-छोटे धब्बों का निशान।

बिस्ट्रो टेबल: आम तौर पर यह लगभग 40 इंच ऊंची गोल मेज होती है, जिसे छोटी जगहों और अंतरंग भोजन के लिए डिज़ाइन किया जाता है। लोग अक्सर बिस्ट्रो टेबल को पब टेबल भी कहते हैं।

कंबल रखने की पेटी: कंबलों को रखने के लिए बनाई गई एक नीची, डिब्बे जैसी पेटी, जिसे अक्सर 'होप चेस्ट' कहा जाता है। डिज़ाइनर इस पेटी को बिस्तर के फुटबोर्ड के सामने रखते हैं।

ब्लाइंड्स: क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर पट्टियों से बने खिड़की के पर्दे। ब्लाइंड्स लकड़ी, एल्युमीनियम, कपड़े या अन्य सामग्रियों से बने हो सकते हैं। इनका उपयोग प्रकाश को रोकने और खिड़की को सजावटी रूप देने के लिए किया जाता है।

ब्लॉक प्रिंटिंग: यह मानव द्वारा ज्ञात मुद्रण का सबसे प्राचीन रूप है। इसमें लकड़ी, लिनोलियम या तांबे के ब्लॉकों का उपयोग करके डिज़ाइन तैयार किए जाते हैं। इसका उपयोग आवासीय आंतरिक सज्जा में किया जाता है।

बोल्स्टर: एक लंबा और सामान्यतः बेलनाकार भरा हुआ तकिया या कुशन।

बॉम्बे: परंपरागत रूप से यह एक नीची, बारोक शैली की पेटी होती है जिसके उभरे हुए किनारे फ्रांस में उत्पन्न हुए थे। आमतौर पर इस पर नक्काशी की जाती है या इसे हाथ से रंगा जाता है।

बोनह्यूर-डु-जॉर: एक छोटी फ्रांसीसी लेखन मेज जिसमें आमतौर पर लंबे पैर होते हैं; कभी-कभी इसे शौचालय के सामान और विविध वस्तुओं को रखने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

किताबों की अलमारी: एक प्रकार का फर्नीचर जिसमें अलमारियां होती हैं और जिसका उपयोग आमतौर पर कार्यालय या अध्ययन कक्ष में किताबें रखने के लिए किया जाता है।

बुडोइर पिलो: एक छोटा सजावटी तकिया, जिसका आकार आमतौर पर लगभग 12 इंच x 16 इंच होता है। इसका उपयोग फर्नीचर की सीटों को सजाने के लिए किया जाता है।

बूले: लुई 14वें काल के एक डिजाइनर थे जो लकड़ी के फर्नीचर में धातु और कछुए की खोल की जड़ाई के लिए प्रसिद्ध थे।

बोबैक: 17वीं शताब्दी की विंडसर कुर्सी का एक लोकप्रिय प्रकार, जिसकी पीठ धनुषाकार रॉकर कुर्सी जैसी होती है।

बॉक्स प्लीट: यह एक सममित स्कर्ट प्लीट है जिसे प्लीट के प्रत्येक किनारे को पीछे की ओर मोड़कर बनाया जाता है, जिससे एक दांतेदार पैटर्न बनता है। इसका उपयोग मुख्य रूप से सोफा और पर्दे के फर्नीचर में किया जाता है।

ब्रेक फ्रंट: एक चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी या किताबों की अलमारी जो लंबवत रूप से तीन भागों में विभाजित होती है, जिसमें मध्य भाग आगे की ओर निकला हुआ होता है।

ब्रोकेड: एक समृद्ध कपड़ा जिसमें उभरे हुए पैटर्न बुने होते हैं, ब्रोकेड में रंग बहुत ही आकर्षक होते हैं।

बुफे (या साइडबोर्ड): एक ऐसा साइडबोर्ड जिसके ऊपर कोई स्टोरेज कैबिनेट नहीं होता। फ्रांसीसी भाषा में इसका अर्थ है "एक छोटा साइडबोर्ड, बर्तन रखने की जगह"। आमतौर पर इसे डाइनिंग रूम में रखा जाता है।

बंक बेड: दो बिस्तर जो आपस में इस तरह जुड़े होते हैं कि एक बिस्तर दूसरे के ऊपर रखा होता है।

ब्यूरो: कपड़ों को रखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अलमारी; दराजों वाला एक फर्नीचर का टुकड़ा जिसे डेस्क के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

बटन टफ्टेड: कपड़े से ढके हुए बटन जिन्हें असबाब की सतह से सिलकर बांध दिया जाता है, ये ज्यादातर विक्टोरियन शैली के असबाब वाले फर्नीचर में इस्तेमाल होते हैं।

बोनसाई: पेड़ों या पौधों को बक्सों में उगाकर उन्हें बौना बनाने की कला।

सी

कैलिको: सूती या सूती-मिश्रित कपड़ा जिस पर छोटे-छोटे रंगीन पैटर्न छपे होते हैं। आमतौर पर सोफे के कुशन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

स्तंभ: एक सजावटी या कार्यात्मक गोलाकार ऊर्ध्वाधर संरचनात्मक तत्व

कैलिफोर्निया किंग: एक बिस्तर का आकार जिसका माप 74"x86" होता है। यह शैली संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी तट पर लोकप्रिय है।

कैंपेन फर्नीचर: पोर्टेबल फर्नीचर जिसे मोड़ा जा सकता है और जो सपाट घटकों से बना होता है जिसे जोड़ा या अलग किया जा सकता है।

कैंडल फॉलोअर: यह उपकरण मोमबत्ती के ऊपर लगाया जाता है और मोम को मोमबत्ती के किनारे से नीचे टपकने से रोकता है।

बेंत: विभाजित रतन से बनी, जिसका उपयोग अक्सर कुर्सी की सीटों और पीठ को ढकने के लिए किया जाता है। आमतौर पर बाहरी फर्नीचर में इसका उपयोग होता है।
बेंत की कुर्सी: बेंत की कुर्सियाँ सबसे पहले 1600 के दशक के अंत में इंग्लैंड में बनाई गईं; ये बहुत लोकप्रिय हुईं क्योंकि ये सस्ती, हल्की और टिकाऊ थीं।
कैनोपी बेड: एक ऐसा बेड जो कोनों पर चार ऊंचे खंभों द्वारा समर्थित होता है, और इन खंभों को जोड़ने वाले अनुप्रस्थ सदस्य होते हैं जिनका उपयोग कपड़े की कैनोपी कवर को सहारा देने के लिए किया जा सकता है।
कैंटरबरी: इंग्लैंड के बिशप के नाम पर रखा गया एक पोर्टेबल लकड़ी का पत्रिका रखने का रैक।
कैपिटल: एक सजावटी शीर्ष भाग जिसे स्तंभ, खंभे या स्तंभ के ऊपर लगाया जाता है।
कैपिंग: आंतरिक वातावरण के लिए फर्नीचर के टुकड़ों को अधिक आकर्षक और सजावटी बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली घुमावदार सजावट।
कार्ड टेबल: जुए के शौक के चलते 1600 के दशक के उत्तरार्ध में इंग्लैंड में उत्पन्न होने वाली फोल्डिंग टेबल।
कार्लटन टेबल: 18वीं सदी की लेखन मेज जिसका ऊपरी भाग समायोज्य होता है।
नक्काशीदार कालीन: त्रि-आयामी पैटर्न वाला कालीन
केस फर्नीचर: बिना गद्दी वाले फर्नीचर के टुकड़े जैसे कि मेज, अलमारी, ड्रेसर और संदूक।
आवरण: दरवाजे या खिड़की के खुलने वाले हिस्से के चारों ओर लगा हुआ आवरण।
ढलवां लोहे का फर्नीचर: सांचों से बने लोहे के फर्नीचर और सजावटी उत्पाद। 1800 के दशक से ही बगीचे के फर्नीचर, पौधों के स्टैंड सहित कई वस्तुओं के लिए लोकप्रिय।

कैस्टर: फर्नीचर के पैरों के निचले हिस्से में लगे गोल पहिये, जो आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए एक घूमने वाले हैंडल से जुड़े होते हैं।

सेंटरपीस: भोजन की मेज के बीचोंबीच रखी जाने वाली एक सजावटी वस्तु।

सिरेमिक टाइलें: ये चमकदार मिट्टी की टाइलें होती हैं, जो टूट-फूट को आसानी से सहन कर लेती हैं। डिज़ाइनर इनका उपयोग फर्श और दीवारों पर सजावटी और कार्यात्मक दोनों उद्देश्यों के लिए करते हैं।

चेज़ लाउंज: एक गद्देदार आर्मचेयर जिसकी पीठ और सीट सामान्य से अधिक लंबी होती है ताकि आराम से लेटने में आसानी हो।

चैम्फर: एक कोना या किनारा जिसे एक कोण पर काटा जाता है या तिरछा किया जाता है।

झूमर: छत पर लगाया जाने वाला एक प्रकाश उपकरण जिसमें दो या दो से अधिक भुजाएँ होती हैं जो रोशनी को सहारा देती हैं।

नक्काशीदार: धातु की सतह जिस पर उभरे हुए और तराशे हुए अलंकरणों से सजावट की जाती है।

चेसर: एक ड्रेसर और एक चेस्ट का संयोजन।

चेस्टरफील्ड: एक सोफा डिजाइन जिसमें गहरे बटन वाली कढ़ाई और बड़े घुमावदार आर्मरेस्ट होते हैं जो सोफे की पीठ के बराबर ऊंचाई के होते हैं।

शेवल दर्पण: एक स्वतंत्र दर्पण जिसे एक ऊर्ध्वाधर फ्रेम में घुमाया जाता है।

चाइना कैबिनेट: एक कैबिनेट जिसमें कांच का फ्रंट हो भी सकता है और नहीं भी, जिसमें सामान रखा जा सकता है।

चिपेंडेल: यह एक आयताकार और भारी डिज़ाइन है। इसमें कैब्रियोल लेग्स और बॉल एंड क्लॉ फीट जैसी विशेषताएं हैं।

क्लॉ एंड बॉल: एक नक्काशीदार शेर या पक्षी का पंजा जो एक गोले को पकड़े हुए होता है, आमतौर पर कैब्रियोल लेग या पेडस्टल टेबल के आधार के अंत में पाया जाता है।

क्लब चेयर: एक गद्दीदार कुर्सी जिसमें आर्मरेस्ट होते हैं, आमतौर पर सोफे से मेल खाने के लिए बनाई जाती है और उसी सामग्री से ढकी होती है ताकि यह सोफे के सेट जैसा दिखे।

कॉकटेल टेबल: एक लंबी और नीची मेज जिसे आमतौर पर सोफे के सामने परोसने के लिए रखा जाता है।

औपनिवेशिक: यह 1700 के दशक से लेकर क्रांतिकारी युग तक का अमेरिकी फर्नीचर है।

रंग योजना: कमरों और घरों के आवासीय और वाणिज्यिक आंतरिक सज्जा के लिए रंगों का संयोजन।

कलर वे: इंटीरियर डिजाइन में प्रयुक्त एक शब्द जिसका अर्थ है आंतरिक स्थानों और वातावरण को बेहतर बनाने के लिए रंगों का संयोजन।

कम्फर्टर: कम्फर्टर गद्दे को तो ढकते हैं, लेकिन बॉक्स स्प्रिंग को नहीं।

कंसोल: दीवार के सहारे इस्तेमाल होने वाली किसी भी प्रकार की मेज।

समकालीन: यह एक ऐसा शब्द है जो फर्नीचर की उन अनेक शैलियों को समाहित करता है जो 1900 के दशक के उत्तरार्ध में विकसित हुईं।

कोने की अलमारी: त्रिकोणीय आकार की लकड़ी की डाइनिंग रूम की चीनी मिट्टी के बर्तनों की अलमारी, जो कोने में आसानी से फिट हो जाती है।

कॉर्निस: एक प्रकार की मोल्डिंग जो किसी सजावटी वस्तु के ऊपरी भाग या छत से मिलने वाली दीवार के किनारे पर लगी होती है।

काउच: 17वीं और 18वीं शताब्दी में प्रयुक्त एक शब्द जिसका प्रयोग डे-बेड शैली के लिए किया जाता था।

कंट्री स्टाइल: 1980 के दशक की एक अनौपचारिक शैली, जिसमें अक्सर प्रकृति और पुरानी यादों से जुड़े रूपांकन शामिल होते हैं।

कॉविंग: दीवारों और छत के बीच के जोड़ को ढकने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक सजावटी प्लास्टर मोल्डिंग।

क्रैकल: फर्नीचर की सतह पर दरारों का एक महीन जाल बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक विशेष प्रकार की ग्लेज़ फ़िनिश।

क्रेडेन्ज़ा: साइडबोर्ड या बुफे टेबल

शिखर: फर्नीचर की संरचना के शीर्ष पर लगा एक अलंकरण

क्रॉफ्ट: 18वीं शताब्दी की एक छोटी फाइलिंग कैबिनेट का डिज़ाइन जिसमें कई छोटे दराज और लिखने के लिए एक ऊपरी भाग होता था।

क्यूरियो (कलेक्टर कैबिनेट): एक ऐसा केस पीस जिसमें अलमारियों में कांच लगा होता है और संग्रहणीय वस्तुओं को प्रदर्शित करने के लिए दरवाजे होते हैं।

कंट्रास्ट: दो बिंदुओं के बीच प्रकाश के स्तर में अंतर

डी

दमास्क: एक भारी, दोनों तरफ से पहनने योग्य कपड़ा जिस पर बना पैटर्न, पृष्ठभूमि से अलग चमक और दमक के कारण विशिष्ट दिखता है।

डोरिक: खांचेदार, नुकीला शाफ्ट और वर्गाकार शीर्ष वाला डोरिक स्तंभ स्थापत्य शैली का सबसे सरल रूप है।

डक्ट: आयताकार या गोल आकार की धातु या फाइबरग्लास की चादर से बनी एक पाइप, जिसका उपयोग किसी आंतरिक स्थान के भीतर गर्म या ठंडी हवा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने के लिए किया जाता है।

डंबवेटर: भोजन, डाक, बर्तन, ट्रे आदि को लंबवत रूप से स्थानांतरित करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक छोटी लिफ्ट।

डेवेंट्री: लिखने के लिए ढलानदार ऊपरी सतह वाली एक छोटी लकड़ी की दराजों वाली पेटी।

डे-बेड: बैठने का एक ऐसा उपकरण जो आराम करने के लिए बिस्तर का काम भी कर सकता है।

डिबॉस: चमड़े पर डिज़ाइन को दबाकर छापना

डिजाइन: किसी वस्तु या स्थान की बाहरी बनावट की कल्पना करने की कला।

धुर्री गलीचा: फर्श को ढकने के लिए सुंदर डिज़ाइनों से बुनी हुई ऊन या सूती गलीचा।

डाइनिंग सेट: एक छोटा डाइनिंग सेट, जिसका उपयोग अक्सर रसोई में किया जाता है।

भोजन कक्ष: भोजन परोसने के लिए समर्पित एक औपचारिक कमरा।

डिस्क फुट: मेजों और कुर्सियों पर संतुलन और स्थिरता स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सपाट, डिस्क के आकार का फुट।

डिस्टेंपर: यह रंगद्रव्य को पानी में मिलाकर और गोंद से बांधकर बनाया जाता था, जो इमल्शन पेंट के आने से पहले बहुत लोकप्रिय था।

डिस्ट्रेस्ड: फर्नीचर की एक ऐसी विशेषता जिसमें टुकड़ों को जानबूझकर धंसाया या अन्य निशान बनाए जाते हैं ताकि वे पुराने और देहाती दिखें।

डॉवेटेल: जोड़ बनाने का एक प्रकार जिसमें डॉवेटेल के आकार में पिन काटकर लगाए जाते हैं, जो जोड़ बनाने के लिए दूसरे टुकड़े पर बने डॉवेटेल के बीच में फिट होते हैं।

दहेज का संदूक: एक ऐसा संदूक जो भावी दुल्हन के निजी सामान रखने के लिए बनाया जाता था।

ड्रेपरी: खिड़कियों को ढकने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा। समय के साथ-साथ इसके कई अलग-अलग सजावटी रूप विकसित हुए हैं, जिनके अलग-अलग नाम हैं।

डैडो: आंतरिक दीवार का निचला हिस्सा, जिसे सजावटी पट्टी से सजाया गया हो।

ड्राफ्ट चेयर: यह प्रारंभिक अंग्रेजी शैली की कुर्सी है जो विंगबैक कुर्सी के समकक्ष है।

डुवेट कवर: एक हटाने योग्य कवर जो डाउन से भरे रजाई को ढकता है, जिसे डुवेट के नाम से जाना जाता है।

रंगाई: फाइबर, धागे या कपड़े पर डुबोकर रंग लगाने की प्रक्रिया

विवरण: एक रेखाचित्र, जो किसी आंतरिक स्थान के डिजाइन के पैमाने के अनुसार विवरण दर्शाता है।

ई

प्रारंभिक पुनर्जागरण: 1500 के दशक की शुरुआत, गोथिक कला और शास्त्रीय पुनरुद्धार के बीच का संक्रमणकालीन काल।

आरामकुर्सी: कोई भी बड़ी कुर्सी जो आरामदायक हो और आराम करने के लिए उपयुक्त हो।

इलेक्टिक: विभिन्न शैलियों और कालों के फर्नीचर और सहायक सामग्रियों को मिलाकर सजावट करने की एक शैली।

मिस्र की शैली: यह डिजाइन की पहली "प्रभावशाली" शैली है जो 4000 से 300 ईसा पूर्व की है।

एलिवेशन: एलिवेशन किसी वस्तु के बगल में स्थित क्षैतिज तल की सामने की स्थिति से उस त्रि-आयामी वस्तु का दृश्य होता है।

एलिज़ाबेथन: यह फर्नीचर की एक शैली है जो 1500 के दशक के उत्तरार्ध में इंग्लैंड में एलिज़ाबेथ प्रथम के शासनकाल के दौरान उभरी।

कढ़ाई: मुलायम साज-सज्जा के लिए इस्तेमाल होने वाले कपड़े पर डिज़ाइन बनाने की एक सजावटी सुई-कारीगरी।

छज्जा: छत का निचला या बाहरी किनारा जो इमारत की पार्श्व दीवार से सटा होता है।

एम्पायर: यह शैली नेपोलियन साम्राज्य से प्रेरित है, जिसमें भारी-भरकम दिखने वाले शास्त्रीय डिजाइन होते हैं और सीधी रेखाओं और वक्रों का संयोजन होता है।

इमल्शन: एक जल आधारित पेंट है जिसे मुख्य रूप से आंतरिक और बाहरी वास्तुशिल्पीय स्थानों की दीवारों और छतों पर लगाया जाता है।

एंड टेबल: एक छोटी सजावटी मेज जिसे आमतौर पर सोफे के अंत में रखा जाता है।

मनोरंजन केंद्र: टीवी जैसे मनोरंजन उपकरणों के लिए डिज़ाइन किया गया फर्नीचर का एक टुकड़ा।

इंजीनियर्ड वुड फ्लोरिंग: यह एक प्रकार की फ्लोरिंग है जो लकड़ी की परतों को चिपकने वाले पदार्थ के माध्यम से आपस में जोड़कर बनाई जाती है।

उत्कीर्णन: एक इंटैग्लियो प्रिंटिंग प्रक्रिया जिसमें एक डिज़ाइन को धातु की प्लेट पर उकेरा जाता है।

एर्गोनॉमिक्स: यह शब्द मानव शरीर की बनावट के अनुसार फर्नीचर के डिजाइन और कार्यप्रणाली से संबंधित है।

एंटैबलचर: शास्त्रीय वास्तुकला शैली में स्तंभों पर टिका हुआ क्षैतिज तत्व।

नक्काशीदार कांच: रेत से घिसाई या हाइड्रोफ्लोरिक एसिड के उपयोग से सजाया, तराशा और चिह्नित किया गया कांच।

यूरोपीय शैली: यह एक परिष्कृत और परिपक्व शैली है जिसमें बारीकियों और सजावटी अलंकरणों पर बहुत ध्यान दिया जाता है।

आंखों को भाने वाली रोशनी: छत में लगे अर्ध-अंतर्निहित प्रकाश उपकरण, जिन्हें अलग-अलग दिशाओं में प्रकाश डालने के लिए समायोजित किया जा सकता है, जिससे एक विशिष्ट आंतरिक वातावरण बनता है।

अंग्रेजी तहखाना: एक ऐसा तहखाना जिसकी आधी ऊंचाई जमीन के तल से ऊपर हो।

एफ

फ़ेडरल: अमेरिकी क्रांति के बाद से लेकर 1800 के दशक के आरंभ तक की डिज़ाइन अवधि। फ़ेडरल शैलियों में नवशास्त्रीय प्रभाव समाहित हैं।

फाइबरबोर्ड: संपीड़ित लकड़ी के रेशों और गोंद से बना एक तख्ता।

फिलिग्री: एक सजावटी अलंकरण जो अक्सर सोने या चांदी के महीन तारों से घुमावदार और अरबीकृत आकृतियों के रूप में बनाया जाता है।

फेस्टून ब्लाइंड: यह ऑस्ट्रियन ब्लाइंड के समान होता है, लेकिन इसमें पूरे ब्लाइंड की लंबाई में फैली हुई झालरदार डिज़ाइन होती है।

फिनियल: एक सजावटी भाग जिसे किसी खड़ी वस्तु, जैसे कि पलंग के खंभे, के शीर्ष को सुशोभित करने के लिए तराशा या आकार दिया जाता है।

फाइल कैबिनेट: कार्यालयों में फाइलों को रखने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक फर्नीचर का टुकड़ा।

फिनिश: किसी वस्तु की सतह पर लगाई गई परत।

फ्लेम्बो: जलती हुई मशाल के आकार में बनाई गई एक नक्काशीदार सजावट।

फ्लेयर: फर्नीचर के पैर का बाहर की ओर मुड़ा हुआ अवतल वक्र।

फ्लॉक वॉलपेपर: उभरा हुआ कपड़े का पैटर्न वाला वॉलपेपर।

फ्लोर लैंप: एक लंबा लैंप जिसका आधार फर्श पर टिका होता है।

फ्लोर प्लान: एक रेखाचित्र, जो आमतौर पर पैमाने के अनुसार बनाया जाता है, जिसमें फर्नीचर और सहायक सामग्री के साथ कमरों का ऊपर से दृश्य दिखाया जाता है।

फ्रेस्को: दीवारों और छतों के लिए एक स्थायी चित्रकला तकनीक, जिसे गीले प्लास्टर में सीधे जलरंग मिलाकर बनाया जाता है।

फुटोन: एक जापानी शैली का गद्दा जिसे फोल्डिंग फ्रेम पर रखा जाता है, जिसका उपयोग बैठने और सोने दोनों के रूप में किया जाता है।

कार्यात्मकतावाद: डिजाइन का एक रूप जो अलंकरण और सजावट के बजाय कार्यात्मक उपयोग पर आधारित होता है।

रूप: रूप किसी वस्तु की आकृति, दृश्य स्वरूप या विन्यास को कहते हैं।

प्रवाह: डिजाइन द्वारा प्राप्त सहज निरंतरता, और सामंजस्यपूर्ण ढंग से व्यवस्थित सजावटी तत्व।

फोम: गद्देदार फर्नीचर में इस्तेमाल होने वाली गद्दी सामग्री।

केंद्रबिंदु: वह क्षेत्र जिस पर नजर टिक जाती है।

फुटबोर्ड: बिस्तर के निचले हिस्से में लगा हुआ भाग, जैसे कि हेडबोर्ड।

फ्रेम: गद्देदार फर्नीचर का लकड़ी का ढांचा या संरचना।

फ्रेंच क्लासिक: फ्रेंच क्लासिक डिजाइन काफी हद तक फर्नीचर में घुमावदार रेखाओं का उपयोग न करने पर आधारित था।

फ्रांसीसी पुनर्जागरण: यह शैली 1400 के दशक के मध्य से लेकर 1600 के दशक के प्रारंभ तक की है।

जी

गैडून मोल्डिंग: यह एक गोल आकार की मोल्डिंग होती है जिसे उत्तल वक्रों में तराशा जाता है और इसका उपयोग मेज की सतह और कुर्सियों के किनारों पर खरोंच से बचने के लिए किया जाता है।

गार्गोयल: इमारतों की छतों पर बनाई गई एक विकृत नक्काशीदार आकृति या सिर जो बारिश के पानी को नीचे ले जाने के लिए बाहर की ओर निकला होता है।

गेज: फर्नीचर में प्रयुक्त तार के व्यास का माप।

ज्यामितीय पैनल: नियमित रेखाओं, वक्रों और कोणों से बने सजावटी पैनल।

जॉर्जियन: 1700 के दशक का सुरुचिपूर्ण डिजाइन, जो अधिक भारी और अलंकृत होता है।

गिल्डिंग: आंतरिक साज-सज्जा के लिए सोने जैसी पतली परत चढ़ाने की प्रक्रिया।

गिम्प: सजावटी चपटी चोटी या गोल डोरी जिसका उपयोग ट्रिमिंग के रूप में किया जाता है।

ग्लेज़: फर्नीचर की फिनिशिंग प्रक्रिया में लकड़ी के रेशों को उभारने और चमकदार चमक देने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक रंगाई तकनीक।

ग्लाइफ: एक छोटी, ऊर्ध्वाधर खांच या चैनल और डोरिक वास्तुकला में एक बहुत ही सामान्य विशेषता।

गोबेलिन: एक फ्रांसीसी टेपेस्ट्री और पेरिस स्थित उस कारखाने का नाम जो इसे बनाता है।

हंस की गर्दन के आकार की भुजा वाली कुर्सी: एक ऐसी कुर्सी जिसकी घुमावदार लकड़ी की भुजाएँ हंस की गर्दन जैसी दिखती हैं।

गॉथिक: (1100 के दशक के उत्तरार्ध से 1500 के दशक के प्रारंभ तक) इस विशेष काल की कलाकृतियाँ आमतौर पर अपने वजन में भारी होती हैं और इनमें बड़े आकार और सीधी रेखाएँ होती हैं।

ग्रेड: पृथ्वी की सतह का स्तर।

लकड़ी में रेशों की दिशा (ग्रेन): लकड़ी में रेशों की दिशा।

ग्रैंडफादर क्लॉक: आमतौर पर 6 से 7 फीट ऊंची यह लकड़ी से बनी एक स्वतंत्र रूप से रखी जाने वाली फर्श घड़ी होती है, जिसके टावरनुमा आवरण के अंदर एक पेंडुलम लगा होता है।

ग्रासक्लॉथ: आंतरिक सजावट के लिए प्राकृतिक फाइबर वॉलपेपर

ग्राउट: टाइलों और ईंटों के बीच के अंतराल को भरने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पतला मोर्टार, जो आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की दीवारों में उपयुक्त होता है।

सुरक्षा रेलिंग: किसी खुले ऊंचे चबूतरे के चारों ओर सुरक्षा के लिए बनाई गई रेलिंग (ज्यादातर सजावटी)

एच

हॉल ट्री: यह एक प्रकार का फर्नीचर है जिस पर घर के प्रवेश द्वार के गलियारे में टोपी, रेनकोट या कोट टांगे जाते हैं।

हैलोजन: एक प्रकार का प्रकाश जो वास्तविक रंग या तटस्थ रंग की विशेषता उत्सर्जित करता है।

स्पर्श: कपड़े या चमड़े की बनावट संबंधी विशेषताओं का अनुभव।

कठोर लकड़ी: ओक, मेपल, महोगनी और अखरोट जैसे पेड़ों से प्राप्त लकड़ी।

हार्डवुड फ्रेम: गद्दीदार फर्नीचर के फ्रेम ओक या बर्च जैसी ठोस लकड़ियों से बने होते हैं। फर्नीचर का ढांचा तैयार होने के बाद दरार पड़ने से बचने के लिए इन लकड़ियों को आमतौर पर सुखाया और अच्छी तरह से तैयार किया जाता है।

हार्वेस्ट टेबल: यह एक संकीर्ण आयताकार टेबल है जिसमें हिंज वाले ड्रॉप लीव्स होते हैं और यह छोटे इंटीरियर स्पेस में आसानी से फिट हो जाती है।

हैंडरेल: सीढ़ी पर दीवार पर लगी एक रेलिंग जिसका उपयोग पकड़ने या सहारा देने के लिए किया जाता है।

हस्सॉक: इसे आमतौर पर ओटोमन के नाम से भी जाना जाता है, यह गद्देदार फुटस्टूल होता है जो बैठने के लिए पर्याप्त बड़ा होता है।

हेडबोर्ड: बिस्तर के सिरहाने की तरफ गद्दे के ऊपर उठी हुई संरचना।

चूल्हा: आग जलाने की जगह का फर्श, और आग जलाने की जगह के सामने बिछाई गई ज्वलनशील न होने वाली फर्श सामग्री का विस्तार।

हेप्पलव्हाइट: फर्नीचर की एक शैली जो नव-शास्त्रीय है और 1700 के दशक के अंत से लेकर लगभग 1820 के समय तक चिप्पेंडेल शैली का अनुसरण करती है।

हाई रिलीफ: किसी भी सामग्री (मुख्यतः लकड़ी) की समतल सतह पर की गई गहन नक्काशी। इसका उपयोग मुख्यतः टेबल टॉप और लकड़ी के दीवार पैनलों जैसी सजावटी सतहों पर किया जाता है।

हाईबॉय: दराजों वाली एक लंबी अलमारी, जिसका चलन 1700 के दशक में विकसित हुआ था।

हाइलाइटिंग: लकड़ी के रेशों को दृश्यमान बनाने के लिए परिष्करण प्रक्रिया में रंग हटाने की एक तकनीक।

होप चेस्ट: परंपरागत रूप से घरेलू सामान और शादी के लिए वस्त्र जैसी वस्तुओं को रखने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सजावटी, कब्जेदार ढक्कन वाला संदूक।

ह्यू: रंग का एक टोन, जैसे लाल, पीला, नीला।

मैं

इनले: लकड़ी के फर्नीचर की सतह पर जड़े गए विभिन्न रंगों की लकड़ियों या अन्य सामग्रियों के टुकड़ों से बने सजावटी पैटर्न।

आंतरिक टफ्टिंग: गद्दे के क्विल्टेड कवर के नीचे पैडिंग की परतों को जोड़ने और संयोजित करने की एक मजबूत विधि है, जिससे पैडिंग की परतों को खिसकने और धंसने से रोका जा सके।

इनसेट टाइल: एक ऐसी टाइल जिसका डिज़ाइन बाकी टाइलों से अलग होता है।

इंटैग्लियो: सजावटी उद्देश्य से उपयोग की जाने वाली सामग्री की सतह पर उकेरी गई एक चित्रकारी या डिज़ाइन।

इंटार्सिया: यह एक इतालवी प्रकार की सजावट है जो इनले और मार्केट्री के समान है, इस विधि में डिजाइन को लकड़ी की सतह में उकेरा जाता है।

लोहे का बिस्तर: धातु से बने बिस्तर जिन पर रंगीन परत चढ़ाई जाती है।

इटैलियन फिनिशिंग: बिस्तर की चादरों को तैयार करने की यह तकनीक इटली में विकसित की गई थी, जिसमें सतह को चिकना बनाने के लिए लक्जरी सिंगल प्लाई धागों को एक-एक करके संसाधित किया जाता है ताकि रेशों को हटाया जा सके।

इतालवी पुनर्जागरण: 1400 से 1600 के दशक तक प्रसिद्ध। इतालवी पुनर्जागरण काल के फर्नीचर में एक समृद्ध रूप दिखाई देता है, और यह नक्काशी, जड़ाई और बाजारी की कारीगरी से सजा हुआ है।

आंतरिक सज्जा: किसी आंतरिक स्थान की बनावट और सजावट की योजना बनाने की कला।

तीव्रता: किसी चीज को प्रबलता से महसूस करने का गुण।

प्रभाव: दो वस्तुओं के एक दूसरे के संपर्क में आने पर लगने वाली क्रिया का बल।

इनवॉइस: सेवाओं या वस्तुओं की सूची।

इंप्रेशन: किसी वस्तु की नकल।

अनौपचारिक: एक सहज या अनौपचारिक शैली। (औपचारिक नहीं)।

छवि: किसी व्यक्ति या वस्तु के बाहरी रूप का प्रतिनिधित्व।

विचार: एक सोच।

जे

औचित्य सिद्ध करना: यह दर्शाना कि कोई बात सही या तर्कसंगत है।

जैक्वार्ड: टेपेस्ट्री जैसे जटिल कपड़े, जिनके पैटर्न रंगीन धागों से बुने जाते हैं।

जूट: एक पौधा जिसका उपयोग प्राकृतिक फाइबर फ्लोरिंग में किया जाता है।

आभूषण निर्माण: आभूषणों के आकार में सजावटी और अलंकृत नक्काशी

जैपनिंग: पेंटिंग की एक यूरोपीय और अमेरिकी तकनीक जिसमें गर्मी से कठोर किए गए लाह की कई परतें लगानी पड़ती हैं।

के

केलिम: एक सपाट बुना हुआ टेपेस्ट्री गलीचा।

किडनी डेस्क: एक ऐसी डेस्क या टेबल जिसका सामने का हिस्सा घुमावदार हो और जिसका ऊपरी भाग किडनी बीन के आकार का हो।

भट्टी में सुखाई गई लकड़ी: नियंत्रित ताप के माध्यम से सुखाई गई लकड़ी।

किंग साइज का गद्दा: 78"x80" साइज का एक मानक किंग साइज का गद्दा।

क्लिस्मोस: प्राचीन यूनानी शैली की कुर्सी जिसमें आगे और पीछे तलवार के आकार के पैर होते हैं। पीछे के पैर ऊपर की ओर बढ़ते हुए कंधे की ऊंचाई तक घुमावदार पीठ को सहारा देते हैं।

नीहोल डेस्क: एक ऐसी डेस्क जिसमें बीच का हिस्सा गायब हो जाता है और एक अलमारी होती है।

बुना हुआ कपड़ा: पॉलिएस्टर या नायलॉन से बना असबाब का कपड़ा।

गांठ: लकड़ी का वह भाग जहाँ पेड़ की शाखा या टहनी लकड़ी के टुकड़े के किनारे या सतह पर दिखाई देती है।

एल

लेमिनेटेड: मजबूती, मोटाई और सजावटी प्रभाव के लिए ज्यादातर प्लाईवुड की चादरों को एक साथ परत दर परत चिपकाया जाता है।

लैंसेट: एक संकरी खिड़की जिसमें नुकीला मेहराब होता है, जो आमतौर पर गोथिक स्थापत्य शैली से जुड़ा होता है।

सीमित संस्करण: कलाकृतियाँ जिनका निर्माण जानबूझकर सीमित मात्रा में किया जाता है।

लिनोकट: वुडकट के समान उभरी हुई या अवतल छपाई की विधि।

लिंटेल: एक क्षैतिज सहायक बीम जो किसी खुले स्थान के बीच की दूरी को पाटता है, आमतौर पर खिड़की या दरवाजे के ऊपर।

लिथोग्राफी: तेल और पानी के प्रतिकर्षण पर आधारित एक मुद्रण प्रक्रिया, जिसकी पहचान कोमल रेखाओं और धुंधली आकृतियों से होती है।

लकड़ी: उपयोग के लिए तैयार किए गए लट्ठों की लकड़ी।

ल्यूमिनेयर: एक संपूर्ण प्रकाश व्यवस्था जिसमें बिजली की आपूर्ति से जोड़ने के लिए आवश्यक सभी घटक शामिल होते हैं।

लस्टर: सिरेमिक ग्लेज़ पर इस्तेमाल की जाने वाली एक चमकदार झिलमिलाती परत।

लैडर-बैक: एक देहाती शैली की कुर्सी जिसकी पीठ सीढ़ी जैसी दिखती है।

चमड़ा: घर की साज-सज्जा में इस्तेमाल होने वाले जानवर की खाल।

पुस्तकालय भंडारण: कैसेट, सीडी या वीडियो टेप को संग्रहित करने के लिए डिज़ाइन किए गए दराज, ट्रे, अलमारियाँ या रैक।

जीवनशैली: यह किसी व्यक्ति के जीवन जीने के तरीके को दर्शाती है।

लाइनिंग पेपर: सजावटी पेपर के आधार के रूप में इस्तेमाल किया जाने वाला वॉलपेपर का प्रकार।

लॉफ्ट बेड: बंक बेड की तरह एक ऊंचा बिस्तर जिसमें साइड में दराजें होती हैं।

लॉग फर्नीचर: असली लकड़ी के लट्ठों से बना पश्चिमी और देहाती शैली का फर्नीचर।

लूप-बैक: बिना आर्मरिस्ट वाली अंडाकार कुर्सी की पीठ।

लूवर वाले दरवाजे: क्षैतिज लकड़ी की पट्टियों से बने दरवाजे।

लवसीट: सोफे का एक छोटा, दो सीटों वाला संस्करण।

ल्यूनेट: अर्धचंद्र के आकार की एक सजावटी वस्तु।

एम

मैनशेट: कुर्सी के आर्मरिस्ट पर लगाया जाने वाला एक छोटा सा गद्देदार टुकड़ा।

मेंटल: चिमनी के ऊपर की शेल्फ।

मार्बलिंग (या मार्बलिंग): किसी सतह पर सजावटी पेंटिंग/फिनिशिंग करना जिससे वह संगमरमर जैसी दिखे।

मार्क्वेट्री: जड़ाई से बने सजावटी पैटर्न और रूपांकन, जो आमतौर पर लिबास वाली सतहों पर लगाए जाते हैं।

मैट फिनिश: एक ऐसी फिनिश जो चमकदार होने की तुलना में अधिक सपाट होती है।

गद्दा: बिस्तर का एक ऐसा टुकड़ा जो फोम और फाइबर की कई परतों से मिलकर बना होता है।

एमडीएफ: मीडियम डेंसिटी फाइबरबोर्ड; यह लकड़ी की संपीड़ित चादरों से बना होता है और इसका उपयोग फर्नीचर के निर्माण में किया जाता है।

भूमध्यसागरीय: इस शैली की उत्पत्ति उत्तरी भूमध्य सागर के देशों जैसे स्पेन, ग्रीस और इटली में हुई।

मेरिनो: सबसे उत्तम और बेहतरीन ऊन।

मॉड्यूलर: फर्नीचर के ऐसे टुकड़े जिन्हें स्थान की आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न विन्यासों में पुनर्व्यवस्थित किया जा सकता है।

मोइरे: रेशम पर पानी की आकृतियों से मिलती-जुलती कपड़े की एक पैटर्न।

मोल्डिंग: सजावटी आकार की पट्टियाँ जिन्हें किसी सतह पर लगाया जाता है।

मोनोक्रोम: एक ही रंग का।

मोज़ेक टाइल्स: रंगीन प्राकृतिक पत्थर की टाइलें।

मदर ऑफ पर्ल: मोती के खोल के टुकड़ों की जड़ाई, जिसका उपयोग आमतौर पर 19वीं शताब्दी की शुरुआत में फर्नीचर की सतहों को सजाने के लिए किया जाता था।

आकृति: एक सजावटी तत्व जिसे दोहराव द्वारा पैटर्न में परिवर्तित किया जा सकता है।

मुल्लियन: खिड़की के फ्रेम के बीच इस्तेमाल होने वाली ऊर्ध्वाधर लकड़ी।

एन

नैप: एक ऐसा कपड़ा जिसकी बनावट एक ही दिशा में होती है।

प्राकृतिक फिनिश: पारदर्शी फिनिश जो प्राकृतिक लकड़ी के मूल दाने और रंग को नहीं बदलती है।

नवशास्त्रीय शैली: प्राचीन रोम और ग्रीस से प्रभावित रूपांकनों वाली सुरुचिपूर्ण और सरल डिजाइन शैली।

नेस्टिंग टेबल: अलग-अलग आकार की टेबलें जो एक दूसरे के नीचे रखी होती हैं, आमतौर पर इनमें 3 टेबलों का एक सेट होता है।

तटस्थ रंग: सफेद, काला और ग्रे जैसे रंग जो आसानी से अन्य रंगों के साथ मिल जाते हैं।

दीवार में बना एक गड्ढा जिसमें मूर्ति या अन्य सजावटी सामान प्रदर्शित किए जाते हैं।

नाइट स्टैंड: एक छोटी, नीची मेज जिसमें दराज होते हैं और जिसे बिस्तर के बगल में रखा जाता है।

नायलॉन: पॉलिमर से निर्मित एक कृत्रिम धागा।

हे

ओकेजनल टेबल: कॉफी टेबल और एंड टेबल जैसे छोटे फर्नीचर के टुकड़ों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द।

ऑफिस की कुर्सी: कोई भी कुर्सी जिसे विशेष रूप से कार्यालय के वातावरण में उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया हो।

ओगी: एक सजावटी एस-आकार की मोल्डिंग।

ऑनले: लकड़ी या अन्य सामग्रियों की सतह पर लगाई जाने वाली सजावट।

अपारदर्शी: कोई भी ऐसा पदार्थ जो प्रकाश को अपने आर-पार जाने की अनुमति नहीं देता है।

ओपन स्टॉक: फर्नीचर संग्रह के वे अलग-अलग टुकड़े जो अलग से बेचे जाते हैं।

प्राच्य कालीन: भारत, निकट पूर्व या चीन में हाथ से बुना हुआ प्राच्य कालीन।

ओर्मुलू: सोने जैसी दिखने वाली धातु, जिसका उपयोग फर्नीचर की सतहों पर सजावटी सामग्री के रूप में किया जाता है।

ओटोमन: बिना आर्मरेस्ट और बैक वाला एक नीचा, गद्देदार फुटस्टूल।

ओवरले: सजावट के लिए समतल सतह पर लगाया जाने वाला एक सजावटी ट्रिम टुकड़ा।

पी

पामेट: ताड़ के पत्ते के आकार का नक्काशीदार या चित्रित आभूषण।

पलाडियन खिड़की: एक बड़ी खिड़की जो तीन भागों में विभाजित होती है, जिसमें एक मेहराबदार केंद्रीय भाग और दो छोटे पार्श्व भाग शामिल होते हैं।
पैनल: सजावटी दीवार की सजावट के लिए, दरवाजे की तरह रेलिंग और स्टाइल्स से घिरा हुआ लकड़ी का पतला सपाट टुकड़ा।
पार्केट: लकड़ी का फर्श जिसे आमतौर पर ब्लॉकों में बिछाया जाता है, जिसमें तख्तों को एक दूसरे से कोण पर रखकर सजावटी पैटर्न बनाए जाते हैं।
पार्केट्री: फर्नीचर जिसमें पार्केट फर्श के समान ज्यामितीय डिजाइन जड़े होते हैं।
पार्सन्स लेग: सोफा कुर्सी के अपेक्षाकृत लंबे, पूरी तरह से गद्देदार पैर।
पासेमेंटरी: लटकन, टाई बैक और रिबन जैसी आकर्षक सजावटी साज-सज्जा।
पेस्टल: एक हल्का, नरम रंग।
पैटिना: समय के साथ उपयोग से विकसित होने वाली चमक, जो आमतौर पर उत्तम प्राचीन वस्तुओं, विंटेज और चमड़े के फर्नीचर से जुड़ी होती है।
आंगन का फर्नीचर: विशेष रूप से बाहरी उपयोग के लिए बनाया और तैयार किया गया फर्नीचर।
पैटर्न: कपड़े, परत आदि पर बना सजावटी या अलंकृत डिज़ाइन।
पैटर्न दोहराव: एक ही पैटर्न या आकृति के दोहराव के बीच का अंतराल।
पेडस्टल: मेज का आधार।
पेडिमेंट: एक सजावटी शिलाखंड जो किसी ऊंचे फर्नीचर के ऊपरी भाग पर फैला होता है, जैसे कि क्यूरियो कैबिनेट और ग्रैंडफादर क्लॉक।
पेल्मेट: पर्दे या ब्लाइंड के ऊपरी किनारे को छिपाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला लकड़ी या कपड़े का किनारा।

प्लिंथ: स्तंभ का वर्गाकार या आयताकार आधार।

पोर्टिको: स्तंभों द्वारा समर्थित एक ढका हुआ प्रवेश द्वार।

समानुपात: किसी वस्तु के एक भाग और दूसरे भाग के बीच तथा संपूर्ण वस्तु के संबंध में, या एक तत्व और दूसरे तत्व के बीच का संबंध।

पेंसिल प्लीट: एक संकीर्ण, सघन, एकत्रित ड्रेपरी।

पेंसिल-पोस्ट बेड: एक ऐसा बेड जिसमें चार पतले खंभे होते हैं जिनकी ऊंचाई छह से आठ फीट तक होती है।

पेंडेंट: एक लटकने वाला आभूषण।

फ़ारसी कालीन: ईरान में हाथ से बुना हुआ एक प्राच्य कालीन।

पिगमेंट: वह पदार्थ जो पेंट को रंग प्रदान करता है।

शिखर: फर्नीचर के सबसे ऊपरी भाग पर बना नक्काशीदार आभूषण।

पोर्टिएरेस: धातु के कब्जेदार पर्दे के डंडे जिनसे पर्दा लटकाया जाता है।

प्राथमिक रंग: तीन मूल रंग; लाल, पीला और नीला।

क्यू

क्वीन ऐनी: 1700 के दशक की प्रमुख फर्नीचर शैली, जो अपने समृद्ध और नवीन डिजाइन के लिए जानी जाती है।

क्विल्ट: दो परतों वाले कपड़े और उनके बीच में रुई की एक परत से बना बिस्तर का आवरण।

आर

रेल: डाइनिंग रूम की कुर्सी की पीठ के ऊपरी हिस्से पर लगा हुआ क्षैतिज टुकड़ा, जो ज्यादातर नक्काशीदार और सजावटी होता है।

पेंट को कपड़े से रगड़कर या पोंछकर प्राप्त किया गया प्रभाव: पेंट की सतह को कपड़े से रगड़कर या पोंछकर पेंट का प्रभाव प्राप्त किया जाता है।

रिक्लाइनर: एक ऐसी कुर्सी जो पीछे की ओर झुक जाती है।

रेडीमेड: मानक आकार के कारखाने में बने पर्दे।

रेकामियर: फर्नीचर डिजाइन के विक्टोरियन युग में लोकप्रिय हुआ एक सुरुचिपूर्ण सोफा।

रीगल: भव्य आकृतियों से पहचानी जाने वाली पारंपरिक फर्नीचर शैली।

रीजेंसी: ब्रिटिश फर्नीचर की नवशास्त्रीय शैली जो 1800 के दशक के पूर्वार्ध में प्रसिद्ध थी।

रिलीफ: सतह या पृष्ठभूमि से ऊपर उभरा हुआ अलंकरण।

पुनर्जागरण शैली: फर्नीचर डिजाइन का यह आंदोलन 13वीं शताब्दी में इटली में शुरू हुआ और 17वीं शताब्दी तक जारी रहा, जिसकी सजावटी शैली माइकल एंजेलो और राफेल से प्रभावित थी।

प्रतिकृति: नया फर्नीचर जो किसी प्राचीन शैली या काल की नकल है।

जीर्णोद्धार: प्राचीन वस्तुएं या संग्रहणीय वस्तुएं जिन्हें पुनर्निर्माण या परिष्करण के माध्यम से उनकी मूल स्थिति में वापस लाया गया हो।

रेट्रो: यह प्रदर्शनी 1930 के दशक से लेकर 1980 के दशक तक के कुछ बेहतरीन फर्नीचर के चंचल और व्यंग्यात्मक डिजाइनों को प्रदर्शित करती है।

रोमन शेड: कपड़े का खिड़की का पर्दा जो बगल की ओर मुड़ जाता है।

रोमनस्क: प्रारंभिक मध्ययुगीन फर्नीचर जिसमें मेहराब, वक्र और अलंकरणों की सरल ज्यामितीय व्यवस्था जैसे कच्चे रोमन चरित्र दिखाई देते हैं।

रोमायने: पुनर्जागरण काल की ऐसी सजावट जिसमें पदकों पर मानव सिर दर्शाए गए हैं।

रोसेट: गुलाब के फूल के समान दिखने वाला एक आभूषण।

रूसी शैली: पूरे यूरोप की शैलियों का मिश्रण।

एस

सैबोट: फर्नीचर के पैरों के निचले हिस्से में इस्तेमाल होने वाले कांस्य के "जूते" के लिए एक फ्रांसीसी शब्द।

सैटिन: एक सूती कपड़ा जिसे दिखने में सैटिन जैसा बनाया जाता है और जिसकी एक तरफ रेशमी और चिकनी सतह होती है।

सॉबक टेबल: एक ऐसी टेबल जिसका फ्रेम X-आकार का होता है।

पैमाना: किसी वस्तु का आकार और चित्र के आकार तथा वस्तु के वास्तविक आकार के बीच तुलना।

सौवेज: चमड़े के फर्नीचर पर लागू किया जाने वाला दो रंगों का प्रभाव, जिससे कमरे की सजावट के अनुसार अलग-अलग फिनिश तैयार किए जा सकते हैं।

स्कैटर-बैक सोफा: एक ऐसा सोफा जिसमें पीछे की ओर ढीले कुशन लगे होते हैं।

स्कोंस: दीवार पर लगाया जाने वाला एक लंबा और पतला प्रकाश उपकरण, जिसे अक्सर मोमबत्ती रखने के लिए बनाया जाता है।

स्कॉचगार्ड: 3एम कंपनी का पंजीकृत ट्रेडमार्क, जो कपड़ों को पानी के रिसाव से सुरक्षा प्रदान करता है।

स्क्रॉल: स्क्रॉल घुमावदार आकार के सहायक और सजावटी तत्व होते हैं जो खंभों या रेल से जुड़े होते हैं।

सीट रेल: कुर्सी की सीट को सहारा देने और पैरों को एक साथ रखने वाली संरचना।

द्वितीयक रंग: नारंगी, हरा और बैंगनी।

सेक्शनल सोफा: कई भागों से बना हुआ घुमावदार या सीधा सोफा।

सेटी: पीठ और भुजाओं वाली एक लंबी सीट, जो मूल रूप से 1600 के दशक में लोकप्रिय थी।

सैंडब्लास्टिंग: संपीड़ित हवा और रेत का छिड़काव करके सामग्री की सतह को उत्कीर्ण करने की तकनीक।

सेपिया: ऑक्टोपस या कटलफिश की स्याही से बना एक गर्म, लाल-भूरा रंगद्रव्य। कलाकार इसे रेखाचित्रों में स्याही के रूप में उपयोग करते हैं।

स्थिर जीवन: सौंदर्य प्रभाव के लिए व्यवस्थित वस्तुओं के समूह का चित्रण

संरचना: किसी वस्तु का समग्र स्वरूप और दिखावट।

शाम: शाम एक सजावटी आवरण है जो तकिए को पूरी तरह से ढक लेता है।

ढाल के आकार की पीठ वाली कुर्सी: एक ऐसी कुर्सी जिसकी पीठ ढाल के आकार की हो।

शोजी स्क्रीन: एक स्वतंत्र रूप से खड़ी होने वाली प्राच्य शैली की स्क्रीन, जिसका उपयोग कमरे को विभाजित करने के लिए किया जाता है।

साइड चेयर: बिना आर्मरेस्ट वाली डाइनिंग चेयर या छोटे आकार की कुर्सी को संदर्भित करता है।

रेशम: रेशम के कीड़े से प्राप्त एक प्राकृतिक रेशा। रेशम अपनी कोमलता, चिकनाई और चमक के लिए जाना जाता है।

स्लीघ बेड: एक लोकप्रिय फ्रेंच एम्पायर डिज़ाइन का अमेरिकी रूपांतरण। स्लीघ बेड में ऊँचा, घुमावदार हेडबोर्ड और फुटबोर्ड होता है।

सोफा: गद्देदार, लंबी बैठने की मेज।

स्पिनेट डेस्क: एक लेखन डेस्क जिसे औपनिवेशिक काल के एक संगीत वाद्ययंत्र का उपयोग करके डिजाइन किया गया था।

स्पाइरल लेग: घुमावदार रस्सी या सर्पिल के आकार में तराशा या मोड़ा गया लेग।

स्यूड: यह एक ताजा चीरे हुए चमड़े से बना चमड़ा होता है, जिसमें मखमल जैसी सतह होती है।

सममित: डिजाइन या सजावट में संतुलन।

टी

टेबल लैंप: एक स्टैंड वाला लैंप जिसे आमतौर पर कमरे के कोनों में रखा जाता है।

टैफेटा: बुना हुआ कपड़ा जो दोनों तरफ से चिकना होता है।

एम्बुलेंट टेबल: पोर्टेबल टेबल जिसे आवश्यकतानुसार कहीं भी रखा जा सकता है। यह फ्रेंच शब्द से लिया गया है।

टेबल रनर: सजावटी कपड़े की पट्टी जो पतली होती है और डाइनिंग टेबल के बीचोंबीच बिछी होती है।

अनुकूलित असबाब: फर्नीचर का ढांचा जिस पर कपड़ा स्थायी रूप से लगा होता है।

टेपरड लेग: फर्नीचर के ऐसे पैर जो नीचे की ओर धीरे-धीरे पतले होते जाते हैं।

टेपेस्ट्री: सजावटी डिज़ाइन या चित्रों वाला "भारी" बुना हुआ कपड़ा, जिसका उपयोग आंतरिक स्थान में असबाब या दीवार पर लटकाने के लिए किया जाता है।

चाय की मेज: पोर्टेबल छोटी मेज, जिसका उपयोग कॉफी टेबल के स्थान पर किया जाता है।

टीपॉय: चाय रखने के लिए बनाया गया एक छोटा, स्वतंत्र रूप से खड़ा होने वाला फर्नीचर का टुकड़ा।

तृतीयक रंग: दो द्वितीयक रंगों को मिलाकर बनाया गया रंग।

परीक्षक: कैनोपी को सहारा देने के लिए पोस्टर बेड के ऊपर एक लकड़ी का फ्रेम।

टाईबैक: सजावटी कपड़ा या डोरी, जिसका उपयोग पर्दे को खुला रखने के लिए किया जाता है।

टॉर्चियर लैंप: एक फ्लोर लैंप जो एक परावर्तक कटोरे से प्रकाश को ऊपर की ओर फेंकता है।

आवागमन का पैटर्न: कमरे में लोगों के आने-जाने की दिशा।

ट्रांजिशनल: डिजाइन की वह शैली जो विभिन्न शैली श्रेणियों के प्रभावों को मिश्रित करती है।

ट्रिम: सजावटी तत्व जैसे कि एक्सेंट पिलो पर लगी झालर।

ट्राइपॉड: एक छोटी मेज जिसका गोल ऊपरी भाग तीन पैरों वाले खंभे पर टिका होता है, मूल रूप से मेहमानों को चाय परोसने के लिए बनाई गई थी।

ट्रंक: कपड़ों को रखने के लिए कब्जेदार ढक्कन वाला एक आयताकार डिब्बा।

टीवी स्टैंड: टीवी रखने के लिए इस्तेमाल होने वाली छोटी अलमारी।

यू

अंडर-ड्रेपरी: हल्की, पारदर्शी ड्रेपरी जो भारी ड्रेपरी के पीछे लटकती है।

अधूरा फर्नीचर: लकड़ी से निर्मित फर्नीचर जिस पर किसी भी प्रकार की फिनिशिंग नहीं की गई हो।

अपराइट्स: कुर्सी के बाहरी ऊर्ध्वाधर स्तंभ।

कलश: फूलदान के आकार का सजावटी आभूषण।

वी

वेलेंस: पर्दे के ऊपरी भाग के रूप में उपयोग की जाने वाली एक क्षैतिज संरचना, जो कपड़े या लकड़ी से बनी हो सकती है।

मान: किसी रंग की हल्कापन या गहरापन।

वैनिटी: बाथरूम में सिंक रखने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला काउंटरटॉप।

फूलदान: सजावटी कलश।

वनस्पति रंग: ऐसे रंग जो पौधों के प्राकृतिक वर्णक से निकाले जाते हैं।

वेलवेट: आलीशान, मुलायम और मोटे रेशों वाला कपड़ा।

वेनियर: लकड़ी की पतली चादरें।

वेनेशियन ब्लाइंड: खिड़की को ढकने वाला एक प्रकार का पर्दा जिसमें क्षैतिज पट्टियों की एक श्रृंखला होती है जिसे प्रकाश को नियंत्रित करने के लिए घुमाया या ऊपर उठाया जा सकता है।

विट्रीन: कांच के सामने वाला एक सजावटी कैबिनेट।

वॉयल: एक पारदर्शी, हल्का कपड़ा जिसका उपयोग चादरें और तकिए जैसे मुलायम घरेलू वस्त्र बनाने में किया जाता है।

डब्ल्यू-जेड

वाबी-साबी: कला और सौंदर्य को देखने की एक जापानी शैली का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी अपूर्ण, क्षणभंगुर और अपूर्ण चीजों में व्याप्त है।

वेनस्कॉट कुर्सी: एक एलिजाबेथन ओक कुर्सी जिसकी पैनल वाली पीठ दीवार पर लगे वेनस्कॉटिंग जैसी दिखती है।

वॉलपेपर: एक सजावटी सामग्री (ज्यादातर कागज से बनी) जिसका उपयोग घरों, कार्यालयों और अन्य इमारतों की आंतरिक दीवारों को ढकने के लिए किया जाता है।

अलमारी: दरवाजे वाली एक कैबिनेट।

वॉश स्टैंड: चार पैरों वाली एक अलमारी जिसके ऊपरी हिस्से में एक बेसिन लगा होता है।

वेल्श अलमारी: एक कैबिनेट जिसमें एक बड़ा भंडारण आधार और खुली अलमारियों वाला एक ऊपरी क्षेत्र होता है।

विकर फर्नीचर: विलो, सरकंडा और रतन से बुना हुआ फर्नीचर।

विंडसर कुर्सी: लकड़ी की कुर्सी की यह शैली 1700 के दशक की शुरुआत में उत्पन्न हुई थी, इसमें पंखे, घेरे या कंघी के आकार की धुरीदार पीठ दिखाई देती है।

वाइन रैक: वाइन की बोतलों को रखने के लिए रैक।

विंग चेयर: ऊँची पीठ वाली गद्देदार कुर्सी जिसमें घुमावदार भुजाएँ और पंख के आकार के उभार होते हैं जो सिर के स्तर पर भुजाओं के ऊपर तक फैले होते हैं।

यॉर्कशायर कुर्सी: एक ओक की कुर्सी जिसमें सामने के पैर और स्ट्रेचर मुड़े हुए हैं।

ज़नाना: प्राचीन फारस में घर के उस हिस्से का फर्नीचर जिसमें महिलाओं और लड़कियों को एकांत में रखा जाता था।

ज़िगज़ैग: एक ऐसी मोल्डिंग जिसमें अगल-बगल लगातार कई तीखे मोड़ होते हैं।

इंटीरियर डिजाइन पेशे का परिचय

हम सभी अपना अधिकांश समय अपने घरों के भीतरी हिस्सों में बिताते हैं, जहाँ हम आराम करते हैं, या व्यावसायिक स्थानों में, जहाँ हम काम करते हैं या खरीदारी करते हैं। हम अपने आस-पास के वातावरण पर शायद ही ध्यान देते हैं, जो रंगों, बनावटों, फर्नीचर और अन्य कई डिज़ाइन तत्वों से भरा होता है, जो किसी भी आंतरिक स्थान का माहौल बनाते हैं।

इंटीरियर डिजाइन के पेशेवर विशेषज्ञ घरों और विभिन्न प्रकार के व्यवसायों के मालिकों को कार्यात्मक रूप से व्यावहारिक और सौंदर्यपूर्ण रूप से सुंदर आंतरिक स्थान प्रदान करते हैं। एक इंटीरियर डिजाइनर निजी आवासों या होटलों, अस्पतालों, खुदरा दुकानों, कार्यालयों और अन्य निजी और सार्वजनिक स्थानों जैसे वाणिज्यिक आंतरिक स्थानों के साथ काम करने में विशेषज्ञ होता है।

विभिन्न तरीकों से इंटीरियर डिजाइन विशेषज्ञ समाज को लाभ पहुंचाते हैं, वे इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि स्थान और आंतरिक परिवेश कैसे दिखने और कार्य करने चाहिए। आंतरिक स्थान की योजना बनाते समय और यह विचार करते हुए कि स्मार्ट और उचित डिजाइन योजना निवासियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण को कैसे प्रभावित करती है, साथ ही स्थान के लिए फर्नीचर और सहायक उपकरण चुनते समय, डिजाइनर आंतरिक स्थानों को जीवंत बनाते हैं और ग्राहक की कार्यात्मक और सौंदर्य संबंधी आवश्यकताओं को वास्तविकता में बदल देते हैं।

इंटीरियर डिजाइन का पेशा सिर्फ रंगों, कपड़ों और फर्नीचर के चयन से कहीं अधिक है। पेशेवर इंटीरियर डिजाइनर भवन और जीवन सुरक्षा संबंधी नियमों का सावधानीपूर्वक पालन करते हैं, पर्यावरणीय मुद्दों पर विचार करते हैं और भवनों के

बुनियादी निर्माण और यांत्रिक आधारों और प्रणालियों को समझते हैं। इंटीरियर डिजाइनर को उद्योग में उपयोग किए जाने वाले सटीक स्केल वाले रेखाचित्रों और अन्य आवश्यक दस्तावेजों के माध्यम से डिजाइन अवधारणाओं को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना आना चाहिए।

एक पेशेवर इंटीरियर डिजाइनर कमरे की जगह और फर्नीचर की व्यवस्था की योजना बनाता है, विभाजन दीवारों की स्थिति निर्धारित करता है, और रंगों, उपयुक्त और टिकाऊ सामग्रियों तथा सजावटी सामानों का चयन करता है। इंटीरियर डिजाइनर के पास बजट के भीतर और समय पर परियोजनाओं को पूरा करने के लिए कुशल व्यावसायिक कौशल भी होना चाहिए।

पेशेवर इंटीरियर डिजाइनर शिक्षा, अनुभव और परीक्षा के आधार पर आंतरिक स्थानों की कार्यक्षमता और गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अच्छी तरह से योग्य होते हैं। जीवन की गुणवत्ता में सुधार, उत्पादकता बढ़ाने और जनता के स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण की रक्षा के लिए, पेशेवर इंटीरियर डिजाइनरों से निम्नलिखित की अपेक्षा की जाती है:

ग्राहक की जरूरतों, लक्ष्यों और जीवन सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं का विश्लेषण और समझना;

निष्कर्षों को इंटीरियर डिजाइन के ज्ञान के साथ कुशलतापूर्वक एकीकृत और मिश्रित करता है;

अवधारणाओं को विकसित करना और प्रस्तुति के माध्यम से अंतिम डिजाइन संबंधी सिफारिशें प्रस्तुत करना;

आंतरिक निर्माण, सामग्री और फिनिशिंग के लिए कार्यशील रेखाचित्र और विनिर्देश तैयार करता है;

तकनीकी क्षेत्र में पेशेवर सेवाएं प्रदान करने वाले लाइसेंस प्राप्त चिकित्सकों के साथ सहयोग करता है।

नियामक अनुमोदन के लिए आवश्यक यांत्रिक और विद्युत डिजाइन के क्षेत्र;

ग्राहक की ओर से बोलियां और अनुबंध दस्तावेज तैयार करना और उन पर हस्ताक्षर करना;

क्रियान्वयन के दौरान और पूरा होने पर डिजाइन समाधानों की समीक्षा और मूल्यांकन करना;

पेशेवर इंटीरियर डिज़ाइनर और डेकोरेटर के कार्यक्षेत्र अलग-अलग होते हैं, हालांकि आम जनता आमतौर पर इन दोनों के बीच का अंतर नहीं समझ पाती। सजावट निस्संदेह किसी भी आंतरिक स्थान का एक महत्वपूर्ण तत्व है, यह माहौल बनाने में सहायक होती है और इसका सीधा संबंध मानवीय अंतःक्रिया या व्यवहार से नहीं होता, जबकि इंटीरियर डिज़ाइन पूरी तरह से मानवीय व्यवहार और अंतःक्रिया या संचार पर आधारित होता है। इंटीरियर डिज़ाइन में स्थान के साथ मानवीय अंतःक्रिया और इस अंतःक्रिया के माध्यम से विकसित होने वाले संबंध एक महत्वपूर्ण पहलू हैं। इंटीरियर डिज़ाइनर ग्राहकों के लिए आरामदायक वातावरण बनाने के लिए स्थान नियोजन के विज्ञान का अवलोकन, अध्ययन और अनुप्रयोग करते हैं।

इंटीरियर डिजाइन पेशे का इतिहास

एक तरह से यह कहा जा सकता है कि समकालीन इंटीरियर डिजाइनरों का काम प्राचीन काल से ही चला आ रहा है, हालांकि बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इसे इंटीरियर डिजाइन के रूप में नहीं जाना जाता था।

प्राचीन यूनानी सभ्यता उन पहली सभ्यताओं में से थी जिन्होंने सुनियोजित स्थानों में नाट्य प्रदर्शन करना शुरू किया, जिन्हें उन्होंने रंगमंच नाम दिया। मठों ने स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए कुछ शुरुआती स्थान तैयार किए और वे सबसे महत्वपूर्ण प्रारंभिक विद्यालय स्थलों में से थे।

आतिथ्य सत्कार उद्योग का इतिहास कई सदियों पुराना है, जिसकी शुरुआत दूर-दराज के यात्रियों को आश्रय देने वाले सराय से हुई थी। पुनर्जागरण काल के दौरान, कुलीन वर्ग ने प्राचीन वस्तुओं का संग्रह करना और उन्हें अपने घरों में प्रदर्शित करना शुरू किया, जिससे प्रारंभिक संग्रहालयों की नींव पड़ी। घरों का विकास गुफाओं से लेकर आज विश्व भर में देखे जा सकने वाले विभिन्न प्रकार के आवासीय स्थानों तक हुआ है।

बीसवीं शताब्दी से पहले, आंतरिक सज्जा का काम माइकल एंजेलो, एडम बंधुओं, एंटोनियो गौडी और विलियम मॉरिस जैसे वास्तुकारों और कारीगरों का था।

इन वास्तुकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और अन्य कारीगरों को कलाकार और शिल्पकार माना जाता था। कपड़े, कालीन और फर्नीचर उत्पादों को डिजाइन और निर्मित करने वाले लोगों को दुकानदार कहा जाता था। दुकानदार और दुकानें आंतरिक सज्जा को पेशे के रूप में नहीं अपनाते थे, बल्कि वे आपूर्तिकर्ता की तरह थे।

एल्सी डी वोल्फ (1865-1950) उन पहले व्यक्तियों में से थीं जिन्होंने आंतरिक सज्जा की कला में व्यावसायिकता की अवधारणा को आगे बढ़ाया। लगभग उनके करियर के दौरान ही आंतरिक सज्जा शब्द का प्रयोग उनके जैसे व्यक्तियों के काम के संदर्भ में किया जाने लगा। उनका जन्म न्यूयॉर्क शहर में हुआ था और वे एक कुलीन परिवार से थीं। डी वोल्फ ने 1904 में, जब वे 39 वर्ष की थीं, एक आंतरिक सज्जाकार के रूप में अपना पेशेवर करियर शुरू किया।

उन्हें सर्वप्रथम 1905 में न्यूयॉर्क शहर के कॉलोनी क्लब के डिजाइन का काम सौंपा गया था। सफेद और हल्के रंगों का उनका प्रयोग विक्टोरियन काल में प्रचलित गहरे रंगों से एक बड़ा बदलाव था। डी वोल्फ के ग्राहकों में हेनरी सी. फ्रिक और ऐनी पियरपोंट मॉर्गन जैसी उल्लेखनीय हस्तियाँ शामिल थीं।

क्योंकि शुरुआती दौर के सज्जाकारों के ग्राहक ज्यादातर धनी होते थे, इसलिए उन्हें आमतौर पर 'सोसाइटी डेकोरेटर' कहा जाता था। डी वोल्फ ने आंतरिक सज्जा के विषय पर लिखी गई शुरुआती पुस्तकों में से एक, 'द हाउस इन गुड टेस्ट' (1913) भी लिखी, जिसमें उन्होंने घरों की सजावट के बारे में अपने दर्शन को समझाया।

डी वोल्फ की सफलता ने अन्य महिलाओं को इंटीरियर डेकोरेशन के पेशे में आने के लिए प्रोत्साहित किया। बीसवीं सदी की शुरुआत में महिलाओं के लिए यह कुछ गिने-चुने स्वीकार्य पेशों में से एक था। उनके लिए औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना कठिन था। इंटीरियर डेकोरेशन के पाठ्यक्रम 1904 तक उपलब्ध नहीं थे। न्यूयॉर्क शहर में स्थित न्यूयॉर्क स्कूल ऑफ एप्लाइड एंड फाइन आर्ट्स (जिसे अब पार्सन्स स्कूल ऑफ डिजाइन के नाम से जाना जाता है) इंटीरियर डिजाइन पाठ्यक्रम शुरू करने वाले पहले संस्थानों में से एक था। जो महिलाएं इन पाठ्यक्रमों का खर्च वहन नहीं कर सकती थीं, वे उस समय उपलब्ध पत्रिकाओं, जैसे हाउस ब्यूटीफुल या हाउस एंड गार्डन से सीखती थीं।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, आर्थिक समृद्धि और आर्थिक विकास अधिक व्यापक हो गया, जिससे आंतरिक सज्जा विशेषज्ञों और पेशेवरों के रोजगार में काफी वृद्धि हुई और उनकी मांग भी बढ़ी। घरेलू साज-सज्जा के सामानों से सजे डिपार्टमेंटल स्टोर फले-फूले

और लोकप्रिय हो गए, क्योंकि महिलाओं के पास अब खरीदारी के लिए अधिक समय था।

ग्रैंड रैपिड्स (मिशिगन) और हाई पॉइंट (उत्तरी कैरोलिना) जैसे स्थानों में फर्नीचर निर्माण उद्योग का विकास हुआ। शुरुआती दौर में इनमें से अधिकांश निर्माता उस समय अमेरिका में लोकप्रिय फर्नीचर के सस्ते प्रतिकृतियां बनाते थे। 1920 के दशक तक, बेहतर गुणवत्ता वाले फर्नीचर का निर्माण होने लगा था; इसी क्रम में, सज्जाकार अपनी शैली और ग्राहकों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्राचीन वस्तुएं खरीदने के लिए यूरोप की यात्रा करने लगे थे।

1920 के दशक में आर्ट डेको शैली ने घरों और कार्यालयों दोनों के आंतरिक सज्जा के माहौल पर गहरा प्रभाव डाला। मेसीज़, वानामेकर्स और मार्शल फील्ड्स जैसे डिपार्टमेंट स्टोरों ने आर्ट डेको शैली को प्रदर्शित करने के लिए दृश्य बनाए। इस तरह के प्रयासों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्ट डेको शैली को लोकप्रिय बनाया। आर्ट डेको ने कार्यालयों और व्यावसायिक भवनों के आंतरिक और बाहरी डिज़ाइन में भी क्रांतिकारी बदलाव लाए। उस समय व्यावसायिक भवनों में आंतरिक सज्जा का काम अधिकतर पुरुषों द्वारा किया जाता था।

डोरोथी ड्रेपर (1889-1969) को व्यावसायिक इंटीरियर डिजाइन में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाली पहली महिला इंटीरियर डेकोरेटर होने का श्रेय दिया जाता है। इसी दौरान, न्यूयॉर्क और संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्य शहरों में इंटीरियर डेकोरेशन के शैक्षणिक पाठ्यक्रम भी उभर रहे थे।

1920 के दशक के उत्तरार्ध में, देश के विभिन्न हिस्सों में कई स्थानीय डेकोरेटर्स क्लब स्थापित किए जा रहे थे। इंटीरियर डेकोरेशन में कॉलेज पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की

बढ़ती संख्या के साथ डिज़ाइन शिक्षा लोकप्रिय हो गई। यह पेशा अधिक औपचारिक होता जा रहा था और इसकी छवि अप्रशिक्षित डेकोरेटर से बदलकर प्रशिक्षित पेशेवर की हो गई।

1930 के दशक की आर्थिक मंदी ने फर्नीचर उद्योग को बुरी तरह प्रभावित किया, जिसका अधिकांश हिस्सा उस समय ग्रैंड रैपिड्स में केंद्रित था। महामंदी का मध्य वर्ग की अमेरिका और यूरोप में निर्मित फर्नीचर उत्पादों को खरीदने की क्षमता पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा।

फर्नीचर बनाने वाली कई इकाइयाँ बंद होने की कगार पर थीं। प्रमुख संग्राहक सज्जाकार मंदी से अप्रभावित रहे, क्योंकि उनके धनी ग्राहक अभी भी सामान खरीद सकते थे। फिर भी, इनमें से अधिकांश सज्जाकार अपने आंतरिक सज्जा परियोजनाओं में अमेरिकी निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने के बजाय यूरोप से सामान खरीद रहे थे।

1930 के दशक से बॉहॉस स्कूल के आधुनिकतावाद आंदोलन का संयुक्त राज्य अमेरिका में इमारतों और आंतरिक सज्जा के डिजाइन पर गहरा प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के औद्योगीकरण ने भी नई निर्माण विधियों को जन्म दिया, जिससे फर्नीचर और डिजाइन शैलियों में बदलाव आया। उदाहरण के लिए, चार्ल्स ईम्स जैसे मोल्डेड प्लाईवुड और मोल्डेड फाइबरग्लास डिजाइनों ने बैठने की व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, वाणिज्यिक डिजाइन पेशे का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया। फ्लोरेंस नोल ने 1940 के दशक में नोल प्लानिंग ग्रुप की स्थापना की। यह डिजाइन कंपनी वाणिज्यिक आंतरिक सज्जा पर केंद्रित थी।

विशाल निगमों का उदय एक कारण था। पर्दे की दीवार निर्माण, लटकती छतें और निर्माण में हुए बदलावों ने कार्यालय भवनों में विशाल, खुले आंतरिक स्थानों को संभव

बनाया, जिससे वास्तुकला और आंतरिक सज्जा के साथ-साथ सज्जाकार और आंतरिक सज्जाकार की भूमिका भी प्रभावित हुई। 1940 और 1950 के दशक में, संबंधित शिक्षा के अधिक अवसरों के कारण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग के सज्जाकारों को बाजार में नौकरी और कमीशन प्राप्त करने के लिए केवल "अच्छी पसंद" होने के बजाय शैक्षिक तैयारी पर निर्भर रहना पड़ता था।

इंटीरियर डिजाइन से संबंधित फर्नीचर और साज-सज्जा उद्योग ने इस पेशे में और भी बदलाव लाने पर मजबूर किया। ग्रैंड रैपिड्स जैसे विनिर्माण केंद्रों में और बाद में शिकागो के मर्चेंडाइज मार्ट जैसे महानगरीय बाजार केंद्रों में आयोजित होने वाले व्यापार मेले, निर्माताओं के लिए सज्जाकारों, डिजाइनरों और अन्य संबंधित व्यापारियों के सामने अपने नए उत्पादों को प्रस्तुत करने और प्रदर्शित करने का एक लोकप्रिय तरीका बन गए।

कार्यस्थल डिजाइन की विचारधारा में बदलाव ने फर्नीचर की नई अवधारणाओं को जन्म दिया, जैसे कि ऑफिस लैंडस्केप की अवधारणा। ऑफिस लैंडस्केप की अवधारणा को सर्वप्रथम 1950 के दशक की शुरुआत में जर्मनी में क्विकबोर्नर टीम फॉर प्लानिंग एंड ऑर्गनाइजेशन द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसे आमतौर पर क्विकबोर्नर टीम के नाम से जाना जाता है।

जर्मनी में प्रचलित कार्यालय डिज़ाइन पद्धति के अनुसार, बिना दीवारों वाले कार्यालय बनाए गए, जिनमें पौधों, किताबों की अलमारियों और फ़ाइल कैबिनेट का उपयोग "स्क्रीन" के रूप में किया गया, जिससे विशाल और खुले स्थान का निर्माण हुआ। कंपनियों द्वारा इस नियोजन दर्शन को पसंद किए जाने और अपनाने के साथ ही, स्थान

नियोजन और प्रकाश व्यवस्था डिज़ाइन के नए विशेषज्ञ और विशेषज्ञ इस पेशे का हिस्सा बन गए।

जैसे-जैसे इंटीरियर डिजाइन और सजावट के पेशे में रुचि बढ़ती गई, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और व्यावसायिक स्कूलों में कार्यक्रमों की संख्या में भी वृद्धि हुई, साथ ही संबंधित शिक्षा में शामिल शिक्षकों की संख्या भी बढ़ी। चूंकि इनमें से अधिकांश शिक्षक अध्यापन को अपना पूर्णकालिक पेशा मानते थे, इसलिए कई लोगों ने इंटीरियर डिजाइन के क्षेत्र में अपना काम सीमित कर लिया।

पेशे के साथ-साथ शैक्षिक लक्ष्यों में हो रही प्रगति से अवगत रहने के लिए एक संगठन की आवश्यकता को देखते हुए, 1963 में इंटीरियर डिजाइन एजुकेटर्स काउंसिल (IDEC) नामक एक संगठन की स्थापना की गई। आज IDEC पेशे से संबंधित एकमात्र शोध पत्रिका, जर्नल ऑफ इंटीरियर डिजाइन एजुकेशन एंड रिसर्च प्रकाशित करता है। 1970 और 1980 के दशक के दौरान इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ इंटीरियर डिजाइनर्स (ISID) और इंस्टीट्यूट ऑफ स्टोर प्लानर्स (ISP) जैसे कई पेशेवर संघों की स्थापना हुई।

प्रौद्योगिकी ने डिजाइनरों को सहयोग करने और कंप्यूटर-एडेड डिजाइन और ड्राफ्टिंग (CAD) को अपने पेशेवर कार्यों में उपयोग करने का अवसर भी प्रदान किया है। और 1990 के दशक के मध्य से, इंटरनेट ने डिजाइनरों के काम करने के तरीके को बदल दिया है, क्योंकि ई-मेल के माध्यम से तीव्र संचार ने वर्ल्ड वाइड वेब (www) पर डिजाइनरों और उनके ग्राहकों के बीच सूचना, डेटा और ग्राफिक्स के आदान-प्रदान को सुगम बना दिया है।

जहां इन सभी चुनौतियों का व्यावसायिक इंटीरियर डिजाइनरों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा था, वहीं आवासीय डिजाइन के क्षेत्र में काम करने वाले डिजाइनरों को भी अपने पेशे में बदलाव देखने को मिल रहे थे। परिवार की बदलती संरचना के कारण परिवार और उसके सदस्यों द्वारा घर के वातावरण के उपयोग के तरीके पर नए सिरे से विचार करना आवश्यक हो गया है। घरों में "हरित" वातावरण जैसी अवधारणाएं महत्वपूर्ण हो गई हैं, क्योंकि हाइड्रोकार्बन से निर्मित उत्पादों की बढ़ती संख्या से निकलने वाली विभिन्न ज्वलनशील गंध और गैसों ने आवासीय ग्राहकों के जीवन को प्रभावित और खतरे में डाल दिया है। विभिन्न डिजाइन शैलियाँ, रंग रुझान और थीम, नई उत्पाद श्रृंखला और विकास, और बड़े आंतरिक स्थान भी आवासीय डिजाइन की अवधारणाओं और दर्शन को चुनौती दे रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी में, आवासीय इंटीरियर डिज़ाइनरों के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बढ़ती उम्र की आबादी के लिए घरों को डिज़ाइन और पुनर्निर्मित करने के लिए उपयुक्त तरीके और कौशल खोजना होगा। बड़ी संख्या में बेबी बूमर्स (1945 और 1964 के बीच जन्मे लोग) तेजी से अपने "वरिष्ठ वर्षों" की ओर बढ़ रहे हैं, ऐसे में उनकी बदलती जीवनशैली को पूरा करने के लिए घरों और सहायक जीवन यापन सुविधाओं की आवश्यकता है।

आज, यह पेशा पिछले एक दशक के सबसे बड़े आर्थिक उछाल के दौर में फल-फूल रहा है। इंटीरियर डिजाइन पेशेवरों और छात्रों को पेशे में लगातार बदलावों का सामना करना पड़ रहा है। कानूनी बाधाओं, लाइसेंस संबंधी मुद्दों, शैक्षिक और योग्यता संबंधी चिंताओं, जनमत और बेहतर व्यावसायिक प्रथाओं से बंधे रहते हुए परियोजनाओं पर

काम करने के कारण, इंटीरियर डिजाइन पेशा समय के साथ बढ़ता और विकसित होता रहेगा।

इंटीरियर डिजाइन शिक्षा तैयारी योजना

इंटीरियर डिजाइन में औपचारिक शैक्षिक तैयारी योजना की शुरुआत 1904 में पार्सन्स स्कूल ऑफ डिजाइन में इंटीरियर डिजाइन से संबंधित विशिष्ट कार्यक्रमों की पेशकश के साथ हुई। इंटीरियर डिजाइन के क्षेत्र में अनौपचारिक शिक्षा केवल गृह अर्थशास्त्र या कला में पेश किए जाने वाले कुछ पाठ्यक्रमों के माध्यम से ही उपलब्ध थी, लेकिन बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से पहले वास्तुकला कार्यक्रम मौजूद थे और इनमें इंटीरियर डेकोरेशन की बहुत कम कक्षाएं शामिल थीं।

बीसवीं शताब्दी में पूरे देश में इंटीरियर डिजाइन के शैक्षणिक कार्यक्रमों का विकास जारी रहा। कई वर्षों तक इंटीरियर डिजाइन के पाठ्यक्रम की विविध संरचना के कारण, परिणामी डिजाइनर इस पेशे के लिए अच्छी तरह से तैयार नहीं थे। लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद, इंटीरियर डिजाइन विषय के लिए एक मानक शिक्षा संहिता बनाने के प्रयासों का फल मिला, जिसके परिणामस्वरूप कुशल और विशेषज्ञ डेकोरेटरों की संख्या में वृद्धि हुई और इस प्रकार यह उद्योग फला-फूला। इंटीरियर डिजाइन की शैक्षणिक शिक्षा की मूल नींव ललित कला, गृह अर्थशास्त्र और वास्तुकला के क्षेत्रों में निहित है। विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, सामुदायिक कॉलेजों और व्यावसायिक स्कूलों में इंटीरियर डिजाइन पाठ्यक्रम आमतौर पर इन तीन मुख्य क्षेत्रों में से किसी एक के अंतर्गत आते हैं। कार्यक्रम दो साल से लेकर चार साल तक के होते हैं। कई मामलों में, छात्र इन दो वर्षीय कार्यक्रमों में से किसी एक से शुरुआत करते हैं और बाद में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए चार वर्षीय कार्यक्रम में स्थानांतरित हो जाते हैं।

चार वर्षीय कार्यक्रमों के स्नातक आमतौर पर बड़ी इंटीरियर डिजाइन फर्मों और वास्तुकला कंपनियों में शुरुआती नौकरी और रोजगार प्राप्त करते हैं।

FIDER (फाउंडेशन फॉर इंटीरियर डिजाइन एजुकेशन रिसर्च) एक गैर-लाभकारी संगठन है जिसे काउंसिल ऑफ हायर एजुकेशन एक्रेडिटेशन द्वारा मान्यता प्राप्त है, जिसकी स्थापना 1970 में हुई थी और इसे अमेरिका में इंटीरियर डिजाइन की उच्चतर शिक्षा की गुणवत्ता पर एक विश्वसनीय प्राधिकरण माना जाता है।

कुशल पेशेवर इंटीरियर डिजाइनरों के लिए आवश्यक सामान्य ज्ञान और कौशल की परिभाषा को FIDER द्वारा निर्धारित मानकों से गुजरना होगा; ये मानक सावधानीपूर्वक निर्धारित किए गए हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इंटीरियर डिजाइनरों की गुणवत्ता बाजार की चुनौतियों का सामना करने के लिए उच्च स्तर की बनी रहे।

FIDER व्यावसायिक मानक:

पाठ्यक्रम संरचना: पाठ्यक्रम संरचना छात्रों के उन्नत स्तर के सीखने के अनुभव को सुगम बनाने के लिए तैयार की गई है। डिज़ाइन के मूल सिद्धांत: यह सुनिश्चित करना कि प्रतिभागियों को डिज़ाइन, कला, मानव व्यवहार और इतिहास से संबंधित विषयों की अच्छी समझ हो। आंतरिक डिज़ाइन: प्रतिभागी आंतरिक डिज़ाइन से संबंधित कौशल, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों के ज्ञान को पूरी तरह से समझें और उनका उपयोग करें। संचार: छात्रों में अपने विचारों और अवधारणाओं को संप्रेषित करने की क्षमता हो। भवन प्रणालियाँ और आंतरिक सज्जा के लिए सामग्री: छात्र भवनों के नियमों और प्रणालियों को समझें और निर्माण या नवीनीकरण में उपयुक्त सामग्रियों के उपयोग का सही ज्ञान और समझ रखें। नियम: छात्रों को निवासियों की सुरक्षा और स्वास्थ्य से संबंधित नियमों, विनियमों और कानूनों का ज्ञान हो। व्यवसाय और पेशेवर अभ्यास:

छात्रों को व्यवसाय और पेशेवर अभ्यास की ठोस समझ हो। संकाय: यह सुनिश्चित करना कि संकाय और अन्य प्रशिक्षक संबंधित पाठ्यक्रम मॉड्यूल पढ़ाने के लिए अच्छी तरह से योग्य हों। प्रशासन: यह सुनिश्चित करना कि कार्यक्रम का प्रशासन सुव्यवस्थित हो और उसे सहयोग प्रदान करे। मूल्यांकन: विस्तृत और व्यवस्थित मूल्यांकन विधि कार्यक्रम की दीर्घकालिक सार्थकता में योगदान देती है।

प्रत्येक इंटीरियर डिजाइनर में व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय गुण होते हैं, लेकिन FIDER के अनुसार उन सभी में निम्नलिखित क्षमताएं समान रूप से होनी चाहिए।
डिजाइन के तत्वों और संरचना के सिद्धांतों की वैश्विक बुनियादी समझ; डिजाइन, रंग और उनके बीच संबंध तथा स्थानिक संरचनाओं के सिद्धांतों की समझ; मानवमिति, एर्गोनॉमिक्स और अन्य मानवीय कारकों के आधार पर समस्या-समाधान डिजाइन प्रक्रिया; विभिन्न वित्तीय श्रेणियों के लोगों के लिए स्थान नियोजन, फर्नीचर लेआउट नियोजन और शैलियों की समझ; सौंदर्यपूर्ण रूप से संतुलित निर्मित वातावरण के लिए भवन निर्माण सामग्री, बनावट, वस्त्र और प्रकाश व्यवस्था का ज्ञान; सामग्री से लेकर सॉफ्ट फर्निशिंग तक शामिल तकनीकी कारकों की समझ; भवन निर्माण कानूनों, विनियमों और सुरक्षा मानकों का ज्ञान। सशक्त संचार कौशल, लिखित, मौखिक और दृश्य डिजाइन प्रस्तुति कौशल; इंटीरियर डिजाइन व्यवसाय के इतिहास, विधियों और नैतिकता की समझ; डिजाइन अवधारणाओं को विकसित करने के लिए अनुसंधान और डेटा विश्लेषण का ज्ञान।
ये पेशेवर इंटीरियर डिजाइन प्रथाओं के लिए निर्धारित बुनियादी दिशानिर्देश हैं।

इंटीरियर डिजाइन प्रैक्टिस की स्थापना

उद्यमी

उद्यमी वह व्यक्ति होता है जो अपना खुद का व्यवसाय शुरू करता है और उसका प्रबंधन करता है। उद्यमी अकेले काम कर सकता है या चाहे तो कर्मचारी भी रख सकता है। उद्यमी रचनात्मक रूप से योजना बनाते हैं और उस व्यवसाय को संभालते हैं जिसमें उन्हें सफलता की उम्मीद होती है। वे आम तौर पर किसी सेवा या उत्पाद को बेचने के लिए ऐसे विचार लेकर आते हैं जो उनके पारंपरिक प्रतिस्पर्धियों से अनूठे और भिन्न होते हैं।

उद्यमियों के पीछे की प्रेरक शक्ति उनके निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति उनका जुनून है; वे न केवल वित्तीय लाभ अर्जित करने के लिए बल्कि अन्य लोगों के लिए रोजगार के द्वार खोलने के लिए भी अपना बहुत सारा समय और ऊर्जा बुद्धिमानी से लगाते हैं।

विभिन्न डिजाइन अनुशासन के व्यवसाय मालिकों में एक सामान्य विशेषता यह है कि उन्होंने शिक्षा के माध्यम से तकनीकी ज्ञान और विशेषज्ञता हासिल की है और दूसरी विशेषता बाजार में पेशेवर अभ्यास के माध्यम से प्राप्त अनुभव है।

अधिकांश डिज़ाइनर प्रतिष्ठित डिज़ाइन फर्मों को अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं और अनुभव प्राप्त करते हुए व्यावसायिक दबावों को संभालने और प्रबंधित करने की क्षमता विकसित करते हैं। वहीं, कुछ अन्य डिज़ाइनर अपना खुद का व्यवसाय स्थापित करना पसंद करते हैं। हालांकि मालिक की कुर्सी पर बैठना या कंपनी के स्वामी के रूप में काम करना आनंददायक होता है, लेकिन साथ ही यह एक कठिन कार्य भी है क्योंकि इसमें उन्हें काफी मेहनत करनी पड़ती है।

हर व्यवसाय के अपने फायदे और नुकसान होते हैं, और खुद का व्यवसाय शुरू करने से पहले इन दोनों बातों पर विचार करना आवश्यक है। व्यवसाय के मालिक को मिलने वाले कुछ फायदे इस प्रकार हैं:

अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता

लक्ष्य और उद्देश्य की प्राप्ति पर मिलने वाली संतुष्टि की भावना

अपनी पसंद के डिजाइन कार्य का आनंद लेने और उसे करने का अवसर।

आपकी कंपनी के अच्छा प्रदर्शन करने पर उच्च आय और लाभ अर्जित करने की संभावना।

जब तक व्यवसाय चलता रहेगा, तब तक नौकरी की सुरक्षा बनी रहेगी।

अपनी खुद की डिजाइन शैली में काम करने की स्वतंत्रता

ग्राहकों और विभिन्न विक्रेताओं के साथ सीधे संपर्क विकसित करना।

उद्यमियों की कड़ी मेहनत और केंद्रित प्रयासों के फल ऊपर बताए गए सभी लाभों के साथ आते हैं। निर्णय लेने और उन्हें योजना के अनुसार सफल होते देखना बेहद सुखद होता है। लेकिन यह भी न भूलें कि व्यवसाय एक जोखिम भरा और जटिल कार्य है, जिसे प्रबंधित करना मुश्किल होता है। व्यवसाय के कुछ नुकसान इस प्रकार हैं:

व्यवसाय और व्यक्तिगत संपत्तियों दोनों के बड़े वित्तीय जोखिमों की संभावना है।

कानूनी दायित्वों के तहत, व्यक्ति अपने कार्यों और निर्णयों के लिए स्वयं जिम्मेदार हो जाता है।

उनके कर्मचारी भी

एक बॉस के रूप में, लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने पड़ते हैं और लंबे समय तक काम करना पड़ता है।

कंपनी की सभी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के कारण जीवन अधिक तनावपूर्ण हो जाता है।

डिजाइनर के रूप में काम करने की बजाय कंपनी के प्रबंधन पर अधिक ध्यान देना।

ग्राहक की आवश्यकताओं और स्वयं ग्राहक को संतुष्ट करना होता है, जो कभी-कभी मुश्किल होता है।

नुकसानों का जिक्र करने का उद्देश्य किसी को हतोत्साहित करना नहीं है, बल्कि यह बताना है कि एक पेशेवर के रूप में जीवन कठिन होता है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यवसाय विकसित करने और उद्यमी बनने की योजना बनाते समय व्यक्ति को व्यवसाय के सभी पहलुओं से अवगत होना चाहिए।

एक नई डिजाइन प्रैक्टिस की शुरुआत

एक नए डिजाइन व्यवसाय की नींव रखने का निर्णय सावधानीपूर्वक योजना बनाकर ही लिया जाना चाहिए, जिसकी शुरुआत व्यक्तिगत प्रेरणा के स्तर की गंभीरता से होती है और फिर वित्तीय और कानूनी जोखिमों पर विचार किया जाता है। कई इंटीरियर डिजाइनर अक्सर नए व्यवसाय की नींव के लिए आवश्यक सभी छोटी-छोटी बारीकियों और सूक्ष्मताओं पर सावधानीपूर्वक विचार किए बिना ही डिजाइन व्यवसाय में उतर जाते हैं।

अपने इंटीरियर डिजाइन व्यवसाय की योजना बनाना शुरू करने से पहले सबसे महत्वपूर्ण चरण यह सुनिश्चित करना है कि आपका लक्ष्य क्या है, क्योंकि कई इंटीरियर डिजाइनर घर से काम शुरू करते हैं और पारिवारिक दिनचर्या के कामों में व्यस्त रहने के कारण उनका ध्यान भटक जाता है और वे अपना ध्यान खो बैठते हैं।

किसी नए संभावित व्यवसाय का मूल्यांकन करने के लिए, सही सोच और लक्ष्य-केंद्रित दृष्टिकोण ही एकमात्र पहलू नहीं है। दूसरा महत्वपूर्ण पहलू वित्तीय जोखिम है, जो व्यवसाय योजना के आधार पर कई बार हजारों डॉलर तक पहुंच सकता है। किसी भी नए व्यवसाय को स्थापित होने और अंततः लाभ अर्जित करने में समय लगता है, इसलिए सावधानीपूर्वक व्यवसाय योजना बनाते समय सभी वित्तीय पहलुओं का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

उद्यमियों को सलाह दी जाती है कि वे छोटे स्तर का व्यवसाय शुरू करने से पहले एक वर्ष के रहने-सहने के खर्च के बराबर राशि अलग रख लें, क्योंकि किसी व्यवसाय को उद्यमी को वेतन देने में सक्षम होने में लंबा समय लग सकता है। अब जब उद्यमी ने अपनी प्रेरणाओं और इसमें शामिल वित्तीय जोखिमों का मूल्यांकन कर लिया है, तो अगला चरण व्यवसाय को परिभाषित करना है।

अब सबसे महत्वपूर्ण चुनौती व्यवसाय के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना और यह बताना है कि यह सेवाओं या भौतिक उत्पादों को प्रदान करने में अन्य प्रतिस्पर्धियों से किस प्रकार भिन्न है। अपने व्यवसाय के स्पष्ट लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के लिए आपको एक सशक्त और सटीक मिशन स्टेटमेंट बनाना होगा।

मिशन स्टेटमेंट एक ऐसा कथन है जो व्यवसाय की दिशा और प्रकृति का संक्षिप्त विवरण देता है। सामान्यतः मिशन स्टेटमेंट में आपके व्यवसाय का विवरण, आपके ग्राहकों का विवरण और कंपनी द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं या उत्पादों का विवरण शामिल होता है। मिशन स्टेटमेंट दो या तीन वाक्यों का हो सकता है जो संबंधित जानकारी प्रदान करते हैं।

व्यवसाय को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने से उद्यमी को विपणन, परिचालन, प्रबंधन और कर्मचारियों की भर्ती संबंधी निर्णय लेने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, मिशन स्टेटमेंट की स्पष्टता और व्यवसाय की उचित परिभाषा से सही प्रकार के कर्मचारियों के चयन के मानदंड तय करना, वित्तीय योजना बनाना और सेवाओं या उत्पादों के अनूठे विपणन के लिए तकनीक विकसित करना आसान हो जाएगा।

व्यापार योजना

बिजनेस प्लान एक लिखित दस्तावेज है जो यह सुनिश्चित करता है कि व्यवसाय शुरू करने से पहले हर छोटी-बड़ी बात का ध्यान रखा जाए। इंटीरियर डिजाइन कंपनियां जो संबंधित उत्पाद बेचना चाहती हैं, उन्हें निवेश की आवश्यकता हो सकती है, जिसे वे बैंक से प्राप्त कर सकती हैं या अपने स्वयं के खर्चों से जुटा सकती हैं। वहीं, सेवाएं बेचने वाली इंटीरियर डिजाइन कंपनियों को व्यवसाय शुरू करने के लिए कम धन की आवश्यकता हो सकती है। एक सुनियोजित बिजनेस प्लान इन दोनों ही स्थितियों का सफलतापूर्वक समाधान करता है।

बिजनेस प्लान के विषय पर पहले से ही कई किताबें लिखी जा चुकी हैं, लेकिन वास्तव में एक बिजनेस प्लान उद्यमी की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जिसमें वह अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने में मदद करने वाले सभी संभावित बिंदुओं को शामिल करने के बारे में अपने विचार व्यक्त करता है। हालांकि, यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी बिजनेस प्लान व्यवसाय की सफलता की गारंटी नहीं है, बल्कि यह योजना केवल क्रियान्वयन के दौरान आने वाले सभी संभावित खतरों को ध्यान में रखकर जोखिम को न्यूनतम करने का काम करती है।

व्यापार योजना के लिए अनुसंधान

सभी प्रकार की व्यावसायिक योजनाओं का एक अनिवार्य पहलू अनुसंधान है। व्यावसायिक योजना लिखने से पहले गहन अनुसंधान में समय व्यतीत करना चाहिए। कौशल आवश्यकताओं, बाजार, परिचालन और प्रबंधन से लेकर मूल्य निर्धारण और वित्तीय नियोजन तक विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान करना महत्वपूर्ण है।

सफल शोध करने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन किया जा सकता है:

इंटीरियर डिजाइन व्यवसाय के मालिक होने के नाते व्यक्तिगत क्षमताओं और रुचियों को समझना और उनका विश्लेषण करना।

व्यवसाय के उद्देश्य, उसके मिशन और लक्षित दर्शकों पर सावधानीपूर्वक विचार करना।

एक सुरक्षित वित्तीय आय योजना विकसित करना ताकि सभी प्रकार के खर्चों को पूरा किया जा सके, क्योंकि व्यवसाय अपने प्रारंभिक चरण में होगा और संभवतः खर्चों के लिए आवश्यक राशि उत्पन्न नहीं कर पाएगा।

किसी कर्मचारी में अपेक्षित क्षमताओं की योजना बनाना।

संभावित लक्षित दर्शकों को संबोधित करने के लिए एक व्यापक व्यावसायिक विपणन योजना का संचालन करें।

यह निर्धारित करें कि व्यवसाय योजना एकल स्वामित्व पर आधारित है या साझेदारी पर।

कानूनी दस्तावेजों और कर दायित्वों पर गहन शोध।

व्यवसाय स्थापना के पहले वर्ष में कितनी पूंजी की आवश्यकता होगी, इसका सावधानीपूर्वक हिसाब लगाएं।

विस्तृत वित्तीय योजना, आय अनुमान, बैलेंस शीट और नकदी प्रवाह पूर्वानुमान तैयार करें।

कर्मचारी आवश्यकताओं से लेकर खरीद प्रक्रियाओं तक, शोध आधारित संगठनात्मक योजना विकसित करें।

व्यवसाय योजना के अनुसंधान और विकास के दौरान एक उद्यमी के लिए सबसे महत्वपूर्ण विचारणीय बिंदु व्यवसाय की वित्तीय आवश्यकताओं और राजस्व अपेक्षाओं का पता लगाना है। चाहे व्यवसाय घर से शुरू हो या किसी व्यावसायिक स्थान से, इंटीरियर डिजाइन व्यवसाय की शुरुआत में वित्तीय आवश्यकताएं लगभग समान ही होंगी। एक प्रकार के प्रारंभिक व्यय वे होते हैं जो एक बार के होते हैं, जैसे कार्यालय के लिए उपकरण और फर्नीचर खरीदना, उपयोगिता बिल, कानूनी शुल्क, विज्ञापन जैसे प्रारंभिक प्रचार सामग्री और बिक्री योग्य सामग्री। अन्य प्रकार के प्रारंभिक व्यय वे होते हैं जो नियमित रूप से होते हैं, जैसे स्टेशनरी, कार्यालय सामग्री, टेलीफोन और फैक्स शुल्क, इंटरनेट और प्रचार गतिविधियां। व्ययों का तीसरा वर्ग वे हैं जो नियमित होते हैं लेकिन व्यवसाय के प्रारंभिक चरणों में अनिवार्य रूप से आवश्यक नहीं होते हैं।

व्यवसाय योजना को लिखित रूप में तैयार करना

एक बार शोध पूरा हो जाने के बाद, व्यवसाय योजना लिखने का काम शुरू किया जा सकता है। अधिकतर मामलों में, पहले कंपनी का संक्षिप्त परिचय देना चाहिए, और उसके बाद वित्तीय सामग्री। निम्नलिखित एक व्यवसाय योजना का सुझाव हो सकता है।

व्यवसाय का संक्षिप्त विवरण (व्यवसाय के स्वामी, व्यवसाय के निदेशक के नाम, व्यवसाय का स्थान, कानूनी संरचना, व्यवसाय द्वारा दी जाने वाली सेवाओं का विवरण)

बाजार अनुसंधान (समुदाय में दी जाने वाली सेवाओं की आवश्यकता का विवरण, संभावित ग्राहकों का मूल्यांकन, प्रतिस्पर्धा का विवरण, समुदाय में समान सेवाओं की मौजूदा बिक्री का मूल्यांकन और अनुमानित व्यावसायिक परिणामों को प्रभावित करने वाले किसी भी रुझान का विश्लेषण)

बाजार योजना (बाजार के उस हिस्से का विस्तृत विवरण जिसे व्यवसाय लक्षित करेगा, संभावित ग्राहकों को व्यवसाय द्वारा दी जाने वाली सेवाएं, उत्पाद या सेवाओं की मूल्य सीमा का निर्धारण, और लक्षित दर्शकों तक व्यवसाय को पहुंचाने वाले विज्ञापन और सोशल मीडिया अभियानों की विस्तृत योजना)

परिचालन योजना (व्यवसाय की संगठनात्मक संरचना, व्यक्तियों का विवरण और उनकी भर्ती प्रक्रिया, व्यवसाय के रिकॉर्ड को कौन और कैसे संभालेगा, विक्रेताओं के साथ परियोजना संबंधी कार्य और खरीद प्रबंधन योजना का विस्तृत विवरण)

वित्तीय जानकारी (परियोजना के लिए आवश्यक प्रारंभिक पूंजी और व्यवसाय के सुचारू संचालन के लिए पहले वर्ष के अनुमान, लाभ-हानि बिंदुओं से परे मासिक अतिरिक्त राजस्व का अनुमान, महीने-दर-महीने के अनुमानित लाभ-हानि विवरणों की तैयारी, मूल्यह्रास, पट्टे और इन्वेंट्री से संबंधित उपयोग की जाने वाली लेखांकन पद्धतियों पर निर्णय, और अनुमान कैसे लगाए गए, इसका विवरण)।

हमेशा याद रखें कि व्यवसाय शुरू करने के लिए गहन विचार-विमर्श और समय की आवश्यकता होती है, अन्यथा असफलता मिल सकती है। एक ठोस और सुविचारित व्यवसाय योजना असफलता की संभावनाओं को कम करने की कुंजी है, इसलिए एक उद्यमी को व्यवसाय योजना पर उचित समय और ऊर्जा खर्च करनी चाहिए।

सारांश

इंटीरियर डिजाइन का व्यवसाय शुरू करने के लिए आवश्यक कौशल या अनुभव होना ही काफी नहीं है। प्रस्तावित व्यवसाय के स्पष्ट लक्ष्य और नीतियां निर्धारित करना, साथ ही उसमें शामिल सभी व्यक्तियों की क्षमताओं का विश्लेषण और मूल्यांकन करना भी महत्वपूर्ण है। शोध और विश्लेषण के माध्यम से व्यवसाय की मुख्य विशिष्टताओं, दिशा और भविष्य की संभावनाओं के बारे में सर्वोत्तम निर्णय लिए जा सकते हैं। यदि उद्यमी एक सुविचारित व्यवसाय योजना विकसित करने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं कर पाता है, तो वह व्यवसाय का स्वामित्व या संचालन करने के लिए तैयार नहीं हो सकता है। व्यवसाय योजना निश्चित रूप से मालिक/प्रबंधक के करियर में किए जाने वाले "डिजाइन" कार्य का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

आंतरिक डिजाइन बनाम आंतरिक सजावट

इंटीरियर डिजाइन और इंटीरियर डेकोरेशन को अक्सर एक ही समझ लिया जाता है। हालांकि, इन दोनों में कई समानताएं हैं। वास्तव में, इतनी समानताएं हैं कि इनके बीच अंतर की रेखा को लेकर मतभेद हैं। लेकिन इंटीरियर डिजाइनर और इंटीरियर डेकोरेटर के बीच कई अंतर हैं, इसलिए यहां इन दोनों की संक्षिप्त तुलना दी गई है, जिससे आपको इनके बीच का अंतर समझने में मदद मिलेगी।

इंटीरियर डिजाइनर क्या होता है?

इंटीरियर डिजाइन एक ऐसा पेशा है जिसके लिए विशेष शिक्षा और औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इस काम में आमतौर पर रंग और कपड़े का अध्ययन, कंप्यूटर-एडेड डिजाइन (CAD) प्रशिक्षण, ड्राइंग, स्पेस प्लानिंग, फर्नीचर डिजाइन, वास्तुकला, कला और संस्कृति का इतिहास, लाइटिंग डिजाइन आदि शामिल होते हैं। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, डिजाइनर अक्सर अपनी कंपनी शुरू

करने से पहले किसी पंजीकृत और प्रतिष्ठित इंटीरियर डिजाइनर के साथ काम करते हैं।

इंटीरियर डिजाइनर क्या करते हैं?

इंटीरियर डिजाइनर आमतौर पर आर्किटेक्ट और ठेकेदारों के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि ग्राहक द्वारा परिकल्पित रूप को प्राप्त करने में मदद मिल सके। यह परियोजना एक आवासीय घर, एक कार्यालय, एक होटल या किसी अन्य आंतरिक स्थान का डिजाइन हो सकती है।

इंटीरियर डेकोरेटर क्या होता है?

इंटीरियर डेकोरेटरों को औपचारिक प्रशिक्षण या शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वे मुख्य रूप से किसी स्थान की सुंदरता पर ध्यान केंद्रित करते हैं। डेकोरेटर आमतौर पर नवीनीकरण या संरचनात्मक योजना में भाग नहीं लेते हैं। वे नवीनीकरण या योजना के बाद आते हैं और केवल स्थान की बाहरी दिखावट पर ध्यान देते हैं।

इंटीरियर डेकोरेटर क्या करते हैं?

डेकोरेटर किसी भी कमरे को नया रूप देने में माहिर होते हैं। वे ग्राहकों को सजावट की शैली तय करने, रंग योजना चुनने, किसी खास शैली का फर्नीचर खरीदने और सहायक उपकरण चुनने में मदद कर सकते हैं, जिससे अंततः वह स्थान जीवंत हो उठता है।

इंटीरियर डेकोरेटर किसके साथ काम करते हैं?

सजावट करने वाले आमतौर पर किसी ठेकेदार या वास्तुकार के साथ काम नहीं करते हैं क्योंकि उन्हें योजना और संरचनात्मक कार्य पूरा होने के बाद ही काम पर रखा जाता

है। इसके बजाय वे फर्नीचर निर्माताओं, असबाबवालों और अन्य उद्योग पेशेवरों के साथ काम करते हैं।

करियर

इंटीरियर डिजाइनरों के लिए करियर विकल्प: आवासीय इंटीरियर डिजाइनर, वाणिज्यिक इंटीरियर डिजाइनर,

इंटीरियर डिजाइन के क्षेत्र में काम करने के कई तरीके हैं और साथ ही ऐसे कई तरीके भी हैं जिनसे कोई व्यक्ति अपनी प्रतिभा और रुचियों के अनुरूप सही मार्ग खोज सकता है।

पिछले 40-50 वर्षों में व्यावसायिक इंटीरियर डिजाइन का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। होटल, रेस्तरां, चिकित्सा कार्यालय और हर प्रकार के कार्यालयों जैसी सार्वजनिक इमारतों का डिजाइन, इंटीरियर डिजाइन के पेशे में एक और करियर विकल्प के रूप में मान्यता प्राप्त और लोकप्रिय हो गया है।

वाणिज्यिक इंटीरियर डिजाइन में, स्थान नियोजन, लेआउट फर्नीचर योजना बनाना और फर्नीचर उत्पादों और सामग्रियों का चयन करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि आवासीय इंटीरियर डिजाइन में। इंटीरियर डिजाइनर के लिए करियर के कई विकल्प मौजूद हैं जो आवासीय या वाणिज्यिक इंटीरियर डिजाइन से कहीं आगे तक फैले हुए हैं।

नए कर्मचारी को एक छोटी कंपनी में विभिन्न प्रकार की परियोजनाओं पर काम करने और विविध अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। छोटी कंपनियों में योगदान की अपेक्षा की जाती है, इसलिए नए कर्मचारी से अनुभवी डिजाइनरों की सहायता करने की

उच्च उम्मीदें होंगी। एक बड़ी कंपनी में, युवा डिजाइनर का जिम्मेदारियों के स्तर में थोड़ा धीरे-धीरे आगे बढ़ना असामान्य नहीं है।

किसी विशेष प्रकार के डिज़ाइन कार्य में रुचि निश्चित रूप से करियर विकल्पों को प्रभावित करती है। पिछली नौकरी के अनुभव और अन्य रुचियां आपको किसी विशेष विशेषज्ञता की ओर ले जा सकती हैं। अपनी विशेषज्ञता और रुचियों को समझना आपको यह तय करने में मदद करेगा कि इंटीरियर डिज़ाइन के किस क्षेत्र में आप उत्कृष्टता प्राप्त करना चाहते हैं।

इंटीरियर डिजाइनर के लिए सामान्य रोजगार विकल्पों में निम्नलिखित शामिल हैं:

आवासीय आंतरिक डिजाइन

वाणिज्यिक आंतरिक डिजाइन

आवासीय खुदरा फर्नीचर स्टोर

ऑफिस फर्नीचर विक्रेता

वास्तु कार्यालय

स्वतंत्र डिजाइन फर्म

फर्नीचर और इंटीरियर फिट आउट निर्माता

औद्योगिक और कॉर्पोरेट इंटीरियर डिजाइनर

सुविधा योजनाकार

शिक्षक / प्रशिक्षक

वैकल्पिक कैरियर विकल्प

सीएडी विशेषज्ञ

पेशेवर रेंडरर्स

मॉडल निर्माता

विक्रय प्रतिनिधि

अनुबंध सलाहकार विशेषज्ञ

वास्तुकला और आंतरिक सज्जा के फोटोग्राफर

उत्पाद डिज़ाइनर

टेपेस्ट्री और सॉफ्ट फर्निशिंग सलाहकार

विनिर्देश लेखक और साइट विश्लेषण विशेषज्ञ

प्रोजेक्ट मैनेजर

इंटीरियर डिजाइन व्यवसाय योजना सलाहकार

अनुबंध निष्पादन पर्यवेक्षक

गुणवत्ता नियंत्रक

स्थापना पर्यवेक्षक

विपणन विशेषज्ञ

मर्चेंडाइजिंग और प्रदर्शनी डिजाइन

इंटीरियर डिजाइन पत्रकार

सारांश

इंटीरियर डिजाइन पेशे का एक दिलचस्प पहलू यह है कि इसमें व्यक्ति कई अलग-अलग तरीकों से काम कर सकता है। कुछ क्षेत्रों में स्नातक स्तर या सामान्य इंटीरियर डिजाइन डिग्री के बाद प्रशिक्षण और अनुभव की आवश्यकता होती है, जबकि कई

क्षेत्रों में प्रशिक्षित इंटीरियर डिजाइनर को उस क्षेत्र में कार्य अनुभव के आधार पर पद मिल सकते हैं।

भाग 02

डिजाइन अवधारणाएं और नियम

परिचय

क्या डिज़ाइन आपको उत्साहित, रोमांचित और आकर्षित करता है? क्या आप अपने घर को खुद सजाना चाहते हैं और यह सीखना चाहते हैं कि इंटीरियर डिज़ाइनर कैसे अवधारणाएँ विकसित करते हैं? तो यह पुस्तक आपकी मदद करेगी और आपको यह समझने में मार्गदर्शन करेगी कि इंटीरियर डिज़ाइन परियोजना को कैसे संभाला जाता है और एक पेशेवर की तरह परियोजना की किन आवश्यकताओं पर विचार किया जाना चाहिए।

यह किताब आपको घर की मरम्मत खुद से शुरू करने के सभी चरणों के बारे में बताएगी। ज़रा सोचिए, अपने घर को अपनी कल्पना के अनुसार सजाना कितना अद्भुत अनुभव होगा! इस गाइड को पढ़िए और सजावट और इंटीरियर डिज़ाइन की पेशेवर दुनिया की विस्तृत जानकारी प्राप्त कीजिए।

तो इस गाइड में आगे बढ़ने से पहले आपको सबसे पहले क्या जानना चाहिए?

हर चीज की शुरुआत उस गतिविधि में आपकी रुचि के स्तर से होती है, दूसरे शब्दों में कहें तो, किसी को भी अपनी पसंद की चीज में प्रदर्शन करने और आगे बढ़ने का जुनून

होना चाहिए, आपके मामले में, निश्चित रूप से, यह सब आपके घर को सजाने और इंटीरियर डिजाइन का अभ्यास करने के बारे में है।

रचनात्मक क्षमता और उसका साकार रूप देना दूसरी महत्वपूर्ण चीज है जिसे विकसित करने की आवश्यकता है। विभिन्न डिजाइन अनुप्रयोगों और उपकरणों के माध्यम से उस रचनात्मक प्रतिभा को उत्पादों या आसपास के वातावरण में कुशलतापूर्वक प्रकट करना आवश्यक है।

घर के नवीनीकरण और इंटीरियर डिजाइन के लिए कल्पना किए गए विचारों को साकार करने में डिजाइन और फर्नीचर के इतिहास की अच्छी जानकारी और समझ होना फायदेमंद होगा। डिजाइन और फर्नीचर के इतिहास की बुनियादी बातों से संबंधित किताबें पढ़ना सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए अनिवार्य हो जाता है। फर्नीचर के इतिहास और शैलियों को जानने से आप इतिहास के विभिन्न कालों में प्रयुक्त शैलियों की विशाल विविधता में से चुनाव कर सकते हैं। अपने फर्नीचर के लिए उपयुक्त सामग्री चुनने के लिए हमेशा एक बड़ा और विविध संदर्भ पोर्टफोलियो रखना अच्छा विचार है।

आंतरिक सज्जा और सजावट के क्षेत्र में दृश्य सौंदर्यशास्त्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रंग संयोजन, बनावट, वस्त्र, दीवार की साज-सज्जा और फर्नीचर शैलियों के चयन से लेकर स्थान की उचित योजना तक, दृश्य सौंदर्यपूर्ण डिजाइन के कुछ महत्वपूर्ण घटक हैं।

रेखाचित्र बनाने की कला, कल्पना करने की क्षमता और त्रि-आयामी स्थानों में सोचने की क्षमता भी अभ्यास के माध्यम से सीखने और विकसित करने योग्य कौशल हैं।

रेखाचित्र बनाना सीखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ठेकेदारों और बिल्डरों को यह समझने में आसानी होती है कि आप उनसे वास्तव में क्या बनवाना चाहते हैं।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि घर की सजावट, नवीनीकरण और इंटीरियर डिजाइन के लक्ष्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए किन चरणों का क्रमवार पालन करना आवश्यक है। अवधारणा निर्माण के पहले चरण से लेकर अपने विचारों को कुशलतापूर्वक साकार करने के अंतिम चरण तक।

यह पुस्तक आपको चरण दर चरण इंटीरियर डिजाइन और इंटीरियर डेकोरेशन को समझने में मदद करेगी, ताकि आप अपने घर को बेहतर तरीके से सजाने के लिए अच्छी तरह से तैयार हो सकें।

आंतरिक सज्जा और इंटीरियर डिजाइन को परिभाषित करना:

आंतरिक सज्जा को आम तौर पर किसी स्थान को सजाने-संवारने के रूप में जाना जाता है। सजावट वास्तव में किसी स्थान की सुंदरता को बढ़ाने के लिए की जाती है, जिसमें पेंट से लेकर फर्नीचर, दीवार कला से लेकर गलीचे और कालीन, सजावटी वस्तुओं से लेकर मुलायम साज-सामान तक, विभिन्न प्रकार के डिजाइन तत्व शामिल होते हैं। वहीं, आंतरिक डिजाइन किसी स्थान में बदलाव करने से संबंधित है, जैसे कि कृत्रिम दीवारें या स्तंभ जोड़ना या किसी स्थान की दीवारों को इस तरह से स्थानांतरित करना जिससे वह अधिक कुशलता से और उद्देश्यपूर्ण ढंग से उपयोग किया जा सके। आंतरिक स्थान की बारीकियों पर काम करना भी आंतरिक डिजाइन की श्रेणी में आता है।

घर सजाते समय छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना बेहद जरूरी हो जाता है। बेशक, रंग संयोजन और फर्नीचर जैसी अन्य चीजें भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ये छोटी-छोटी बातें ही

एक आकर्षक, आनंददायक घर और एक सुंदर लेकिन नीरस घर के बीच अंतर पैदा करती हैं।

चित्र ए

चित्र 'ए' एक बेहतरीन आंतरिक सज्जा का अच्छा उदाहरण है। संतुलित रंग संयोजन और वातावरण का उपयोग करके पूरे कमरे को सजावट के लिहाज से सुव्यवस्थित किया गया है। दीवारों की सजावट से लेकर पर्दों जैसे मुलायम साज-सामान तक, कृत्रिम स्तंभों से लेकर प्रकाश व्यवस्था तक, फर्नीचर के चयन से लेकर सजावटी वस्तुओं तक, हर छोटी से छोटी चीज़ को बड़ी कुशलता से संभाला गया है।

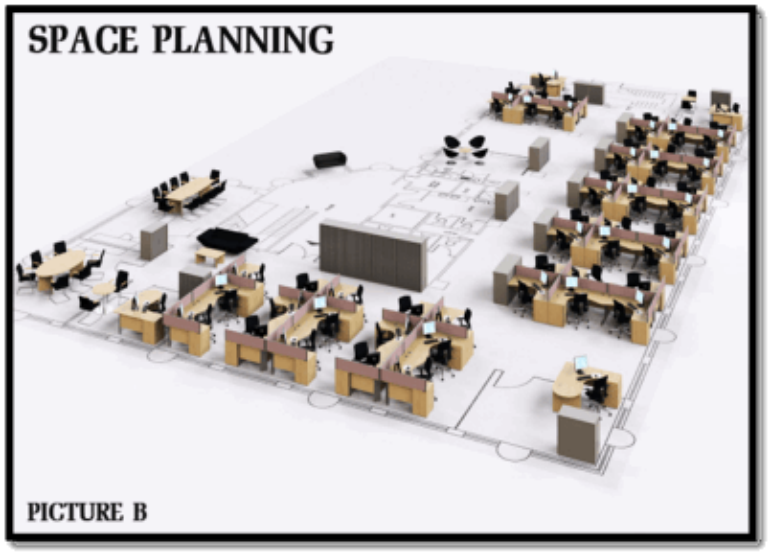

चित्र बी

चित्र B कार्य की आवश्यकता और प्रकृति के अनुसार स्थान की योजना बनाने का एक अच्छा उदाहरण है। कस्टम-निर्मित फर्नीचर और अन्य साज-सामान डिजाइन करने से उत्पादक और कुशल आंतरिक स्थान बनाने में मदद मिल सकती है।

शुरुआत कैसे करें

घरों को आकर्षक और सुंदर बनाने के लिए उनका आंतरिक सज्जा करना संभवतः सभी कला रूपों में सबसे प्राचीन है। घर की आंतरिक सज्जा सुंदरता और परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं के अनुसार कमरे की जगह के उपयोग के सरल सूत्र पर आधारित है।

घर की सफल सजावट के लिए आपको बस अपने कमरे के बजट के अनुसार सुंदरता और उपयोगिता के मेल को अपनाना है, बात इतनी ही सरल है। ऐसा करना न केवल चुनौतीपूर्ण है, बल्कि रोचक और संतोषजनक भी है। आज डिजाइनर, डेकोरेटर और निर्माता मिलकर शैलियों और इंटीरियर की एक रोमांचक नई दुनिया का पता लगा रहे

हैं और खोल रहे हैं, साथ ही पुरानी तकनीकों और शैलियों का सर्वोत्तम उपयोग भी कर रहे हैं।

घर की सजावट के लिए नए विचार लाने के लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में गहराई से उतरकर विभिन्न कालखंडों की शैलियों और वास्तुकला के आंतरिक सज्जा की बारीकियों को समझना आवश्यक नहीं है। अच्छी तरह से सजाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप पहले यह समझें कि आप क्या चाहते हैं। एक बार जब आप इस बात को स्पष्ट कर लेते हैं, तो आपको बस नवीनतम रुझानों से अवगत रहना है और बुनियादी नियमों का पालन करना है। समकालीन शैली का सार अतीत की पुरानी और आजमाई हुई विशेषताओं को डिजाइनरों द्वारा किए गए आधुनिक नवाचारों के साथ मिलाना है। डिजाइन के कुछ सिद्धांतों को भी समझने से आप अपने कमरे के आकार और प्रकार की परवाह किए बिना, उसे सजाने के लिए उपयुक्त व्यवस्था और संयोजन तैयार कर पाएंगे।

सजावट की कला अब हुई आसान

आप क्या करना चाहते हैं और कैसे करना चाहते हैं, इसका सावधानीपूर्वक विश्लेषण करें। साथ ही, आपको और आपके परिवार को क्या पसंद और नापसंद है, यह जानने से कमरों या पूरे घर की सजावट आसान हो जाएगी। स्पष्ट अवधारणा विकसित करने के लिए इन मुख्य बिंदुओं से संबंधित सभी बातों की सूची बनाएं। प्रयोग करें और ऐसा करने से कभी न डरें, आप अपनी गलतियों से सीखेंगे और कौन जानता है कि कोई गलती किसी दिलचस्प डिज़ाइन विशेषता या परिवेश में एक नया तत्व साबित हो सकती है। सीखने के लिए बहुत कुछ है और प्रयोग करना ही रचनात्मकता का एकमात्र तरीका है। इस दृष्टिकोण को अपनाएं, इससे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

अगर आप अपने घर के हर कमरे को एक ऐसे मंच के रूप में देखें जिसे आप सजाकर और फर्नीचर लगाकर उसमें रहने वाले लोगों के लिए आराम, सुखद माहौल और खूबसूरत वातावरण बना सकें, तो यह बहुत मददगार साबित होगा। सजावट से जुड़ी सबसे आम समस्या यह है कि किसी जगह की एकरसता या एकरूपता को कैसे तोड़ा जाए। हर कमरे को और अधिक रोचक और अनूठा बनाने के लिए आपको एकरूपता की भावना को तोड़ना होगा।

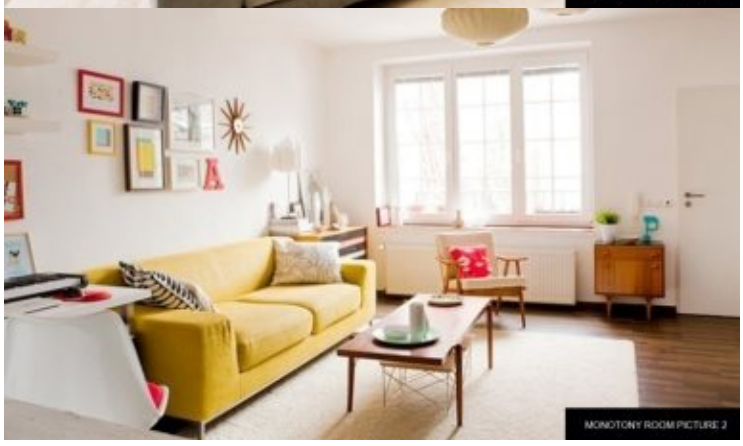

किसी स्थान की एकरूपता को तोड़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है, हालांकि इसके कई तरीके हैं। ऊपर दी गई तस्वीर में एक समान सफेद रंग के इस्तेमाल से एक जैसा लुक मिलता है। रंग और अन्य डिजाइन तत्वों के माध्यम से स्थान को एक खास माहौल देना सजावट का मुख्य उद्देश्य होता है।

सजावट योजनाओं की उपयोगिता

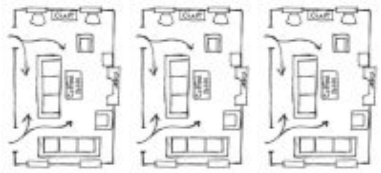

आपको पेशेवर डेकोरेटरों द्वारा बनाए गए रेखाचित्रों या स्केच की तरह विस्तृत रेखाचित्र बनाने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन आप उस तरीके को सीखकर उसका लाभ उठा सकते हैं। अपनी कल्पना को साकार करने से पहले, कमरे में आप क्या करना चाहते हैं, इसका एक मोटा-मोटा खाका बनाना हमेशा एक अच्छा विचार होता है। अधिक विवरण जोड़ने से अंततः आपकी कल्पना अधिक स्पष्ट हो जाएगी। इसलिए, किसी स्थान को सजाने के अपने इरादों के आधार पर एक योजना बनाना बुरा विचार नहीं है।

कार्य योजना बनाते समय सबसे पहला महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि कमरे का उपयोग किस लिए किया जाएगा? इस प्रश्न का उत्तर सरल है क्योंकि प्रत्येक कमरे का उद्देश्य बिल्डर या आर्किटेक्ट द्वारा पहले से ही निर्धारित होता है। घर के प्रत्येक कमरे को उसके उपयोग और व्यक्तित्व के अनुसार सजाया जाना चाहिए। किसी विशेष कमरे का उद्देश्य या उसमें की जाने वाली गतिविधियाँ आपको उसे सजाने और उसे अपनी कल्पना के अनुरूप रूप देने में मदद करेंगी।

यहां दी गई तस्वीर कमरे के पूर्वनिर्धारित उद्देश्य को दर्शाती है, जो कि बच्चों का शयनकक्ष है। कमरे का उद्देश्य जानने से सज्जाकार के लिए कमरे को आवश्यक स्वरूप और वातावरण देना आसान हो जाता है।

यहां ध्यान दें कि सजावटकर्ता ने प्रमुख पीले रंग के साथ खेलते हुए चतुराई से चमकीले रंगों को शामिल किया है। बच्चे आमतौर पर चमकीले रंगों की ओर आकर्षित होते हैं और उनसे आनंद लेते हैं।

डेकोरेटर अपनी कल्पना के अनुसार योजना बनाते हैं और ऐसा करके वे बड़ी गलतियों की संभावना को खत्म कर देते हैं। इस प्रकार, डेकोरेशन प्लान किसी थीम के इर्द-गिर्द एक कॉन्सेप्ट तैयार करना संभव बनाता है। डेकोरेशन प्लान इंटीरियर डेकोरेटर को सही सामग्री, फिटिंग और एक्सेसरीज़ चुनने में भी मदद करता है।

सजावट योजना का महत्व तब और भी बढ़ जाता है जब आप उन बिंदुओं की एक चेकलिस्ट बनाते हैं जिनका ध्यान रखना आवश्यक है, जैसे कि बच्चों की पसंद (जैसे कि उन्हें कौन सा रंग पसंद है या किस प्रकार का फर्नीचर उनकी उम्र और आराम के अनुकूल होगा), प्रकाश व्यवस्था कहाँ और कैसे स्थापित करनी है, पर्दे से लेकर असबाब के कपड़े तक किस प्रकार के मुलायम साज-सामान का उपयोग किया जाना है, और बिजली के स्विच से लेकर नुकीले किनारों तक सभी सुरक्षा कारकों पर विचार करना।

जब किसी स्थान की सभी सुविधाओं और ज़रूरतों को सुनिश्चित करने के लिए एक चेकलिस्ट में सब कुछ शामिल कर लिया जाता है, तो उसे कुशलतापूर्वक सजाने में सफल होने की संभावना बढ़ जाती है। एक बार जब आप सजावट के प्रति सजग हो जाते हैं, तो आपको हर चरण में उपयोगी विचार मिलेंगे। आप एक स्क्रैपबुक बनाकर

भी शुरुआत कर सकते हैं जिसमें आप सजावट के रुझानों पर पत्रिकाओं के लेख, नए फर्नीचर और फिटिंग के विज्ञापन, फर्नीचर और एक्सेसरीज़ की व्यवस्था की विभिन्न तस्वीरें और साथ ही आपको आकर्षित करने वाले रंग संयोजनों की तस्वीरें एकत्र कर सकते हैं। आप अपने दोस्तों से मिलने और शॉपिंग मॉल में खरीदारी करते समय देखी गई दिलचस्प चीजों को भी नोट कर सकते हैं। घर के आंतरिक हिस्सों को सजाते समय संदर्भ के लिए कई विचारों की तस्वीरें ली जा सकती हैं।

कमरे की सजावट योजना की बुनियादी जाँच सूची

किसी भी कमरे का मोटा-मोटा नक्शा बनाते समय इन बुनियादी बातों को ध्यान में रखें: कमरे का आकार (कमरे का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या और उसमें आवागमन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए), कमरे का उद्देश्य (लिविंग रूम, बेडरूम, लाउंज आदि), फर्नीचर की व्यवस्था (एक-दूसरे के सामने रखे फर्नीचर की दिशा और समूह), उपलब्ध स्थान के अनुसार फर्नीचर का आकार, खिड़कियों, दरवाजों और बिजली के पॉइंट्स की स्थिति, रंग संयोजन और थीम का चुनाव, छत की ऊंचाई को ध्यान में रखते हुए छत की सजावट के विचार, दीवारों की सजावट के विचार (उदाहरण के लिए: वॉल क्लैडिंग, वॉलपेपर, फैब्रिक पैनलिंग, वॉल पेंट), फर्श की सजावट के विचार, फैब्रिक की बनावट, पैटर्न और उपयोग, सजावटी वस्तुओं की व्यवस्था।

भवन की सामान्य स्थापत्य शैली पर विचार करना और स्थापत्य शैली तथा आंतरिक कक्ष की सजावट शैली के बीच सामंजस्य स्थापित करना एक बेहतरीन विचार होगा।

नमूना लेकर देखना

जब आप किसी कमरे को सजाने के अपने विचार को स्पष्ट रूप से देख लें, तो एक मोटा-मोटा स्केच बनाएं ताकि आप अपनी बनाई गई चेकलिस्ट में शामिल फर्नीचर और बाकी सभी चीजों के आधार पर अपने स्थान का दृश्य आकलन कर सकें। अब समय है सभी चीजों के नमूने या संदर्भ चित्र एकत्र करने का ताकि आप एक मूड बोर्ड बना सकें। ऐसा करने से आपको हर फिनिश, पेंट, कपड़े की बनावट और उनके संयोजन के बारे में पूरी जानकारी मिल जाएगी।

अपने मनचाहे इंटीरियर डेकोरेशन के लिए फर्नीचर, पेंटिंग, टेबल लैंप, एरिया रग, कारपेट और लाइट्स की हर संभव तस्वीर इकट्ठा करें। ऐसा करने से गलतियाँ होने की संभावना कम हो जाएगी। अपने इंटीरियर डेकोरेशन प्रोजेक्ट के इस बेहद महत्वपूर्ण चरण में धैर्य बनाए रखें। जल्दबाजी करने से आप गलत चीजों का चुनाव कर सकते हैं, जबकि इंटीरियर डेकोरेटर छोटी से छोटी सजावटी चीज के चुनाव में भी बहुत सावधानी बरतते हैं।

कपड़े की बनावट, रंग, डिज़ाइन और बुनाई आपस में कैसे मेल खाएंगे, इसका अंदाज़ा कभी न लगाएं; उन्हें साथ-साथ रखकर देखें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे एक अच्छा संयोजन बनाते हैं। चुनी गई हर वस्तु एक दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण और सौंदर्यपूर्ण रूप से पूरक होनी चाहिए। चयन करते समय अपने क्षेत्र की जलवायु को भी ध्यान में रखें। जलवायु के अनुसार रंग संयोजन, विषयवस्तु और कपड़ों का चयन करना आवश्यक है।

विभिन्न नमूनों के संयोजन को आजमाने से आपको उन कई अन्य समस्याओं का भी पता चलेगा जो बाद में उत्पन्न हो सकती हैं यदि नमूना लेने के चरण में विस्तृत विचार-विमर्श नहीं किया जाता है, उदाहरण के लिए ऐसी चीज का चयन करना जिसमें बाद में

आसानी से सफाई संबंधी समस्याएं हो सकती हैं, इसलिए चयन में आपकी ओर से समझदारी और धैर्य की आवश्यकता है।

फर्नीचर की व्यवस्था कैसे करें

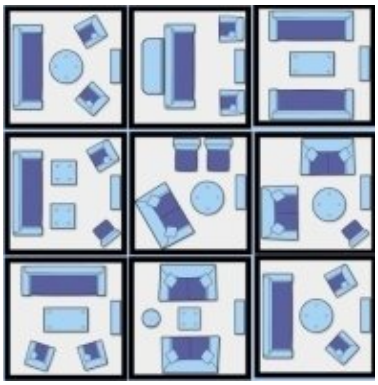

परिचय

सौंदर्य, आराम और सुविधा का मनमोहक मिश्रण ही सभी गृह सज्जाकारों और इंटीरियर डिजाइनरों का प्राथमिक लक्ष्य होता है। इन सभी विशेषताओं को सुनिश्चित करने के लिए सुनियोजित फर्नीचर व्यवस्था आवश्यक है। फर्नीचर का चयन और उसे समूहों में या एक दूसरे के संबंध में तथा स्थान के अनुसार व्यवस्थित करना एक विशेष वातावरण और मनचाहा माहौल बनाता है। कमरे की कार्यक्षमता, उद्देश्य और आवागमन की सुगमता को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

सजावटी ज्ञान सीखें

विश्वव्यापी सजावट के मानक कुछ सामान्य डिज़ाइन सिद्धांतों पर आधारित हैं जिन्हें कलाकार, डिज़ाइनर और सज्जाकार "रचना" कहते हैं। कमरे में फर्नीचर और अन्य सजावटी वस्तुओं को रखने के संदर्भ में इस अवधारणा को समझना कठिन नहीं है। डिज़ाइन को लागू करने के लिए सज्जाकार के कुछ नियमों से परिचित होने मात्र से ही आपको आत्मविश्वास मिलेगा। यह ज्ञान आपको अच्छे विचारों को पहचानने और उनकी सराहना करने में मदद करेगा, साथ ही साथ उन्हें थोड़े से बदलाव के साथ अपनी परियोजनाओं में चतुराई से अपनाने में भी सहायक होगा।

अपने प्रोजेक्ट में, विचारों को अपनाने की इस विधि का उपयोग करते हुए, जो आपको आकर्षित और प्रभावित करती हैं, वे अवलोकन और अनुभव से उत्पन्न होंगी। इन सभी विचारों को अपनी संदर्भ लाइब्रेरी में दर्ज करना सजावट की योजना बनाते समय बहुत उपयोगी होगा, जब आप रचनात्मक विचारों और रचनाओं को तलाशते हुए रफ स्केच बनाएंगे।

कमरे की सजावट में माहौल का महत्व होता है।

योजना बनाते समय सबसे पहला कदम यह तय करना है कि आप किस तरह का माहौल बनाना चाहते हैं। हर कोई जानता है कि माहौल क्या होता है और इसका क्या प्रभाव हो सकता है। जब लोग कमरे के वातावरण, उसके लहजे और उसकी अनुभूति की बात करते हैं, तो उनका मतलब अक्सर "माहौल" से ही होता है। माहौल को आमतौर पर फर्नीचर और सजावट के चुनाव के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। डिजाइन के तत्व अक्सर खुशी या उदासी, कोमलता और रोमांस का माहौल बनाते हैं। रंग, बनावट और फर्नीचर की व्यवस्था जैसे कारकों का सही इस्तेमाल करने की थोड़ी सी जानकारी आपको किसी भी कमरे के लिए मनचाहा माहौल बनाने में मदद करेगी। आप जानेंगे कि मनोदशा के अनेक पहलू होते हैं, जैसे कि अलग-अलग स्वभावों के। रंग एक सजावट विशेषज्ञ का हथियार है; यह लगभग हर समस्या का समाधान करता है, कमरे की मनोदशा को बनाने या बदलने में यह विशेष रूप से उपयोगी है। वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि आपके आसपास के रंग आपको मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से प्रभावित करते हैं। रंगों के प्रयोग से आप विभिन्न प्रकार की भावनाओं और मनोदशाओं को उत्पन्न कर सकते हैं।

किसी विषय के आधार पर अपनी योजना बनाना

सजावट में, थीम से तात्पर्य किसी विशेष विचार से है जिसका उपयोग कमरे में एकता स्थापित करने के लिए किया जाता है, जिसमें सजावट के विभिन्न तत्वों को आपस में जोड़ा जाता है और सामंजस्य स्थापित होता है। थीम बनाने और उसका पालन करने का लाभ यह है कि इससे रोचक विवरण और रंग संयोजन सुझाए जाते हैं, जिससे सजावट के लिए चयन करना आसान हो जाता है।

किसी भी थीम के लिए प्रेरणा कहीं से भी मिल सकती है; प्रेरणा आमतौर पर आपको कमरे को सजाने की एक निश्चित शैली अपनाने में मदद करती है, जो उसमें रहने वालों की पसंद के अनुरूप हो। यदि आप किसी विशेष थीम की ओर आकर्षित हैं, उदाहरण के लिए: जॉर्जियन, विक्टोरियन, इंग्लिश या ओरिएंटल सजावट, तो उसे समकालीन रूप देकर अपनाएं। इससे आपकी समस्याएँ आसान हो जाएँगी। परंपरा कई सजावट के उदाहरण प्रस्तुत करके मदद कर सकती है, जिसमें कई ऐतिहासिक और क्षेत्रीय थीम सुझाए गए हैं जिनका आप अनुसरण कर सकते हैं। आपके द्वारा चुनी गई थीम कई कमरों में एकरूपता का आभास देने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। घर के विभिन्न कमरों में इस्तेमाल की जाने वाली सुझाई गई थीम में फर्नीचर की शैली, दीवारों की सजावट, फर्श की सजावट, छत की सजावट और अन्य सजावटी सामानों का चयन, जैसे पेंटिंग से लेकर टेबल लैंप तक, फर्श की चटाई से लेकर सजावटी फर्नीचर के टुकड़े तक, समान हो सकते हैं।

विक्टोरियन सजावटी कला से तात्पर्य उस सजावटी कला शैली से है जो विक्टोरियन काल में प्रचलित थी और जिसका अनुसरण किया जाता था। विक्टोरियन काल महारानी विक्टोरिया (1837-1901) के शासनकाल को संदर्भित करता है। महान विक्टोरियन काल फर्नीचर, सहायक उपकरण, साज-सज्जा और सजावट में मध्य पूर्वी और एशियाई प्रभावों की ऐतिहासिक शैलियों की व्याख्या के लिए प्रसिद्ध है।

विक्टोरियन काल की आंतरिक सजावट अपनी अलंकरण और फर्नीचर तथा डिजाइन तत्वों की व्यवस्थित व्यवस्था के लिए जानी जाती है। इस युग में सार्वजनिक और निजी आंतरिक स्थानों को सावधानीपूर्वक अलग-अलग रखा जाता था। खाली या सादा कमरा खराब माना जाता था, इसलिए कमरे की हर सतह को विभिन्न प्रकार की सजावटी वस्तुओं से सजाया जाता था। कहा जाता है कि विक्टोरियन काल के घरों में दीवारों पर रंग का चुनाव उस कमरे के उपयोग के आधार पर किया जाता था।

कमरों में "सामंजस्य" लाने की अवधारणा यह थी कि रंग चक्र चार्ट पर एक दूसरे के बगल में स्थित रंगों का उपयोग किया जाए।

विक्टोरियन युग में फर्नीचर की कोई एक प्रमुख शैली नहीं थी। इस दौरान गोथिक और रोकोको काल की पुनरुद्धार शैलियाँ फर्नीचर में सबसे अधिक प्रचलित थीं। वॉलपेपर और दीवार को ढकने वाले उत्पाद विभिन्न डिज़ाइन पैटर्न और अलग-अलग कीमतों के

साथ बड़ी संख्या में गृहस्वामियों के लिए उपलब्ध हो गए। यह बड़े पैमाने पर उत्पादन तकनीकों के प्रचलन के कारण संभव हुआ। वॉलपेपर अधिकतर प्राथमिक रंगों (लाल, नीला और पीला) की पृष्ठभूमि में विस्तृत पुष्प पैटर्न में बनाए जाते थे और उन पर अन्य रंगों की छपाई की जाती थी।

रोकोको या "उत्तर बारोक" 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक से उत्तरार्ध तक की एक फ्रांसीसी कलात्मक आंदोलन और शैली है, जिसने चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, आंतरिक सज्जा और सजावट सहित कला के कई पहलुओं को प्रभावित किया।

रोकोको शैली के कलाकारों और वास्तुकारों ने बारोक शैली की तुलना में अधिक अलंकृत और नाजुक दृष्टिकोण अपनाया। उनकी शैली अलंकृत थी और इसमें हल्के रंगों, असममित डिज़ाइनों, वक्रों और सोने का उपयोग किया गया था। रोकोको शैली में चंचल और हास्यपूर्ण विषय थे। रोकोको कमरों की आंतरिक सजावट को एक संपूर्ण कलाकृति के रूप में डिज़ाइन किया गया था, जिसमें सजावटी अलंकृत फर्नीचर, छोटी मूर्तियाँ, सुंदर दर्पण और टेपेस्ट्री वास्तुकला और दीवार चित्रों के पूरक थे। रोकोको शैली में आमतौर पर लुई XV के शासनकाल से जुड़े अलंकरण, शैली और डिज़ाइन शामिल होते हैं।

फ्लोर प्लान बनाना

अपने कमरे का लेआउट तैयार करने से पहले, सुनिश्चित करें कि आपके पास उस कमरे में की जाने वाली सभी संभावित गतिविधियों की सूची हो। फर्नीचर से लेकर आवश्यक सभी उपकरणों तक, हर विवरण पहले से ही नोट कर लें।

आपकी फर्नीचर सूची में आपके पास मौजूद सभी फर्नीचर के टुकड़े और वे सभी चीजें शामिल होनी चाहिए जिन्हें आप खरीदने का इरादा रखते हैं। कमरे का माप या आयाम लें, दरवाजे और खिड़कियों की स्थिति और चौड़ाई जैसी हर जानकारी को ध्यानपूर्वक नोट करें, साथ ही कमरे में मौजूद किसी भी अन्य विशेषता जैसे कि चिमनी या अंतर्निर्मित आले को भी नोट करें।

अब आप पेशेवर इंटीरियर डेकोरेटर की तरह काम करने के लिए तैयार हैं, और इसके लिए आपको अपने कमरे का फ्लोर प्लान कागज पर बनाना होगा। पहला कदम है कमरे की रूपरेखा बनाना और उसमें मौजूद सभी स्थिर वस्तुओं की स्थिति को चिह्नित करना। ऐसा करने से आपको बेहतर ढंग से पता चलेगा कि आपकी दीवारें दरवाजों, खिड़कियों या अन्य स्थिर वस्तुओं के संबंध में कहाँ स्थित हैं और आप अपने फर्नीचर को समूहों में कैसे व्यवस्थित कर सकते हैं।

इस तरह आप फर्नीचर की व्यवस्था को आसानी से समझ पाएंगे। बस अलग-अलग शैलियों और समूहों में फर्नीचर की संरचनाओं के रेखाचित्र बनाते रहें। फर्नीचर के टुकड़ों के बीच की दूरी और अन्य विशेष डिज़ाइन विशेषताओं का ध्यान रखें। अपनी संरचनाओं में सौंदर्य और संतुलन बनाए रखने का प्रयास करें।

रुचि का केंद्र

अपने लिविंग रूम में गर्मजोशी और सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने के लिए, फर्नीचर को छोटे-छोटे समूहों में व्यवस्थित करें जो दोस्ताना बातचीत का संकेत देते हैं। सबसे

महत्वपूर्ण समूह को कमरे की सबसे आकर्षक वस्तु के पास रखें। फायरप्लेस लिविंग रूम में आकर्षण का केंद्र बनने का एक अच्छा उदाहरण है। फायरप्लेस के दोनों ओर दो भारी बैक वाली कुर्सियाँ, सजावटी टेबल और फायरप्लेस के सामने एक गलीचा रखने से यह कमरे का एक शानदार केंद्र बन सकता है। आप फायरप्लेस के ऊपर दीवार पर एक पेंटिंग भी लगा सकते हैं।

स्वाभाविक रूप से, फर्श और दीवारों की जगह का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए योजना बनाते समय बड़े फर्नीचर के टुकड़ों पर सबसे पहले ध्यान देना चाहिए। एक बार जब आप मुख्य केंद्र बिंदु तय कर लेते हैं, तो आप प्राथमिक केंद्रित फर्नीचर लेआउट के संदर्भ में अन्य फर्नीचर की व्यवस्था शुरू कर सकते हैं, इस मामले में फायरप्लेस की व्यवस्था।

फर्नीचर के प्रत्येक समूह की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि कुर्सियाँ, छोटी मेजें और लैंप जैसी सजावटी वस्तुएँ इस प्रकार हों कि असुविधा न हो। आप सजावटी लकड़ी के पैनल, वॉलपेपर और पेंटिंग जैसी चीजों से लिविंग रूम को और भी आकर्षक बना सकते हैं।

संतुलन

सजावट के हर चरण में संतुलन बेहद महत्वपूर्ण और आसानी से हासिल किया जा सकता है। साधारण फर्नीचर से सुसज्जित एक संतुलित कमरा, महंगे फर्नीचर से सजे लेकिन अव्यवस्थित स्थान और फर्नीचर लेआउट वाले कमरे की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक लग सकता है। सजावट में संतुलन का मनोवैज्ञानिक महत्व शांति की अनुभूति प्राप्त करना है; संतुलन व्यवस्था है और आराम का एक निश्चित एहसास पैदा

करता है। वस्तुओं का समूह संतुलित तब होता है जब वे स्थिर प्रतीत होती हैं, यानी जब भारी फर्नीचर को व्यवस्थित ढंग से रखा जाता है और वे कमरे के एक कोने में न हों। इसी प्रकार, ऊँचाई वाली सभी वस्तुओं को भी संतुलित ढंग से रखना चाहिए, न कि एक तरफ़ा। फर्नीचर और अन्य सजावटी वस्तुओं को संतुलित तरीके से व्यवस्थित करने से कमरा देखने में सुंदर, आरामदायक और संतुलित लगेगा।

एक आदर्श रूप से सजाए गए कमरे में, प्रत्येक दीवार पर आकर्षण का केंद्र बिंदु होना चाहिए, अन्य फर्नीचर के टुकड़े और सहायक साज-सामान एक साथ इस तरह से व्यवस्थित होने चाहिए कि एक सुखद और आकर्षक रचना बने और प्रत्येक आमने-सामने की दीवार एक दूसरे को संतुलित करे।

संतुलन के दो प्रकारों में अंतर है – एक समान (औपचारिक के लिए), और दूसरा असमान लेकिन सौंदर्यपूर्ण ढंग से संयोजित (अनौपचारिक के लिए)। पश्चिमी दुनिया में पारंपरिक सजावट की कला हमेशा से समान संतुलन शैली पर आधारित रही है, क्योंकि इससे कमरे में स्थिरता, सुंदरता और शांति का भाव आता है और काम करना आसान होता है।

औपचारिक संतुलन: निर्णय और कल्पना करते समय आपको समझदारी बरतनी चाहिए, क्योंकि अत्यधिक संतुलन बनाने से आपका कमरा नीरस और उबाऊ लगेगा। आपके घर के हर कमरे की सजावट में ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज रेखाएँ होती हैं; आपको इन रेखाओं को संदर्भ के रूप में उपयोग करके विभिन्न प्रकार की रचनाएँ बनानी चाहिए।

ऑप्टिकल बैलेंस: यह संतुलन वास्तव में एक ऑप्टिकल भ्रम है। इसमें वस्तुओं को इस तरह व्यवस्थित किया जाता है कि वे एक समान होती हैं, लेकिन बिल्कुल एक जैसी नहीं होतीं, फिर भी वे समरूपता और संतुलन का आभास पैदा करती हैं, चाहे वह समूह के भीतर हो या उनके सामने रखे गए अन्य समूहों के संबंध में। ऑप्टिकल बैलेंस को संभालना एक समान संतुलन की तुलना में अधिक कठिन है, लेकिन साथ ही यह अधिक चुनौतीपूर्ण और रोचक भी है, क्योंकि इसमें फर्नीचर और सहायक सामग्रियों को इंटीरियर डिजाइन में व्यवस्थित करने की कई संभावनाएं होती हैं।

संतुलन का आधुनिक तरीके से उपयोग करना

प्राच्य सजावट इस जटिल संतुलन शैली का व्यापक उपयोग करती है। आधुनिक शैली का मानना है कि यह कमरे की आंतरिक सजावट में एकरूप संतुलन बनाने के लिए फर्नीचर और सहायक उपकरण जोड़े में खरीदने की पारंपरिक आदतों पर व्यक्ति की कल्पना को व्यापक विस्तार प्रदान करती है, जबकि दृश्य संतुलन की अपनी एक व्याख्या है और वह है "अनौपचारिक संतुलन" शैली, जो इस विशेष व्यवस्था की अधिक प्रवाहमय रेखाओं के साथ स्वाभाविक रूप से मेल खाती है।

रंग और बनावट से प्रकाशिक संतुलन प्रभावित होता है, और लेआउट समूहों को व्यवस्थित करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। आमतौर पर गहरे रंग और खुरदरी सतहें फर्नीचर को उसके वास्तविक वजन से अधिक भारी दिखाती हैं, जबकि हल्के रंग और चिकनी सतहें उन्हें बड़ा दिखाती हैं। तटस्थ रंग आमतौर पर संतुलन बनाए रखते हैं।

चमकीले और प्रभावशाली रंग का एक छोटा सा धब्बा, उसी प्रकार एक फीकी सतह का विस्तृत क्षेत्र एक बहुत छोटे चमकीले क्षेत्र को संतुलित कर सकता है।

लाइन का उपयोग कैसे करें

अधिकांश महिलाओं ने अपने पहनावे में रेखाओं के महत्व को पहले ही समझ लिया है। आप जानती हैं कि ऊपर-नीचे की ओर बनी सिलवटें और ट्रिमिंग आपको लंबा दिखाती हैं, जबकि चारों ओर फैली पट्टियाँ आपको छोटा और चौड़ा दिखाती हैं। आप इसी सिद्धांत को अपने कमरे की सजावट में भी लागू कर सकती हैं, इसका वही प्रभाव होगा। रेखाओं और उनके प्रभाव का थोड़ा सा ज्ञान आपके कमरों को सजाने में बहुत उपयोगी साबित हो सकता है।

कमरे में दरवाज़ों और खिड़कियों के फ्रेम, सजावट में धारियाँ, फर्नीचर के किनारे जैसी बारीकियों में रेखाएँ स्पष्ट रूप से उभर कर दिखाई देती हैं। यदि आप रेखाओं को समझते हैं और उनका अर्थ जानते हैं, तो आप ऐसे फर्नीचर का चयन कर पाएंगे जो एक दूसरे के पूरक हों और कमरे की पृष्ठभूमि के साथ अच्छी तरह मेल खाते हों। इस तरह आप कमरे में एकरसता और कई अन्य गलतियों से बचेंगे।

रेखाओं के प्रकार

रेखाएँ मूल रूप से दो प्रकार की होती हैं: सीधी और घुमावदार, लेकिन साथ ही इन दोनों प्रकार की रेखाओं के संयोजन से कई रोचक संभावनाएं उत्पन्न हो सकती हैं। एक अच्छी तरह से सजाए गए कमरे में पृष्ठभूमि और साज-सज्जा दोनों में सीधी और घुमावदार रेखाओं का मनमोहक संयोजन होता है।

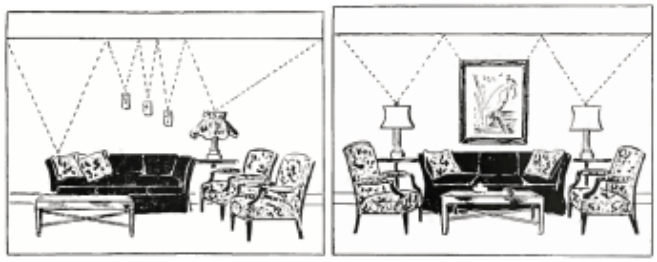

चित्र A: रेखाओं का गलत संयोजन। चित्र B: रेखाओं का सही संयोजन।

सजावट को एक विशेष प्रकार का माहौल देने के लिए रेखाओं का सबसे आकर्षक संयोजन इस बात पर निर्भर करता है कि आपको क्या पसंद है और आप उस विशेष कमरे के लिए किस प्रकार का माहौल चाहते हैं।

पंक्तियों का अर्थ: चेकलिस्ट

फर्नीचर, दीवार की सजावट और वस्तुओं को लटकाने में ऊर्ध्वाधर रेखाएं कमरे को संकरा और लंबा दिखाती हैं; ये रेखाएं कठोरता, सुंदरता और औपचारिकता का एहसास कराती हैं।

क्षैतिज रेखाएँ आमतौर पर डाइनिंग टेबल, सोफे और बिस्तर जैसी लंबी और नीची वस्तुओं से जुड़ी होती हैं, और नीची वस्तुओं से इनके जुड़ाव के कारण ये रेखाएँ आराम और सुकून का भाव दर्शाती हैं। क्षैतिज रेखाएँ स्थान को औपचारिक रूप देती हैं।
एक दूसरे के समानांतर चलने वाली सीधी रेखाएं शांति और सद्भाव का सुझाव देती हैं। क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रेखाओं के साथ सीधी रेखाएं आवश्यक हैं और ये किसी भी वातावरण में मौजूद होती हैं। इन रेखाओं को कुशलतापूर्वक संतुलित करने पर कमरे में निकटता और स्थायित्व का एहसास होता है।
वर्गाकार रचनाओं की तुलना में आयताकार रचनाएँ अधिक रोचक होती हैं क्योंकि आयत में रेखाएँ आँखों को रेखाओं के साथ प्रवाहित होने देती हैं।
यदि आप स्वयं रेखाओं के अर्थ और कार्यप्रणाली, तथा सजावट में उनके उपयोग के बारे में निश्चित नहीं हैं, तो किसी भी कमरे में विभिन्न प्रकार की रेखाओं को पहचानने के लिए अपनी दृष्टि को प्रशिक्षित करना शुरू करें। यह जानने का प्रयास करें कि अन्य इंटीरियर डेकोरेटरों ने किसी विशेष प्रभाव या वातावरण को बनाने के लिए कमरे में विभिन्न प्रकार की रेखाओं को कितनी चतुराई से संयोजित किया है।

फर्नीचर समूह की व्यवस्था और स्थान निर्धारण

हर आकर्षण का केंद्र, यहाँ तक कि छोटी सजावटी वस्तुओं का हर समूह भी, अपने आप में एक संपूर्ण चित्र होना चाहिए और कमरे के बाकी हिस्सों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए एक समग्र छवि प्रस्तुत करना चाहिए। ऐसा करना आसान है, समूह के एक हिस्से को दूसरे हिस्से के साथ संतुलित करें; बस यह सुनिश्चित करें कि कोई अन्य सजावटी वस्तु आकार या ऊँचाई में संतुलन को बिगाड़े नहीं।

थीम, रंग और बनावट के माध्यम से उन्हें आपस में सामंजस्य बिठाना सुनिश्चित करें। फर्नीचर का समूह अधिक आकर्षक लगेगा यदि सभी टुकड़ों में थोड़ा-थोड़ा एक ही रंग दिखाई दे और बनावट दिखने और स्वरूप में बहुत भिन्न न हो।

फ्लोर प्लान बनाते समय हमेशा ध्यान रखें कि गहरे और फीके रंग की सतह वाली वस्तुएं किसी अंधेरे कोने में ठीक से दिखाई नहीं देंगी, वहीं हल्के रंग की वस्तुएं खिड़की से आने वाली पूरी रोशनी में आसानी से नज़र आ सकती हैं। इसलिए, हल्के रंगों और चिकनी सतहों का उपयोग करके अंधेरे कोने को रोशन करें। गहरे रंग के फर्नीचर और सजावटी वस्तुएं गहरे रंग की दीवारों और पृष्ठभूमि के सामने स्पष्ट रूप से उभर कर दिखाई देंगी, इसलिए उन्हें सफेद दीवारों या हल्के रंगों के सामने न रखें।

कमरे के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ना

कमरे में एकरूपता और सामंजस्य बनाए रखने के लिए आप कुछ रंगों, आकृतियों, पैटर्न और बनावटों को दोहरा सकते हैं, या फिर एक जैसी दिखने वाली वस्तुएं, जैसे कि सजावटी कुर्सियों और लैंप, कमरे के विभिन्न स्थानों पर सजावट की थीम के अनुसार रख सकते हैं। बस इस बात का ध्यान रखें कि आप ज़रूरत से ज़्यादा सजावट न करें और कमरे में खाली जगह भरने के लिए एक जैसी दिखने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल न करें। एक अच्छी तरह से सजाए गए कमरे में विविधता, विरोधाभास और बीच-बीच में नाटकीयता का स्पर्श होना चाहिए।

वस्तुओं या फर्नीचर समूहों की फ्लोर प्लान व्यवस्था का परीक्षण करने के लिए, इसे एक स्टेज सेटिंग के नज़रिए से या एक कलाकार द्वारा पेंटिंग की जांच करने के नज़रिए से देखने का प्रयास करें। थोड़ी दूरी पर खड़े होकर अपनी व्यवस्थाओं को ध्यान से देखें ताकि कोई कमी या गलती मिल सके, ध्यान से देखें कि क्या आपको कहीं कोई विशेष

रंग जोड़ने की आवश्यकता है, प्रयोग करते रहें और विभिन्न प्रभावों को तब तक आजमाएं जब तक आप व्यवस्था से संतुष्ट न हो जाएं।

दीवारों को कैसे सजाएं

किसी भी कमरे की पृष्ठभूमि में दीवारें सबसे अहम भूमिका निभाती हैं, इसलिए उन्हें सही ढंग से सजाना कमरे की सजावट की सफलता का राज है। कमरे की सजावट शुरू करने से पहले दीवारों का अच्छी तरह से अध्ययन कर लें। अगर कमरे की दीवारें नीरस हैं, तो उन्हें जीवंत बनाने की कोशिश करें। अगर दीवारें बेजान हैं और उन्हें ठीक से सजाया नहीं गया है, तो दीवारों पर रखे महंगे फर्नीचर और सजावटी सामान अपनी खूबसूरती खो देंगे।

यदि आप अपनी दीवारों को नया रूप देने का निर्णय लेते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप ऐसा रंग-रूप चुनें जो आपके कमरे के मनचाहे माहौल और थीम के अनुरूप हो। कमरे के रंग और डिज़ाइन के आधार पर, दीवारें तटस्थ, प्रभावशाली और शांत हो सकती हैं। पारंपरिक दीवारें पैनलिंग और नाजुक मोल्डिंग के साथ औपचारिक होती हैं, जबकि आधुनिक आंतरिक दीवारें बेहद चिकनी और कार्यात्मक होती हैं। आजकल दीवारों के रंग-रूप में इतनी विविधता और विकल्प उपलब्ध हैं कि यदि आपका कमरा सामान्य आकार का है, अनुपात में सुंदर है और संरचनात्मक खामियों से मुक्त है, तो आप अपने कमरे की सजावट के लिए कोई भी रंग-रूप और फिनिश चुन सकते हैं। लेकिन यदि आपकी दीवारें संरचनात्मक और सौंदर्य की दृष्टि से दोषपूर्ण हैं, तो आपके द्वारा चुने गए रंग-रूप आपकी कल्पना के अनुरूप नहीं होंगे।

पेंट, वॉलपेपर और कपड़ों में मौजूद रंग ही कमरों के आकार और आकृति को बदलने में जादू का काम करते हैं।

दीवारों की सजावट, फर्नीचर की व्यवस्था और समग्र लेआउट, ये सभी मिलकर कमियों को दूर करने में योगदान देते हैं। अपनी दीवारों का बारीकी से अध्ययन करें, न केवल उन कमियों को दूर करने के लिए जिन्हें सुधारा जा सकता है, बल्कि उनमें सुंदरता और आराम के लिए दिलचस्प सजावटी तत्व जोड़ने की संभावनाओं को भी देखें। कमरे के मूल स्वरूप में मूलभूत बदलाव तभी किए जाते हैं जब घर या अपार्टमेंट किराए का न हो, लेकिन यदि आप अपने घर के मालिक हैं, तो आपको विभिन्न सामग्रियों, आकारों, रंगों और बनावटों में रीमॉडलिंग यूनिट्स मिल सकती हैं, जिनमें खिड़कियां, दरवाजे और लकड़ी का काम शामिल हो सकता है। ये मॉड्यूलर यूनिट्स हैं जिन्हें स्वयं स्थापित करना आसान है।

क्या आपको हर दीवार पर तस्वीर टांगने की जरूरत है?

किसी भी सफल इंटीरियर डिजाइन की कुंजी संतुलन है। इसका मतलब यह है कि जब चित्रों को टांगने की बात आती है, तो आपको हर खाली दीवार को चित्रों से भरने की आवश्यकता नहीं है। खाली दीवार की जगह को आपके सजावट के तत्व को निखारने के लिए एक निर्णायक डिजाइन तत्व के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

दीवारों को चित्रों से सजाना:

घर की हर दीवार पर तस्वीर टांगने की ज़रूरत बहुत कम ही पड़ती है। दीवार पर क्या लगाना है, यह तय करने की कला में घर की अन्य सजावट की चीज़ों पर भी विचार

करना शामिल है।

एक तस्वीर आपके डिज़ाइन में गहराई और गर्माहट लाती है। एक तस्वीर आपके समग्र सजावट का एक अभिन्न अंग बन सकती है। सही तस्वीरों और उनके सही संयोजन से एक नीरस दीवार भी जीवंत हो उठती है। तस्वीरें किसी भी औपचारिक या अनौपचारिक कमरे के डिज़ाइन को और भी सशक्त बना सकती हैं।

चित्र और साज-सज्जा:

आप जो तस्वीरें लगाएं, वे इस तरह से घुल-मिल जानी चाहिएं मानो वे हमेशा से वहीं थीं। उस खास जगह के लिए, या मानो उस दीवार के लिए ही बनाई गई हों। फर्नीचर के टुकड़े दीवार में प्राकृतिक रूप से खाली जगह बनाते हैं, जो तस्वीरों के लिए आदर्श हो सकती है। खाली दीवार के चारों ओर फर्नीचर द्वारा बनाई गई आकृतियों और पैटर्न का निरीक्षण करें। तय करें कि उस जगह को चित्रों की एक श्रृंखला से भरना है या उसे खाली छोड़ देना है।

दीवार के खाली स्थान को विभाजित करने वाले फर्नीचर के उदाहरणों में शामिल हैं:

दीवार के सामने रखे ऊंचे फ्लोर लैंप अपने आकार, माप और ऊंचाई के कारण दीवार की समग्र डिजाइन का हिस्सा बन जाते हैं। ये ऊंचे लैंप बगल की खाली जगह को खूबसूरती से घेर लेते हैं, इसलिए यहां किसी तस्वीर की जरूरत नहीं है।

टेबल लैंप, पौधे और अन्य वस्तुएं रखने के लिए साइडबोर्ड या कंसोल टेबल दीवार के खाली स्थान को विभाजित करते हैं, जिससे एक या अधिक चित्र लगाए जा सकते हैं।

बुककेस के ऊपर या बगल में चित्र लगाने के लिए उपलब्ध स्थान को परिभाषित किया जा सकता है। एक साइड टेबल, लैंप और कुर्सी से बना रीडिंग कॉर्नर आदर्श है, जहां

कुर्सी और/या टेबल के पीछे की दीवार पर चित्र लगाने से दृश्य में गहराई और गर्माहट आती है।

आसन्न दीवारें

आस-पास की दीवारों पर मौजूद फर्नीचर और अन्य वास्तुशिल्पीय विशेषताओं पर विचार करें और देखें कि ये किस प्रकार दीवार की जगह को विभाजित करते हैं। अक्सर, आप आस-पास की दीवारों पर चित्र लगाना नहीं चाहेंगे।

उदाहरण के लिए, आप यह निर्णय ले सकते हैं:

सजावटी वस्तुओं से भरी एक पूरी दीवार की शेल्फ बगल की दीवार के लिए वांछित डिजाइन तत्व है।

दरवाजे के दोनों ओर की दीवार की जगह खाली छोड़ दें ताकि दीवार का रंग आपके डिजाइन का अधिक प्रमुख हिस्सा बन जाए, जिससे कमरे को एक साफ-सुथरा और व्यवस्थित रूप मिले।

इन दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, आप किसी भी कमरे की दीवारों की स्थिति का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करके अपने लिए सही सजावट का निर्णय ले सकते हैं। बस यह सुनिश्चित करें कि सजावट देखने में सुंदर लगे, अतिरंजित न हो और वातावरण के साथ मेल खाए।

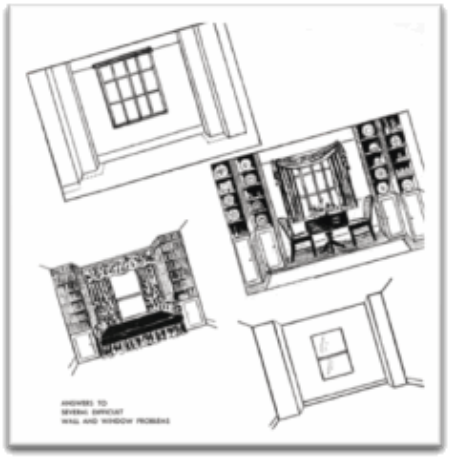

कठिन दीवारों और खिड़कियों के समाधान

इस तस्वीर में आप दो तरह के कॉर्नर बीम के पहले और बाद के दृश्य देख सकते हैं, जो एक ही समस्या के अलग-अलग समाधान प्रस्तुत करते हैं। नीचे दाईं ओर दो सिंगल बीम को बुकशेल्फ़ और स्टोरेज कैबिनेट से ढक दिया गया है, ताकि उनके बीच आरामदायक बेड-सोफ़ा रखा जा सके। खिड़की से बुकशेल्फ़ तक पर्दे लगाकर खिड़की के दृश्य को फैलाया गया है और ऊपर की दीवारों को एक खास आकार के कपड़े के वैलेंस से ढका गया है। इसका परिणाम शानदार है और इसे किसी भी कमरे में दोहराया जा सकता है।

यह लेआउट संकरे कमरों में तो बढ़िया रहेगा ही, साथ ही यह सिर्फ उन्हीं तक सीमित नहीं है। चौड़े कमरों में किताबों की अलमारियों को सामने से और चौड़ा किया जा सकता है। दाईं और बाईं ओर दिए गए रफ स्केच में एक संरचनात्मक खामी दिखाई गई है, जिसे आमतौर पर ठीक न होने वाला माना जाता है, लेकिन वास्तव में इसे यहां बताए गए तरीकों से आसानी से ठीक किया जा सकता है। इस तरह की तकनीक को संकरे कमरे के कोने को छोटे डाइनिंग रूम या गेम रूम के रूप में इस्तेमाल करने के

लिए बेहतरीन तरीके से अपनाया जा सकता है और अलमारियों का उपयोग छोटी निजी किताबों की लाइब्रेरी के लिए किया जा सकता है।

विंडो ट्रीटमेंट एक इंटीरियर डेकोरेटिंग डिज़ाइन एलिमेंट है जिसे खिड़की पर, उसके अंदर, उसके आसपास या उसके ऊपर लगाया जाता है। आमतौर पर, प्रोफेशनल विंडो ट्रीटमेंट का उद्देश्य ऐसे एलिमेंट लगाना होता है जो खिड़की और कमरे की सुंदरता को बढ़ाते हैं। "आपको खिड़कियों को भी कमरे के बाकी डेकोरेशन की तरह ही महत्व देना चाहिए।"

खिड़की को ढकने के लिए निम्नलिखित उपचार किए जा सकते हैं:

कठोर उपचार –

खिड़कियों के पर्दे लकड़ी या विनाइल जैसी कठोर सामग्री से बने होते हैं।

खिड़की के शटर –

खिड़की के शटर आमतौर पर खिड़की के फ्रेम में लगाए जाते हैं और ये लकड़ी या पॉली रेजिन से बनी क्षैतिज पट्टियाँ होती हैं, जो स्थिर या झुकी हुई हो सकती हैं। ये ब्लाइंड्स की तरह ऊपर-नीचे नहीं हिलतीं, लेकिन कुछ मामलों में इन्हें खिड़की पर मोड़ा जा सकता है।

शटर के प्रकारों में निम्नलिखित शामिल हैं:

ए. लकड़ी के शटर

बी. पॉली रेजिन शटर

खिड़की के पर्दों में लूवर लगे होते हैं जिनकी मदद से पर्दा उठाए बिना ही बाहर का नज़ारा देखा जा सकता है। इससे रोशनी को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित किया जा सकता है और मनचाहा माहौल बनाया जा सकता है। इन्हें पर्दा इसलिए कहा जाता है

क्योंकि इनका इस्तेमाल घर के अंदर झाँकने से रोकने के लिए किया जाता है; ये मूल रूप से "देखने वाले की नज़र को अवरुद्ध" कर देते हैं। समय के साथ, कई नए विकल्प और डिज़ाइन विकसित हुए हैं, जिनमें धूल रोधी विशेषताएं और पर्दों के लिए कपड़े के टेप शामिल हैं।

ब्लाइंड्स के प्रकारों में शामिल हैं:

लकड़ी के पर्दे

नकली लकड़ी के ब्लाइंड्स (जिन्हें पाल्स वुड के नाम से भी जाना जाता है)

एल्यूमीनियम ब्लाइंड्स

खिड़की के पर्दे कपड़े के ऐसे टुकड़े होते हैं जिन्हें रोल, स्टैक या फोल्ड किया जा सकता है, और ये तभी खुलते हैं जब इन्हें ऊपर की ओर रोल किया जाता है। यह इसकी पारंपरिक परिभाषा थी, लेकिन अब कुछ पर्दे ऐसे भी हैं जिनसे "बाहर का नजारा" देखा जा सकता है। यह ग्राहक की आवश्यकता पर निर्भर करता है।

सॉफ्ट ट्रीटमेंट्स ऐसी कोई भी चीज़ होती है जो मुलायम सामग्रियों से बनी हो।

पर्दे

चिलमन

खिड़की के आसपास के उपचारों में शामिल हैं:

मोल्डिंग (सजावटी)

कॉर्निस बोर्ड या पेल्मेट

खिड़की का पर्दा

कांच पर सीधे लागू किए जाने वाले उपचारों में शामिल हैं:

चीनी से आच्छादित गिलास

स्मार्ट ग्लास

रंगीन कांच

खिड़की के पर्दे के प्रकार

कमरे की सजावट करते समय बिना पर्दे वाली खिड़कियाँ शायद ही कभी सबसे अच्छा विकल्प होती हैं। खिड़कियों पर पर्दे, चाहे वे पाइप वाले हों, प्लीटेड हों, पडल हों या सादे हों, कमरे की कठोरता को कम करते हुए उसे एक सहज और कोमल रूप देते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से, ये निजता और रोशनी को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। साथ ही, ये कमरे की खामियों को छुपाने या उसकी खूबियों को निखारने में भी सहायक होते हैं।

सही और सबसे उपयुक्त ट्रीटमेंट का चुनाव करते समय डिज़ाइन के तीन पहलू—कपड़ा, बनावट और पैटर्न—महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन सबसे पहले, यह तय करना ज़रूरी है कि आपके कमरे को किस प्रकार के ट्रीटमेंट की आवश्यकता है।

यहां कुछ ऐसे सदाबहार उपचार दिए गए हैं जो आपको स्टाइलिश खिड़कियों के लुक के बारे में प्रेरणा और मार्गदर्शन देंगे।

वैलेंस

वेलेंस एक छोटा सा कपड़ा होता है जो पर्दे या खिड़की की सजावट में एक आकर्षक तत्व जोड़ने का काम बखूबी करता है। यह खिड़की के ऊपरी हिस्से पर लटका रहता है, जिससे खिड़की के कठोर ढांचे में कोमलता, रंग और पैटर्न जुड़ जाते हैं। केवल सजावटी होने के कारण, वेलेंस कमरे की शैली को निखारने में मदद करता है। सबसे सरल रूप में, कपड़े के एक पतले टुकड़े को क्लिप रिंग की मदद से रॉड पर लगाया जा सकता है। अधिक आकर्षक बनाने के लिए, इसमें पिंच प्लीट्स जोड़ें।

सरल वैलेंस

साधारण वेलेंस एक अनौपचारिक विकल्प है जो रसोई, नाश्ता कक्ष और बाथरूम जैसे पारिवारिक क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। गोपनीयता की आवश्यकता होने पर, वेलेंस को ब्लाइंड, शेड या शटर जैसे किसी अन्य ठोस विकल्प के साथ आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है।

बॉक्स-प्लीटेड वैलेंस

क्लासिक सजावट शैली पसंद करने वालों को बॉक्स-प्लीटेड वैलेंस बेहद पसंद आएगा। यह डिज़ाइन उन कमरों के लिए एकदम सही है जहाँ आप औपचारिक माहौल चाहते हैं, जैसे कि लिविंग रूम, डाइनिंग रूम या मास्टर बेडरूम। इस वैलेंस की सिलाईदार प्लीट्स एक माउंटिंग बोर्ड पर सपाट रहती हैं, जिसे आमतौर पर साधारण L-आकार के ब्रैकेट की मदद से दीवार पर लगाया जाता है।

सरल स्वाग्स

कभी-कभी गले में बंधी एक साधारण सी गांठ वाली स्कार्फ किसी भी पोशाक को बेहतरीन लुक दे सकती है। खिड़की पर लगा एक साधारण सा पर्दा कमरे को उसी तरह सजा देता है। खिड़की के फ्रेम के ऊपरी कोनों पर किसी सजावटी रॉड पर या टाईबैक पर लपेटी हुई, बिना अस्तर वाली या अस्तर वाली कपड़े की एक ढीली पट्टी, कमरे को बेहद स्टाइलिश बना सकती है। कपड़े की पट्टी का मध्य भाग वेलेंस का काम करता है; इसके किनारे, चाहे उन्हें तिरछी रेखाओं में काटा गया हो या केवल हेम किया गया हो, खिड़की के किनारों से हल्के से लटकते हैं।

गुब्बारा शेड

इस शानदार फ़ैब्रिक शेड में लहराते हुए स्कैलप्स हैं जो नीचे की ओर सुंदर, फूली हुई सिलवटों में समाप्त होते हैं। पीछे की ओर छल्लों से बंधी डोरियाँ शेड को हिलाने-डुलाने योग्य बनाती हैं, और जब इसे ऊपर उठाया जाता है, तो ऊर्ध्वाधर सिलवटें एक आकर्षक प्रभाव पैदा करती हैं। चूंकि यह शेड ज़्यादातर गुलाबी रंग का रहता है, इसलिए यह शेड की बजाय वैलेंस की तरह ज़्यादा काम करता है। इस्तेमाल किया गया फ़ैब्रिक - खिड़की की चौड़ाई से कम से कम दोगुना - इसे भव्य रूप देता है।

टाई-अप शेड्स

इसे कभी-कभी स्टेजकोच-शैली का शेड भी कहा जाता है। यह किफायती शेड कपड़े का सबसे सरल रूप में उपयोग करता है: इसे एक रॉड या माउंटिंग बोर्ड से सपाट लटकाया जाता है, और फिर इसके निचले किनारे को हाथ से रोल या फोल्ड करके मनचाही स्थिति में लाया जाता है। कपड़े की डोरियाँ, रिबन या डोरियाँ रोल या फोल्ड को अपनी जगह पर बनाए रखती हैं। शेड को एडजस्ट करने के लिए इसे हाथ से खोलकर दोबारा रोल करना पड़ता है, जिससे यह शेड कार्यात्मक से अधिक सजावटी लगता है। इसका उपयोग ऐसी जगह पर करें जहाँ आप किसी भद्दे दृश्य को छिपाने के लिए शेड को नीचे छोड़ने की संभावना रखते हों।

रोमन शेड्स

बिना ढेर सारे कपड़े के आलीशान लुक के लिए रोमन शेड एक समझदारी भरा विकल्प है। बंद होने पर, शेड एक सपाट कपड़े का पैनल होता है। ऊपर उठाने पर, गहरी, क्षैतिज सिलवटों की श्रृंखला इसे एक साफ-सुथरा लुक देती है। कपड़े के पीछे लगे छल्लों से पिरोई गई डोरियाँ शेड को गतिशीलता प्रदान करती हैं। कुछ रोमन शेड बिना

लाइनिंग के बनाए जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सिलवटें थोड़ी ढीली और फूली हुई दिखती हैं।

कॉर्निस

कॉर्निस को लकड़ी के पर्दे की तरह समझें। यह आमतौर पर प्लाईवुड से बना होता है, जिसे लकड़ी के स्क्रू और कॉर्नर ब्रैकेट से जोड़ा जाता है, फिर पेंट किया जाता है या वॉलपेपर या कपड़े से ढका जाता है और खिड़की के ऊपर दीवार पर लगाया जाता है। पर्दे की तरह, कॉर्निस को अकेले या किसी अन्य सजावट के साथ भी इस्तेमाल किया जा सकता है। चूंकि यह आमतौर पर लकड़ी का बना होता है, इसलिए कॉर्निस को पर्दे या कपड़े के शेड जैसी किसी नरम सजावट के साथ लगाने से इसकी कठोरता कम हो जाती है।

रॉड पॉकेट पैनल

इस डिज़ाइन में, पर्दे की छड़ पैनल के ऊपरी किनारे पर सिले हुए खांचे से आसानी से निकल जाती है। फिटिंग जितनी टाइट होगी, झालर उतनी ही आकर्षक बनेगी। झालरदार ऊपरी भाग के लिए, ऊपरी किनारे से कुछ इंच नीचे एक खांचा सिल लें; छड़ को उसमें से गुजारने पर, उसके ऊपर का कपड़ा फैलकर झालर का आकार ले लेता है।

छल्ले वाले पैनल

पर्दे टांगने के लिए पहले धातु के हुक आम बात हुआ करते थे। पैनल के पीछे लगे होने के कारण हार्डवेयर दिखाई नहीं देता था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। लकड़ी या धातु के छल्ले, जो एक डंडे पर सरकते हैं, आपको हार्डवेयर को प्रमुखता देने की सुविधा देते हैं, जिससे ये लगभग किसी भी तरह के पर्दे के साथ जंच जाते हैं। फैशनेबल होने के साथ-

साथ, छल्ले वाले पैनल खोलना और बंद करना आसान है और उन लोगों के लिए एक बढ़िया विकल्प है जिन्हें रस्सी और पुली वाले रॉड सिस्टम पसंद नहीं हैं।

प्लीटेड पैनल

खिड़कियों की सजावट में, प्लीटेड ड्रेपरी पैनल हमेशा से लोकप्रिय रहे हैं। ये फैशन की बदलती दुनिया में भी अपनी जगह बनाए रखते हैं और किसी भी कमरे को सुंदरता और स्टाइल प्रदान करते हैं। प्लीट्स कई शैलियों में उपलब्ध हैं, जिन्हें पैनल के ऊपरी किनारे पर सिलकर एक सजावटी हेडर बनाया जाता है। प्लीट्स बनाने के लिए अक्सर हेडर टेप का उपयोग किया जाता है, जो कपड़े की दुकानों पर गज के हिसाब से मिलता है। पैनल के पीछे सिला हुआ यह टेप खींचने पर प्लीट्स बनाता है। फिर हुक को टेप में डालकर रिंग या आमतौर पर इस्तेमाल होने वाली रॉड पर लटकाया जाता है, जिसमें पैनल को खोलने और बंद करने के लिए डोरी और पुली सिस्टम लगा होता है।

खिड़की की सजावट की ये कुछ शैलियाँ पारंपरिक और आधुनिक वास्तुशिल्प आंतरिक सज्जा के लिए कभी भी चलन से बाहर नहीं होती हैं।

वॉलपेपर बनाम पेंट

अगर आप तय नहीं कर पा रहे हैं कि दीवारों को पेंट से सजाएं या वॉलपेपर से? तो यहां दोनों के कुछ फायदे और नुकसान बताए गए हैं, जिससे आप अपनी कल्पना और कमरे को कैसा माहौल देना चाहते हैं, उसके अनुसार सबसे अच्छा विकल्प चुन सकते

हैं। कई बेहतरीन इंटीरियर डिज़ाइन में कमरे की सजावट के लिए पेंट और वॉलपेपर दोनों का इस्तेमाल किया जाता है।

वॉलपेपर के फायदे

वॉलपेपर की उम्र 15 साल तक हो सकती है, जिससे यह लंबे समय में किफायती साबित होता है। आमतौर पर, अगर वॉलपेपर को सही तरीके से लगाया जाए तो यह पेंट से तीन गुना अधिक समय तक चलता है। वॉलपेपर दीवार पर आसानी से और चिकनी तरह चिपक जाता है और दीवार की कई खामियों को छुपा देता है। वॉलपेपर कमरे में गर्माहट, रंग, गहराई और स्टाइल जोड़ता है, जबकि एक ही रंग के पेंट से ऐसा प्रभाव प्राप्त नहीं किया जा सकता।

फूलों से लेकर ज्यामितीय आकृतियों तक विभिन्न डिज़ाइन शैलियाँ, कई तरह की बनावटों और संयोजनों के साथ कमरे की सजावट में एक खूबसूरत प्रभाव डालती हैं। वॉलपेपर को कमरे की एक या दो दीवारों पर भी लगाया जा सकता है, जैसा कि आपने किसी खास कमरे के लिए कल्पना की हो, ताकि वे खास दीवारें बन सकें।

वॉलपेपर के नुकसान

दीवारों पर वॉलपेपर लगाना पेंट करने की तुलना में अधिक समय लेने वाला काम है। यदि आप भविष्य में इसे बदलना चाहें, तो बिना कुछ तैयारी किए आप सीधे इस पर पेंट नहीं कर सकते या पुराने वॉलपेपर के ऊपर नया वॉलपेपर नहीं लगा सकते।

आधुनिक प्रकार के कई वॉलपेपर (नॉन-वोवन) दीवारों से बड़ी-बड़ी चादरों में उतर जाते हैं, जबकि पुराने वॉलपेपर ऐसा नहीं कर सकते और उन्हें दीवारों से हटाना बहुत समय लेने वाली और थकाऊ प्रक्रिया बन जाती है।

पेंट के फायदे

पेंट सस्ते दामों में खरीदा जा सकता है और ज्यादातर लोग इसे खुद ही पेंट कर सकते हैं; उन्हें बस आवश्यक सामग्री खरीदनी होती है। बाजार में कई तरह के पेंट उपलब्ध हैं, कुछ पानी आधारित होते हैं और कुछ तेल आधारित।

पेंट के नुकसान

पेंट केवल सीमित रंगों में ही उपलब्ध होता है, मैट से लेकर ग्लॉसी तक। वहीं वॉलपेपर चमकीले डिज़ाइनों और मोती व ग्लिटर जैसे खूबसूरत प्रभावों में आता है। पेंट की सबसे बड़ी कमियों में से एक यह है कि यह उखड़ सकता है और कुछ तापमानों में इसमें दरारें पड़ सकती हैं। पेंट लगाना गंदा काम हो सकता है और अगर लगाते समय सावधानी न बरती जाए तो इससे फर्श, फर्नीचर और बिजली के स्विच जैसे उपकरणों पर दाग लग सकते हैं।

पेंट आमतौर पर 5 से 10 साल तक चलता है, लेकिन इस बात की अधिक संभावना है कि आपको बार-बार पेंट करवाना पड़ेगा।

इसलिए यदि आपको अपना कमरा खुद ही पेंट करना है, तो यहां कुछ चीजें हैं जिन पर आपको विचार करना चाहिए:

पेंट प्रोजेक्ट चेकलिस्ट

परियोजना की तैयारी:

सैंडपेपर, कॉल्क और कॉल्क गन, होल फिलर, पुट्टी नाइफ, ड्रॉप क्लॉथ, पेंटर टेप

7. प्राइमर

चित्रकारी

एक्सटेंशन पोल, सीढ़ी, ब्रश, रोलर और फ्रेम, एजर्स, पेंट ट्रे, पेंट स्प्रेयर

काम खत्म करो और साफ करो

सफाई के कपड़े, कागज के तौलिए, पेंट थिनर, डिस्पोजेबल दस्ताने, सतह साफ करने वाले स्पंज, कचरा बैग, बाल्टी

पेशेवर परिणाम प्राप्त करने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

यदि आपका प्रोजेक्ट (आपके कमरे) बड़े हैं, तो अपने समय की सावधानीपूर्वक योजना बनाएं ताकि आप दीवारों को पेंट करने का काम पूरा कर सकें और बीच में पेंटिंग न छोड़ें, क्योंकि यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको एक समान पेंटिंग परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता है।

बेहतर परिणाम के लिए पेंट, ब्रश और सैंडपेपर सहित उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों (सामग्रियों) का चयन करें और खरीदें।

प्रोजेक्ट शुरू करने से पहले सुनिश्चित कर लें कि आपके पास सभी सामग्री मौजूद है ताकि आपको कुछ सामग्री लेने के लिए अपनी नौकरी न छोड़नी पड़े।

पूरी दीवार पर एक साथ पेंट करने की बजाय, एक बार में 3 से 4 फीट के टुकड़ों में पेंट फैलाकर या काटकर लगाने से बेहतर परिणाम मिलते हैं।

जब आप पेंट के कई डिब्बों का उपयोग कर रहे हों, तो रंगों को बेहतर ढंग से मिलाने और पेशेवर स्तर की दीवार पेंटिंग के परिणाम प्राप्त करने के लिए हमेशा उन्हें मिलाने के लिए एक बड़ी बाल्टी का उपयोग करें।

पेंट किए गए क्षेत्र से बिना पेंट किए गए क्षेत्र की ओर रोल करके एक गीला किनारा बनाएं ताकि मिश्रण अधिक चिकना दिखे।

3x3 फीट के पैटर्न क्षेत्र में पेंट को रोल करें।

आशा है कि ये सुझाव और दिशानिर्देश आपको पेंटिंग के काम में सफलता दिलाएंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पेंटिंग या वॉलपेपर लगाने का काम शुरू करने से पहले उन सभी बातों की एक योजना बना लें जिन पर आपको विचार करना चाहिए। अपने मन में यह स्पष्ट कर लें कि आप उस कमरे के लिए कैसा प्रभाव चाहते हैं जो आपकी कल्पना से मेल खाता हो।

काम की सुरक्षा और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए क्रमबद्ध तरीके से किए जाने वाले चरणों की एक चेकलिस्ट बनाएं। कमरे की दीवारों की सजावट में आमतौर पर दो प्रकार के उपचार की आवश्यकता होती है: पहला, "वास्तुकला उपचार", जो तब होता है जब कोई खिड़की या आला आपके सजावट योजना की निरंतरता को बाधित करता है। इस तरह की स्थिति को समझदारी से संभालना कमरे का वास्तुशिल्प उपचार होगा; इस स्थिति को पिछले पृष्ठ पर एक उदाहरण के माध्यम से समझाया गया है। दूसरा, "दीवार सजावट उपचार", जो कमरे की दीवारों को वॉलपेपर या पेंट या दोनों (यदि आपकी कल्पना के अनुरूप हो) लगाकर उन्हें आकर्षक बनाने का उपचार है। दीवारों पर पेंटिंग और वॉल हैंगिंग लगाना, दीवार पर लगे बुकशेल्फ़ या अन्य सजावटी लकड़ी

का उपयोग करना इस श्रेणी की सजावट में आता है; इन स्थितियों के उदाहरण भी पहले दिए गए हैं।

अपनी सौंदर्यबोध की समझ विकसित करना महत्वपूर्ण है, चिंता न करें, आप धीरे-धीरे इसे सीख जाएंगे। इसके लिए आपको अपने आसपास की दिलचस्प सजावटी वस्तुओं को ध्यान से देखने की आदत डालनी होगी, फर्नीचर लेआउट प्लान से लेकर आधुनिक फैशन ट्रेंड्स जैसे पर्दे और गद्दी, टेबल लैंप से लेकर आकर्षक पेंटिंग्स तक, विभिन्न प्रकार की सजावटी वस्तुओं के चयन तक, संदर्भों का एक दृश्य संग्रह बनाना होगा। ऐसी रचनात्मक क्षमताओं में सुधार केवल आपकी रुचि के स्तर पर निर्भर करता है।

Danish inspired living room with wallpaper and paint

रंगों का प्रभावी उपयोग

रंग आपके सजावट का सबसे प्रभावी साधन है। आपको इसे अपने हिसाब से इस्तेमाल करना सीखना होगा। यह आपके आस-पास हर जगह, हर कमरे में मौजूद है, जो गर्माहट, शैली, व्यक्तित्व, उदासी, चमक, कोमलता और राजसीपन का एहसास कराता है। यह कमरे में एकरसता और सामंजस्य लाता है और साथ ही उन्हें तोड़ता भी है। रंग का उपयोग समझना आसान है क्योंकि इसका हर पहलू आपको प्रकृति की ओर ले

जाता है। इंद्रधनुष रंगों का एक ऐसा स्पेक्ट्रम प्रदान करता है जिससे कलाकार, डिज़ाइनर और सज्जाकार अपनी परियोजनाओं के लिए रंग पैलेट और रंग योजनाएँ तैयार करते हैं।

रंगों के साथ जुड़े अर्थ वे हैं जो प्रकृति ने हमें परिचित कराए हैं। उदाहरण के लिए, लाल और नारंगी रंग हमें आग की याद दिलाते हैं, और गर्म जलवायु में उष्णकटिबंधीय फूलों के चमकीले रंग भी हमें प्रभावित करते हैं। प्राथमिक रंगों, लाल, नीले और पीले को मिलाने से रंगों के अर्थों में अनगिनत बदलाव होते रहते हैं।

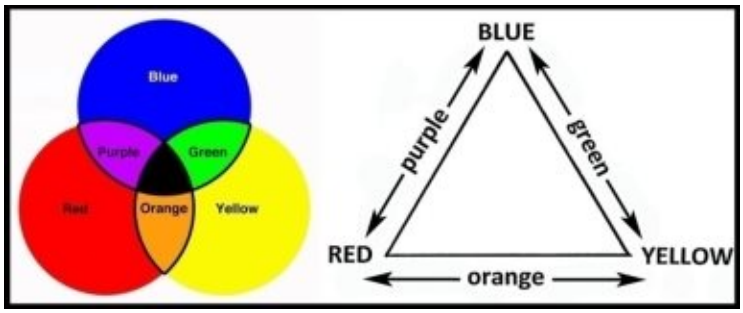

सामान्यतः अग्नि के गर्म रंग प्रसन्नतापूर्ण, नाटकीय और रोचक होते हैं; सूर्य के गर्म रंग हंसमुख, प्रसन्नतापूर्ण और अधिकतर उपयोगी होते हैं। हरा रंग विभिन्न रंगों के बीच एक सहायक कड़ी है और कमरों के लिए एक आदर्श शांत पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

रंगों के प्रकार

रंगों को स्वाभाविक रूप से दो श्रेणियों या समूहों में बांटा जा सकता है: गर्म और ठंडे, और इनके बीच में संक्रमणकालीन रंगों के कई संयोजन होते हैं। काले और सफेद जैसे तटस्थ रंग भी होते हैं। प्रत्येक समूह के रंगों की अपनी सामान्य विशेषताएं होती हैं और इन विशेषताओं या गुणों की जानकारी होने से आप अपने कमरों की सजावट में इनका कलात्मक रूप से उपयोग कर सकते हैं।

गर्म रंग जो आगे बढ़ते हैं: लाल और पीला रंग हमेशा गर्म रंगों में गिने जाते हैं, साथ ही नारंगी रंग भी जो रंग चक्र के मध्य में आता है। ये रंग आपको पास दिखाई देते हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। इसी कारण इन्हें निकट या आगे बढ़ने वाले गर्म रंग कहा जाता है। कोई भी मिश्रित रंग जिसमें पीला, नारंगी या लाल रंग प्रमुख होता है, अपने आप ही गर्म निकट या आगे बढ़ने वाला रंग बन जाता है, चाहे वह कितना भी हल्का या धुंधला क्यों न हो।

सभी गहरे और गाढ़े रंगों में किसी न किसी प्रकार का गर्म रंग मिला होगा और उनमें कुछ हद तक आगे बढ़ने का गुण होगा। उदाहरण के लिए, एक रंग श्रृंखला आइवरी और क्रीम से लेकर टैन, पीच, रोज़, पिंक और कैरल से लेकर रस्ट और बरगंडी जैसे गहरे रंगों तक फैली हुई है, और इनमें से प्रत्येक को गर्म और आगे बढ़ने वाले रंगों की श्रेणी में रखा जाएगा।

ठंडे और शांत रंग: नीला रंग निस्संदेह ठंडे रंगों की श्रेणी का केंद्र है। इससे उत्पन्न होने वाली शीतलता का एहसास पानी, बर्फ और आकाश के समान होता है। नीली वस्तुओं को देखने पर ऐसा लगता है मानो वे दूर हों और वास्तविकता से अधिक दूर प्रतीत होती हैं। इसलिए इस रंग समूह को विशिष्ट या शांत रंग समूह कहा जाता है। इसमें वे सभी मिश्रित रंग शामिल हैं जिनमें नीला रंग प्रमुख होता है; साथ ही सफेद और अन्य अधिकांश रंगों के हल्के शेड्स भी शामिल हैं जो सफेद रंग की अधिक मात्रा वाले मिश्रण से बनते हैं।

Warm Advancing Color Scheme

इस तस्वीर में आप देख सकते हैं कि सजावट में लकड़ी के इस्तेमाल से गर्म रंगों का कितना शानदार उपयोग हुआ है। विभिन्न बनावटों और पैटर्नों का संतुलित सामंजस्य पूरे चित्र को एक खुशनुमा माहौल देता है। छत पर किया गया मिट्टी के रंग का पेंट पूरे दृश्य को एक नाटकीय आकर्षण प्रदान करता है। गर्म रंगों का उपयोग और कभी-कभी ठंडे रंगों का मिश्रण डेनिश शैली की पारंपरिक सजावट से प्रेरित है। गर्माहट का सुखद एहसास आमतौर पर सज्जाकार ठंडे और नम जलवायु वाले क्षेत्रों के लिए पसंद करते हैं। आप देख सकते हैं कि पृष्ठभूमि में विभिन्न रंगों की किताबें आंतरिक सजावट में एक अलग ही आकर्षण पैदा करती हैं।

गर्म रंगों में आमतौर पर गहरे और तीव्र स्वर होते हैं, इसलिए वे बड़े स्थान को छोटा और आरामदायक दिखाने का काम करते हैं। इंटीरियर डेकोरेटरों के लिए गर्म रंगों के एकरस स्वरों के साथ पूरी तरह से प्रयोग करना कभी-कभी मुश्किल होता है। विभिन्न रंगों के गर्म स्वर स्पष्ट रूप से उभरते हैं और इंटीरियर डेकोर में गहरे या चटख रंग की वस्तुएं हावी हो जाती हैं। इससे पूरा इंटीरियर नीरस लग सकता है, इसलिए डेकोरेटर

इस नीरसता को दूर करने के लिए विपरीत रंगों की सजावटी वस्तुओं और फर्नीचर का उपयोग करते हैं।

जहां एक ओर इंटीरियर डिजाइन में ठंडे रंगों का इस्तेमाल करना आसान होता है, वहीं पेस्टल और हल्के रंगों का सुखदायक और स्वप्निल प्रभाव इंटीरियर को जीवंत बना देता है। ऐसे वातावरण में, डेकोरेटर अक्सर विपरीत रंगों का प्रयोग करते हैं ताकि सजावट नीरस और उबाऊ न लगे। आप ठंडे रंगों के गहरे शेड्स का उपयोग करके कुछ दीवारों को खास लुक दे सकते हैं और इन दीवारों पर अपनी सजावटी वस्तुएं रख सकते हैं।

एक दिलचस्प बात यह है कि गर्म रंगों की सजावट शास्त्रीय इंटीरियर थीम के लिए उपयुक्त होती है, जबकि ठंडे रंगों की योजना आधुनिक इंटीरियर स्पेस के लिए उपयुक्त होती है। स्कैंडिनेवियाई शैली की सजावट का अधिकांश भाग आधुनिक थीम वाले इंटीरियर स्पेस के लिए उपयुक्त है। कई एशियाई देश गर्मियों में ठंडे रंगों की योजना और सर्दियों में गर्म रंगों की योजना अपनाते हैं। वहीं, यूरोप के अधिकांश देश ठंडी जलवायु और शास्त्रीय वास्तुकला शैली के कारण गर्म रंगों की योजना को ही अपनाते हैं।

Cool Residing Color Scheme

आधुनिक वास्तुकला पर आधारित इस इंटीरियर में हल्का नीला रंग एक सुखदायक प्रभाव पैदा करता है। इस स्थान के सज्जाकार ने नीले रंग की एकरसता को कम करने के लिए विभिन्न स्थानों पर सफेद रंग का प्रयोग किया है, यहाँ तक कि प्राकृतिक लकड़ी के रंग की डाइनिंग टेबल और टेबल पर सफेद क्रॉकरी का उपयोग भी किया है। ठंडे रंगों के विवेकपूर्ण उपयोग से स्थान में खुलेपन का एहसास भी होता है।

पूरे इंटीरियर डेकोरेशन में स्कैंडिनेवियाई शैली की झलक मिलती है। डेनिश हाइगे की आरामदायकता की अवधारणा भी इस तरह के इंटीरियर डेकोरेशन में देखी जा सकती है। ठंडे रंगों के इस्तेमाल से मन को शांति और सुकून मिलता है, लेकिन साथ ही गर्म रंगों का समझदारी से इस्तेमाल करके भी वही आरामदायक एहसास पाया जा सकता है।

डेनमार्क की सांस्कृतिक अवधारणा 'ह्यगे' अब विश्व स्तर पर स्वीकृत इंटीरियर डिजाइन और सजावट की शैली बन गई है। डेनिश अवधारणा 'ह्यगे' का सार यह है कि इसमें वह सब कुछ शामिल है जो आपको खुशी, अपनेपन और सुकून का एहसास दिलाता है, चाहे वह इंटीरियर डिजाइन हो, कमरे की सजावट हो या जीवनशैली का प्रतीक।

तटस्थ रंगों का महत्व

कमरों की सजावट में ग्रे रंग का इस्तेमाल बैकग्राउंड के तौर पर और सामान की व्यवस्था में भी बहुत उपयोगी होता है। आप किसी भी चमकीले रंग में थोड़ा सा ग्रे रंग मिलाकर उसे न्यूट्रलाइज़ या ग्रे बना सकते हैं। ग्रे रंग मिलाने से ज़्यादातर चटख और तेज़ रंग भी न्यूट्रलाइज़ होकर हल्के बैकग्राउंड में बदल जाते हैं। न्यूट्रल ब्राउन में भी ग्रे की तरह ही सामंजस्य बिठाने का गुण होता है।

कमरों को उनका उपयोग करने वाले लोगों से जोड़ना

रंग हमेशा से ही व्यक्तिगत पसंद और शैली की अभिव्यक्ति के माध्यम से कमरों को निजी रूप देने का एक उपयोगी साधन रहा है। यकीनन हम सभी का कोई न कोई पसंदीदा रंग होता है, जिसे हम अपने कमरों की सजावट में इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। आम तौर पर पुरुष महिलाओं की तुलना में गहरे और अधिक आकर्षक रंगों को पसंद करते हैं। वहीं दूसरी ओर, महिलाएं और युवा लोग सजावट में चमकीले रंगों को पसंद करते हैं। यह सुनिश्चित करें कि आप चाहे किसी भी लिंग के लिए रंगों का सही संयोजन चुनें, वह आंतरिक सज्जा में उपयुक्त हो।

रंग योजना के लिए प्रेरणा कैसे प्राप्त करें

कला जगत और प्रकृति जगत, दोनों में ही रंगों से जुड़ी आपकी समस्याओं के समाधान मौजूद हैं। लेकिन कला में पाए जाने वाले रंग संयोजन अधिक विविधतापूर्ण और विकल्पों से भरपूर होते हैं, और इन्हें अपनाना तथा उपयोग करना अधिक आसान होता है। चित्रों, कपड़ों के पैटर्न या वॉलपेपर से रंग संयोजन चुनना कहीं अधिक सरल है, क्योंकि आप देख सकते हैं कि विभिन्न रंग एक साथ कैसे दिखते हैं। साथ ही, आप यह भी देख सकते हैं कि एक रंग की मात्रा दूसरे रंग के सापेक्ष कितनी है, जिससे वह चित्र में अलग और आकर्षक दिखता है। यदि आपको ये रंग संयोजन पसंद आते हैं, तो आप इन्हें अपने कमरों की सजावट में उपयोग कर सकते हैं।

अपने इंटीरियर को अंतिम रूप देना

एक्सेसरीज़ आपके कमरे को अंतिम रूप देने और आपके डिज़ाइन को सामंजस्यपूर्ण बनाने का काम करती हैं। सोच-समझकर चुनी गई वॉल आर्ट से लेकर डिज़ाइनर

कुशन और टेपेस्ट्री थ्रो तक, ये छोटी-छोटी चीज़ें और बारीक विवरण आपके इंटीरियर को एक साथ लाने और आपके घर को व्यक्तिगत और स्टाइलिश बनाने में मदद करते हैं।

यहां कुछ ऐसे तरीके दिए गए हैं जिनका इस्तेमाल पेशेवर लोग आपके घर के इंटीरियर को अंतिम रूप देने और उसे परफेक्ट फिनिशिंग टच देने के लिए करते हैं।

कमरे की शैली और थीम के बारे में सोचें और उसी के अनुसार अपनी एक्सेसरीज़ चुनें। एक्सेसरीज़ चुनते समय अपने कमरे की शैली को ध्यान में रखें और डिज़ाइन के स्थायी पहलुओं पर अंतिम निर्णय लेने से पहले खरीदारी शुरू न करें। अंतिम रूप देने का यह एक ऐसा अवसर है जब आप घर में अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित कर सकते हैं। ऐसी चीज़ें चुनें जो आपके लिए महत्वपूर्ण हों और आपके रहन-सहन को दर्शाती हों। आपकी एक्सेसरीज़ एक कहानी बयां करें। बनावट आपके डिज़ाइन में तुरंत आकर्षण पैदा करती है; अपने सॉफ्ट फर्निशिंग में विभिन्न प्रकार के कपड़े और फिनिश का उपयोग करें ताकि आपके कमरे को एक नया आयाम मिले और वह तुरंत आकर्षक लगे।

साल भर में अपने एक्सेसरीज़ बदलते रहना, अपने डिज़ाइन को ताज़ा बनाए रखने की सबसे किफ़ायती रणनीतियों में से एक है। त्योहारों के मौसम का स्वागत करने के लिए गहरे रंगों, सुगंधित मोमबत्तियों और थोड़ी सी चमक का इस्तेमाल करें, या वसंत ऋतु का एहसास दिलाने के लिए कमरे में ताज़ी खुशबू, लिनेन के कुशन और हल्के नीले रंग के स्पर्श से रौनक बढ़ाएँ।

आपका शयनकक्ष घर के सबसे निजी स्थानों में से एक है। शानदार सुगंधित मोमबत्तियाँ आपके कमरे में एक सुखदायक खुशबू बिखेरती हैं, जबकि मुलायम कश्मीरी थ्रो और

आरामदायक कुशन आपके बिस्तर को आरामदायक, स्वागतयोग्य और गर्म बनाने में मदद करते हैं।

आपके बाथरूम के सामान उपयोग में व्यावहारिक होने के साथ-साथ सजावटी भी होने चाहिए। अगर आपके कमरे में रंगों की कमी है, तो अपने बाथ लिनेन, शावर कर्टन आदि का उपयोग करके जगह को नया रूप दें। आप अपने डिज़ाइन में रंगों, आकृतियों, सामग्रियों और फिनिश के सूक्ष्म दोहराव का उपयोग करके यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि पूरा संयोजन एक साथ दिखे।

लिविंग रूम परंपरागत रूप से वह कमरा होता है जहाँ हम मेहमानों का स्वागत करते हैं, और आज अधिकांश परिवारों के लिए लिविंग रूम पारिवारिक जीवन का केंद्र बिंदु है। अपने कमरे को अंतिम रूप देने के लिए यहाँ विभिन्न प्रकार की एक्सेसरीज़ का चयन करें; छोटे स्टोरेज सॉल्यूशन आपके कमरे को आरामदायक बनाए रखने में मदद करेंगे, जबकि एक रग फर्नीचर के स्टाइलिश संयोजन को बनाने और कमरे को आरामदायक बनाने में सहायक होगा। सजावटी बुक एंड्स, सजावटी सामान और सजावटी फूलदान आपको अपनी सबसे कीमती चीज़ों को प्रदर्शित करने और अपने व्यक्तित्व को दर्शाने का अवसर देते हैं, और शेल्फ या साइड टेबल पर किताबें रखने से कमरे में आकर्षण और ऊंचाई का एहसास होता है।

आप जो एक्सेसरीज़ और फिनिशिंग टच चुनेंगे, उससे आपकी रसोई में खाना बनाना बेहद सुखद अनुभव होगा। सबसे पहले, अपनी ज़रूरतों की एक व्यावहारिक सूची बनाएं और ऐसी दिलचस्प एक्सेसरीज़ और फ़िक्स्चर खोजें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करें और आपके डिज़ाइन को निखारें। इंद्रधनुष के हर रंग में उपलब्ध

चमकीले किचन एक्सेसरीज़ और आकर्षक फ़र्नीचर आपकी रसोई में रौनक लाने के लिए एकदम सही हैं।

अपने परिवार और दोस्तों के लिए खुशनुमा भोजन का माहौल बनाने के लिए एक्सेसरीज़ का इस्तेमाल करें। डिज़ाइनर बारवेयर, टिमटिमाती मोमबत्तियाँ, आकर्षक सेंटरपीस और सर्विंग डिश आपके डाइनिंग रूम को और भी खूबसूरत बना देते हैं।

ये सभी अंतिम रूप देने वाले तत्व आपके इंटीरियर डिजाइन में ताजगी और रचनात्मकता का एक अतिरिक्त स्पर्श जोड़ देंगे।

भाग 03

उपयोगी सुझाव

घर सजाने के लिए आपको इंटीरियर डिजाइनर होने की ज़रूरत नहीं है; यह सब उपलब्ध चीज़ों का उपयोग करके अपने घर को अपनी पसंद के अनुसार सजाने के बारे में है। आपको बस इतना करना है कि एक विज़ुअल रेफरेंस लाइब्रेरी बनाएं और समय-समय पर अपने विचारों को अपडेट करते रहें। इस तरह के विज़ुअल अभ्यास से आपको जानकारी मिलेगी और आप किसी भी जगह के बारे में तुरंत निर्णय ले पाएंगे। प्रयोग करने में संकोच न करें, समय, जानकारी और अनुभव के साथ आप स्पेस प्लानिंग और डेकोरेशन के क्षेत्र में अपनी कलात्मक क्षमताओं को विकसित कर पाएंगे। यहां कुछ वार्म-अप टिप्स दिए गए हैं जो आपकी मदद कर सकते हैं।

आंतरिक सज्जा की योजना बनाने के लिए सुझाव

जब आप स्वयं घर बनाने की योजना बना रहे हों, तो उन चीजों पर पैसा खर्च करें जो हमेशा के लिए मौजूद रहेंगी। वास्तुकला, कांच और मूलभूत सामग्रियों के बारे में सोचें। सोच-समझकर चुने गए रंगों के पैलेट के भीतर रहकर अनावश्यक और बेतरतीब खरीदारी से बचें और यह सुनिश्चित करने के लिए बुद्धिमानी से योजना बनाएं कि अंतिम योजना एक संपूर्ण और समग्र रूप में काम करे। इसके लिए आपको डिजाइन योजना के हर पहलू की कल्पना करनी होगी। विशेष रूप से वह अंतिम छवि जो आपके मन में है।

जब आप पहली बार किसी नई जगह पर शिफ्ट होते हैं, तो दोस्तों से सलाह लें कि वे उस जगह के बारे में क्या सोचते हैं, उनके विचारों पर विचार करें और उन विचारों से प्रेरणा लें जो आपको लगता है कि थोड़े से बदलाव और सुधार के साथ काम करेंगे।

सबसे बेहतरीन इंटीरियर डिजाइन वो होते हैं जो आपको और आपकी जीवनशैली को ध्यान में रखते हैं। डिजाइन में अपने व्यक्तित्व को दर्शाने का प्रयास करें।

अपने इंटीरियर स्पेस को डिजाइन करते समय हमेशा कार्यक्षमता और व्यावहारिकता को ध्यान में रखें, अत्यधिक महत्वाकांक्षी न बनें और अपने डिजाइनों को जरूरत से ज्यादा न बनाएं।

इंटीरियर डिजाइन एक बेहद व्यक्तिगत मामला है, अपने सपनों का इंटीरियर बनाने के लिए हमेशा किसी न किसी दर्शन पर आधारित रहने का प्रयास करें। इस दर्शन में भव्यता से सजाए गए कमरों की ऐसी सजावट तैयार करना शामिल है जो गंभीर शैली और चंचल व्यक्तित्व का संगम हो।

नवीनतम डिजाइन ट्रेंड का हमेशा अनुसरण करने के बजाय, अपने आंतरिक स्थानों को कालातीत वस्तुओं के संग्रह से सजाएं।

अपने घर की आंतरिक सज्जा की अवधारणा बनाते समय हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि वह उसमें रहने वालों का प्रतिबिंब हो।

अंतिम परिणाम की कल्पना करने में सहायता के लिए मूड बोर्ड बनाएं। इससे आपको किसी भी खामी को ढूंढने और उजागर करने में भी मदद मिलेगी।

दूसरों की सोच की चिंता मत करो। कमरे को अपनी इच्छानुसार सजाओ। और अपनी पसंद की चीजों से कमरे को इस तरह सजाओ कि वह देखने में सुंदर लगे।

अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखकर शुरुआत करें। एक संक्षिप्त रूपरेखा तैयार करके, यह स्पष्ट करें कि आपका उद्देश्य क्या है, शैली और माहौल कैसा होना चाहिए, और अपने उद्देश्य का एक दृश्य निरूपण बनाएं।

खूब सारी योजनाएँ बनाएँ। हमेशा स्केल किए गए प्लान ड्रॉइंग बनाएँ और हर एक चीज़ को स्पष्ट रूप से दर्शाएँ। इससे आपको डिज़ाइन के शुरुआती चरण में ही यह पता चल जाएगा कि वह जगह किस तरह काम करेगी।

फर्नीचर संबंधी सुझाव

पैटर्न वाले फर्नीचर के लिए पृष्ठभूमि के रूप में सादे रंगों का चयन करें, लेकिन दिलचस्प कपड़ों का चयन करने का प्रयास करें।

छोटे कमरों में गोल मेजें रखने से जगह का बेहतर उपयोग होता है।

आंतरिक सज्जा करते समय, विशेष रूप से छोटे स्थान के लिए, सब कुछ फर्श पर न रखें क्योंकि इससे फर्श अव्यवस्थित हो जाएगा और कमरा वास्तव में जितना बड़ा है उससे छोटा दिखाई देगा।

इस बात पर विचार करें कि कमरे का उपयोग कैसे किया जाएगा और कितने लोग इसका उपयोग करेंगे। इससे आपको आवश्यक फर्नीचर और बैठने की व्यवस्था का

प्रकार निर्धारित करने में मदद मिलेगी।

कमरे के मुख्य आकर्षण बिंदु की पहचान करें — जैसे कि चिमनी, दृश्य, टेलीविजन आदि, और फर्नीचर को उसी के अनुसार व्यवस्थित करें।

सममितीय योजना औपचारिक कमरों के लिए सबसे उपयुक्त होती है, जबकि अनियमित व्यवस्था से कमरा अधिक अनौपचारिक प्रतीत होता है।

कमरे में आवागमन के प्रवाह पर ध्यान दें, विशेष रूप से दरवाजों के बीच के रास्ते पर। उस रास्ते को किसी भी बड़े फर्नीचर से अवरुद्ध न करें; आमतौर पर यह अजीब और अव्यवस्थित लगता है। बैठने की व्यवस्था के बीच से होकर जाने के बजाय, आवागमन को उसके चारों ओर से निर्देशित करने का प्रयास करें।

कमरे में फर्नीचर के आकार में विविधता रखें, ताकि जगह का निरीक्षण करते समय आपकी नज़र ऊपर और नीचे दोनों ओर घूमे।

विपरीत प्रभाव पैदा करने के लिए सीधी और घुमावदार रेखाओं को मिलाएं। यदि फर्नीचर आधुनिक और सीधी रेखाओं वाला है, तो उसमें एक गोल मेज शामिल करें।

भोजन कक्ष में, सुनिश्चित करें कि मेज के प्रत्येक किनारे और निकटतम दीवार या फर्नीचर के टुकड़े के बीच कम से कम 48 इंच की दूरी हो।

कोई भी फर्नीचर हटाने से पहले, कागज पर अपना डिज़ाइन बनाकर देख लें। कमरे के आयाम, खिड़कियों, दरवाजों, हीटिंग रजिस्टरों और बिजली के आउटलेट की जगह माप लें, फिर ग्राफ पेपर पर फर्नीचर को दर्शाने के लिए कटआउट का उपयोग करके एक फ्लोर प्लान बनाएं।

सजावट का काम बहुत जल्दी बंद न करें।

एक अतिरिक्त बड़ी और बेमेल एक्सेसरी जोड़ने से कमरा कहीं अधिक आकर्षक बन जाएगा।

ध्यान रखें, दिखावट बहुत महत्वपूर्ण होती है; पहली छाप ही अंतिम छाप होती है, इसलिए हर काम सावधानी से करें। पहले से ही हर चीज़ की एक चेकलिस्ट बना लें और उसका सख्ती से पालन करें ताकि बिना उचित योजना के काम करने पर होने वाली किसी भी खामी से बचा जा सके।

अपनी आंतरिक शैली को खोजना और अपनी अभिव्यक्ति को परिभाषित करना

फैशन उद्योग से मिलता-जुलता होने के बावजूद, "आंतरिक शैली" गृह सज्जा में तेज़ी से लोकप्रिय हो रही है। अपनी आंतरिक शैली को खोजना, अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाना और उस पर भरोसा करना है। खुद को अनुभव दें और अपनी दृश्य संग्रह विकसित करें।

डिजाइन संबंधी जानकारी और उपयोगी सुझावों के लिए लेख पढ़ें। डिजाइन और गृह सज्जा से संबंधित पत्रिकाओं से दृश्य संदर्भ सामग्री एकत्र करें। कपड़े की दुकानों पर जाएं और विभिन्न प्रकार के कपड़ों, टेपेस्ट्री और रंगों से परिचित हों। शोरूम/घरों में जाकर फर्नीचर, कपड़े, सहायक उपकरण और रंगों के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त करें। डिजाइन और गृह सज्जा से संबंधित प्रदर्शनियों में जाएं। बाहरी स्थानों पर जाएं और प्रेरणा के लिए प्रकृति से प्राकृतिक रंगों और आकृतियों को देखें। आकार, आकृति, अनुपात और रंग का अनुभव प्राप्त करने के लिए बगीचों में जाएं।

कमरे का उद्देश्य

कमरों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए। कमरे के उपयोग के बारे में सोचना डिज़ाइन का एक महत्वपूर्ण चरण है। एक कमरे को अक्सर कई भूमिकाओं के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए; जैसे सामाजिक मेलजोल का स्थान, सुरक्षा का स्थान, खेल का मैदान, अध्ययन कक्ष और विश्राम स्थल।

योजना बनाना शुरू करने से पहले, किसी विशेष कमरे की आवश्यकताओं के बारे में स्पष्ट रूप से सोचें, उस कमरे के लिए क्या-क्या करने की आवश्यकता है उसकी एक चेकलिस्ट बनाएं और फिर एक अवधारणा विकसित करें।

स्थानिक जागरूकता

स्थानिक जागरूकता का अर्थ है किसी भी स्थान, चाहे वह अंदर हो या बाहर, के आयामों को समझना। कमरे का आकार ही फर्नीचर के आकार और उसे रखने की जगह को निर्धारित करता है। छोटे कमरों में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। छोटे स्थान का अधिकतम उपयोग करने के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं: किसी एक रंग के विभिन्न शेड्स और टोन का इस्तेमाल करें। पैटर्न की बजाय टेक्सचर पर ज़्यादा ध्यान दें। छत से लटकने वाली लाइटों से बचें। अच्छी क्वालिटी की स्कोन टाइप लाइटें और छत के पास लगने वाली लाइटें खरीदें। ज़्यादा रोशनी और ऊंचाई का एहसास पाने के लिए, खासकर रात में, छत की ओर निर्देशित कई फ्लोर लैंप लगाएं। छत पर हल्के रंग का पेंट और दीवारों पर थोड़ा गहरा रंग इस्तेमाल करें। सुनिश्चित करें कि सभी लकड़ी (स्कर्टिंग, खिड़की के शीशे और फ्रेम, दरवाजे) दीवारों के रंग के समान हों ताकि कमरे में खुलापन का एहसास हो। पर्दों को छत से फर्श तक लटकाएं। या फिर जगह को ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल करने के लिए ब्लाइंड्स का इस्तेमाल करें। एक मध्यम आकार के सोफे के साथ कई सिंगल सीटिंग अरेंजमेंट का इस्तेमाल करें।

सेंटर टेबल का इस्तेमाल कभी न करें। किसी भी सीटिंग के किनारों पर रणनीतिक रूप से साइड टेबल रखें। रोशनी और जगह का भ्रम पैदा करने के लिए दर्पणों का इस्तेमाल करें। दीवार को लंबा दिखाने के लिए वॉल आर्ट में स्लीक वर्टिकल और हॉरिजॉन्टल फोटोग्राफ, पेंटिंग आदि का इस्तेमाल करें।

आकृतियों का उपयोग

कमरे में रखी वस्तुएं और मूर्तियां आंतरिक स्थान को एक मूर्त अनुभूति और अर्थ प्रदान करती हैं। कल्पना को आकर्षित करने वाली वस्तुएं स्पर्श के प्रति स्वतःस्फूर्त प्रतिक्रिया उत्पन्न करती हैं, जिससे जुड़ाव और बातचीत सुनिश्चित होती है। फूलदान और मूर्तियां विशेष रूप से स्पर्शनीय होती हैं और कमरे का केंद्रबिंदु बन जाती हैं।

अगर जगह कम है, तो कमरे में एक या दो आकृतियों का ही इस्तेमाल करना अच्छा रहता है। घर की सजावट में आकृतियों का अहम योगदान होता है। आकृतियों के काम करने के तरीके को समझना योजना बनाने में मददगार होता है। उदाहरण के लिए, बच्चों के कमरे में गोल आकृतियों का इस्तेमाल उन्हें ज़्यादा पसंद आएगा, क्योंकि शोध से पता चलता है कि बच्चे गोल आकृतियों को बहुत पसंद करते हैं। घर के आकार के अनुपात में नरम आकृतियों का इस्तेमाल करने से संतुलन बना रहता है, खुलापन महसूस होता है और मन को शांति और सुकून मिलता है।

साज-सज्जा और कपड़ा

फर्नीचर और कपड़े कमरे में कोमलता और मोहकता का संचार करते हैं। किस प्रकार के कपड़े इस्तेमाल करने चाहिए, इसके लिए कोई निश्चित नियम नहीं हैं।

नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं कि कैसे फर्नीचर और कपड़ों के प्रभाव को बेहतर बनाया जा सकता है।

कुशन के लिए अलग-अलग आकार चुनें, सादे डिज़ाइन का उपयोग करें और एक आकर्षक कंट्रास्टिंग टेक्सचर का प्रयोग करें। फर्नीचर और एक्सेसरीज़ पर कार्यात्मक और सजावटी दोनों प्रकार के कपड़े इस्तेमाल करें, कैबिनेट जैसे विशेष क्षेत्रों को हाइलाइट करें। पैटर्न की शैली तय करें, यदि धारियां हैं तो धारियां ही रखें और गोल पैटर्न के लिए गोल पैटर्न का प्रयोग करें। आकर्षक डिज़ाइन और रंगों का प्रयोग करें। पर्दों के लिए तटस्थ रंग चुनें। फर्श के कुशन के लिए पैटर्न और बोल्ड रंगों का प्रयोग करें। अंधेरे कोनों के लिए चमकीले रंगों का प्रयोग करें। कपड़ों को दीवार की कलाकृति के रूप में उपयोग करें - इन्हें फ्रेम किया जा सकता है या सजावटी रॉड पर लगाकर टेपेस्ट्री की शैली में दीवारों पर लटकाया जा सकता है।

जांच सूची

सारांश

सही तरीके से शुरुआत करने और उसे पूरा करने के लिए चरण-दर-चरण सुझाव

जगह को मापें

जगह को मापकर यह तय करें कि आपको किस आकार का फर्नीचर और साज-सामान चाहिए। कमरों में हवा का संचार होना ज़रूरी है और आप नहीं चाहेंगे कि कमरे में बहुत बड़े-बड़े फर्नीचर रखे हों जो कमरे को पूरी तरह से ढक लें। साथ ही, आप यह भी नहीं चाहेंगे कि ऊँची छतों और चौड़ी सफेद दीवारों के बीच कोई खास फर्नीचर खोया हुआ सा लगे। आमतौर पर, हर फर्नीचर के चारों ओर 60 सेंटीमीटर की

आवाजाही की जगह रखें, या सोफे और कॉफी टेबल के बीच कम से कम 40 सेंटीमीटर की जगह रखें।

मूड बोर्ड बनाएं

अब इस प्रक्रिया का सबसे मज़ेदार हिस्सा प्रेरणा ढूंढना और एक पिक्चर बोर्ड बनाकर अपने विज़न को साकार करना है। इंटरनेट पर खोजें, Pinterest और Instagram पर देखें और होम मैगज़ीन पलटकर अपनी पसंद का स्टाइल चुनें। अपने स्टाइल और थीम से मेल खाने वाले रंगों, टेक्सचर और पैटर्न पर विचार करें। उदाहरण के लिए, क्लासिकल थीम के लिए, सोने, सफ़ेद और लाल रंगों के साथ-साथ मखमल या कढ़ाई वाले कपड़ों जैसी महंगी सामग्रियों का इस्तेमाल करें। सादगी पर ज़ोर देने वाले आधुनिक स्टाइल के लिए, हल्के रंग की लकड़ी, ज्यामितीय आकार या वक्र और क्रीम, बेज और ग्रे जैसे न्यूट्रल रंगों का इस्तेमाल करें।

एक बबल प्लान बनाएं

बबल प्लान कमरे को व्यावहारिक तरीके से विभाजित करने में मदद करता है, जिससे हर हिस्से पर विशेष ध्यान दिया जा सके और आप प्रत्येक क्षेत्र के लिए आवश्यक वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित कर सकें। एक कागज लें और पेंसिल की मदद से कमरे के प्रत्येक अलग-अलग भाग के लिए बबल बनाएं। उदाहरण के लिए, बेडरूम में, बिस्तर के लिए एक बबल, पढ़ने के कोने के लिए एक बबल और ड्रेसिंग एरिया के लिए एक बबल होगा। बिजली के पॉइंट, दरवाजे और खिड़कियों जैसी सभी महत्वपूर्ण चीजों का ध्यान रखें।

बाजार का अध्ययन करें और एक नमूना बोर्ड बनाएं।

अब दुकानों पर जाने का समय है। सबसे पहले, आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आपका विज़न आपके बजट के भीतर संभव है और आपके मन में जो उत्पाद हैं वे बाज़ार में उपलब्ध हैं। यदि आप अपार्टमेंट में रहते हैं, तो सभी प्रकार की दुकानों और गोदामों में जाएँ, तस्वीरें लें और जितने हो सके उतने सैंपल मांगें। फिर आप इन्हें अपने मूड बोर्ड में जोड़ सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि रंग, पैटर्न और टेक्सचर सभी एक साथ अच्छे लग रहे हैं। जब आप अपने सैंपल बोर्ड से संतुष्ट हो जाएँ, तो आप अपना बटुआ निकालने के लिए तैयार हैं!

अपने सपने को साकार करें

हमेशा सबसे पहले मुश्किल कामों से शुरुआत करें। पेंटिंग, वार्निशिंग और खिड़कियों के पर्दे व ब्लाइंड्स लगाने का काम पूरा करें। इस चरण में सभी ज़रूरी बड़ी चीज़ें अपनी-अपनी जगह पर रख दें और आखिर में सॉफ्ट फर्निशिंग को व्यवस्थित करें। अगर इस समय आपको लगे कि कुछ कमी है, जैसे कि थोड़ा और रंग, तो ज़रूरत पड़ने पर आप आसानी से और सॉफ्ट फर्निशिंग जोड़ सकते हैं, लेकिन याद रखें कि घर एक दिन में नहीं बनते और आपके पास समय के साथ-साथ खूबसूरत चीज़ें जोड़ने के लिए काफी समय है। मज़े करें, आनंद लें।

आशा है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियों का पालन करके आप अपने घर को पेशेवर इंटीरियर डिज़ाइनरों की तरह मनचाहे ढंग से सजा सकेंगे। प्रयोग करने और कुछ नया आज़माने में संकोच न करें। शुभकामनाएँ!

आपके नए प्रोजेक्ट्स के लिए शुभकामनाएं!!